मङ्गलम्

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम्।
अदीनाः स्याम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात्॥१॥

(यजुर्वेद 36.24)

देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है। हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें। सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें। सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें। और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे॥१॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो–
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽसन्–
अप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥२॥

(ऋग्वेद 1.89.1)

हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवम् अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों। प्रगति को न रोकने वाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन हमारी वृद्धि के लिए तत्पर रहें॥2॥

Scanned by TapScanner

प्रथमः पाठः

शुचिपर्यावरणम्

पाठ परिचय– प्रस्तुत पाठ संस्कृत के आधुनिक कवि हरिदत्त शर्मा के 'लसल्लतिका' नामक रचना संग्रह से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों की यांत्रिक-बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन-मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों प्रदूषित हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर, नदी-निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुञ्ज एवं पक्षियों से गुञ्जित वनप्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा प्रकट करता है। कवि मानव मात्र के स्वस्थ जीवन की कामना करता है। वह प्रदूषित वातावरण में जीते जी मरने की इच्छा नहीं कर रहा है।

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।
शुचि-पर्यावरणम्॥
महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।
मनः शोषयत् तनुःपेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्॥
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्। शुचि...॥1॥

अन्वय– अत्र जीवितं दुर्वहं जातम्, (अत्र) प्रकृतिः एव शरणम्, शुचि-पर्यावरणम्।
महानगर-मध्ये कालायसचक्रम् अनिशं चलत् मनः शोषयत्, तनुः पेषयत् सदा वक्रं भ्रमति।
अमुना दुर्दान्तैः दर्शनैः जनग्रसनं न एव स्यात्॥

शब्दार्थः– दुर्वहम्–दुष्करम्, कठिनम् (दूभर, कठिन)। **जीवितम्**–जीवनम् (जीवन)। **जातम्**–अभवत् (हो गया है)। **शरणम्**–आश्रयः (सहारा, आश्रय)। **अनिशम्**–अहर्निशम्, अहोरात्रम् (दिन-रात)। **कालायसचक्रम्**–लौहचक्रम् (लोहे का पहिया। **शोषयत्**–शुष्कीकुर्वत् (सुखाते हुए)। **तनुः**–शरीरम्, कायः (शरीर)। **पेषयत्**–पिष्टी कुर्वत् (पीसते हुए)। **सदा**–सदैव, सर्वदा (हमेशा, सदैव)। **वक्रम्**–कुटिलम् (टेढ़ा)। **दुर्दान्तैः**–भयङ्करैः, भयावहैः (भयानकों के द्वारा)। **दशनैः**–दन्तैः (दाँतों से)। **अमुना**–अनेन, एतेन (इससे)। **जनग्रसनम्**–जनभक्षणम्, जनाशम् (लोगों का विनाश)। **स्यात्**–भवेत् (हो)।

व्याख्या–यहाँ (महानगरों में) जीवन दूभर हो गया है। अब तो प्रकृति तथा स्वच्छ पर्यावरण ही एकमात्र आश्रय है।

महानगर में दिन-रात चलता हुआ लोहे का चक्र (पहिया) मन को सुखाता हुआ, शरीर को पीसता हुआ सदैव कुटिलता से (टेढ़ा) घूम रहा है। इसके भयंकर दाँतों से लोगों का विनाश न हो जाए।

कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्॥
यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्। शुचि...॥2॥

अन्वयः– शतशकटीयां कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति। वाष्पयानमाला ध्वानं वितरन्ती संधावति। (अत्र) यानानां अनन्ताः पङ्क्तयः कठिनं संसरणम् (एव)॥

शब्दार्थः– कज्जलमलिनम्–कज्जलेन मलिनम् (काजल जैसा काला (मैला)। **धूमम्**–धूम्रम् (धुआँ)। **मुञ्चति**–त्यजति, जहाति, उद्वमति (छोड़ता है)। **शतशकटीयानम्**–शकटीयानानां शतम् (सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ)। **वाष्पयानमाला**–वाष्पयानानां पंक्तिः (रेल गाड़ी की पंक्ति)। **वितरन्ती**–त्यजन्ती, यच्छन्ती, कुर्वन्ती (छोड़ती हुई)। **ध्यानम्**–ध्वनिम्, कोलाहलम् (कोलाहल)। **संसरणम्**–सञ्चलनम् (चलना)।

व्याख्या–सैकड़ों मोटर कारें काजल जैसा गन्दा धुआँ उगल रही हैं। रेलगाड़ी धुआँ छोड़ती हुई दौड़ती हैं। वाहनों की अनन्त पंक्तियाँ हैं, (अतः) चलना (भी) कठिन है।

Scanned by TapScanner

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्॥
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि...॥3॥

अन्वयः– (महानगरेषु) वायुमण्डलं भृशं दूषितम्। (अत्र) निर्मलं जलं न हि (विद्यते)। भक्ष्यं कुत्सितवस्तुमिश्रितम्। धरातलं समलं (जातम्)। बहिः अन्तः (च) जगति बहु शुद्धीकरणं तु करणीयम् (एव))॥

शब्दार्थः– भृशम्–अत्यधिकम्, बहु (अत्यधिक)। **निर्मलम्**–मलरहितम्, स्वच्छम् (मलरहित, स्वच्छ)। **कुत्सित-वस्तु**–कुवस्तु (मिलावटी पदार्थ)। **भक्ष्यम्**–खाद्यपदार्थम् (खाद्य पदार्थ)। **समलम्**–मलेन युक्तम् (मल सहित, गन्दगी युक्त)। **बहु**–भृशम्, अत्यधिकम् (अत्यधिक)।

व्याख्या– वायुमण्डल अत्यधिक प्रदूषित है। जल भी स्वच्छ (निर्मल) नहीं है। खाद्य पदार्थों में बुरे पदार्थों की मिलावट है। धरती (कूड़े से) गन्दी हो गई है। संसार में आन्तरिक तथा बाह्य शुद्धि करनी चाहिए।

कञ्चित् कालं नय मामस्मान्नगराद् बहुदूरम्।
प्रपश्यामि ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयःपूरम्॥
एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणम्। शुचि...॥4॥

अन्वयः–कञ्चित् कालं माम् अस्मात् नगरात् बहुदूरं नय। ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पय पूरं प्रपश्यामि। एकान्ते कान्तारे मे क्षणम् अपि सञ्चरणं स्यात्॥

शब्दार्थः– नय–ले चलो। **ग्रामान्ते**–ग्रामस्य अन्ते, सीमायो/सीम्नि (गाँव की सीमा पर)। **पयः पूरम्**–जलाशयम्, तडागम् (जल से भरा तालाब)। **कान्तारे**–वने, अरण्ये (जंगल में)। **सञ्चरणम्**–भ्रमणम् (भ्रमण)।

व्याख्या–मुझे कुछ समय के लिए इस नगर से दूर ले चलो। गाँव की सीमा पर झरने, नदी तथा जलाशय देखना चाहता हूँ। एकान्त वन में क्षणभर के लिए भी मेरा भ्रमण हो जाए।

हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया॥
नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्। शुचि...॥5॥

अन्वयः–हरित-तरूणां ललित-लतानां (च) रमणीया माला, समीरचालिता कुसममुमावलिः मे वरणीया स्यात्। नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम् (स्यात्)।

शब्दार्थः– हरिततरूणाम्–हरितवृक्षाणाम् (हरे वृक्षों का (की, के)। **रमणीया**–मनोहारिणी, मनोहरा (मनोहारिणी)। **कुसुमावलिः**–कुसुमपंक्ति (फूलों की पंक्ति)। **समीरचालिता**–वायुचालिता (हवा से चलाई हुई)। **नवमालिका**–मालती, जाती, सुकुमारा (चमेली)। **रसालम्**–आम्रम (आम)। **रुचिरम्**–मनोहरम् (मनोहर)।

व्याख्या–हरे-भरे वृक्षों की हरी-भरी लताओं की मनोहर माला तथा वायु द्वारा चलाई गई फूलों की पंक्तियाँ मेरे लिए वरेण्य हैं। आम के वृक्ष से लगी चमेली का सुन्दर समागम हो।

अयि चल बन्धो! खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम्।
पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्॥
चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्। शुचि...॥6॥

अन्वयः–अपि बन्धो! खगकुल-कलरव-गुञ्चित-वनदेशं चल। पुर-कलरव-सम्भ्रमित जनेभ्यः धृत-सुखसन्देशम्। चाकचिक्य-जालं जीवित-रस-हरणं नो कुर्यात्।

शब्दार्थः– अयि–भोः! (हे)। **खगकुल-कलरव**–पक्षिसमूहध्वनिगुञ्जितम् (पक्षिसमूह की ध्वनि)। **गुञ्जितम्**–(से गुंजायमान।

Scanned by TapScanner

पुर:कलरव–नगरीयकोलाहलम् (नगरीय शोरगुल)। **चाकचिक्यजालम्**–कृत्रिम-प्रभावपूर्णजगत् (चकाचौंध भरी दुनिया)। **नो**–न (नहीं)। **जीवितरसहरणम्**–जीवित सुख विनाशम् (जीते जो सुख का नाश)।

व्याख्या–हे बन्धु! पक्षियों के समूह के (मधुर) कलरव से गुञ्जायमान वन प्रदेश में चलो। नगर के शोरगुल से व्याकुल लोगों के लिए सुख का सन्देश धारण कर लो। चकाचौंध भरी दुनिया जीवन के रस (सुख) का हरण (विनाश) न करे।

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टा:।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा॥
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्। शुचि...॥7॥

अन्वय:–लता-तरु-गुल्मा: प्रस्तरतले पिष्टा: नो भवन्तु। पाषाणी सभ्यता निसर्गे समाविष्टा न स्यात्। मानवाय जीवनं कामये (मानवाय) जीवन् (एव) मरणं नो (कामये)।

शब्दार्थ:– **प्रस्तरतले**–शिलातले (पत्थर के नीचे)। **लतातरुगुल्मा:**–वल्लरी-वृक्ष-झाटा: (लता, पेड़ न झाड़ियाँ। **पिष्टा:**–दलिता:, मर्दिता: (पिसे हुए)। **पाषाणी**–पर्वतमयी, शिलामयी (पथरीली)। **निसर्गे**–प्रकृत्याम् (प्रकृति में)। **कामये**–चिन्तयामि, अभिलष्यामि (कामना करता हूँ)। **जीवन्**–जीवयत् (जीते हुए)।

व्याख्या–लताएँ, वृक्ष तथा झाड़ियाँ पत्थरों के नीचे न पिसें। प्रकृति में पथरीली सभ्यता न समा जाए। मानव के जीवन की कामना करता हूँ, जीवित रहते हुए मौत चाहता हूँ।

व्याकरणम्

सन्धिच्छेद:

प्रकृतिरेव	– प्रकृति: + एव।
पर्यावरणम्	– परि + आवरणम्।
दुर्दान्तैर्दशनैरनुमा	– दुर्दान्तै: (दु: + दान्तै:) + दशनै: + अमुना।
स्यान्नैव	– स्यात् + न + एव।
संधावति	– सम् + धावति।
पङ्क्तयो ह्यानन्ता:	– पङ्क्तय: + हि + अनन्ता:।
निर्मलम्	– नि: + मलम्।
बहिरन्तर्जगति	– बहि: + अन्त: + जगति।
कञ्चित्	– कम् + चित्।
अस्मान्नगराम् बहुदूरम्	– अस्मात् + नगरात् + बहुदूरम्।
ग्रामान्ते	– ग्राम + अन्ते।
एकान्ते	– एक + अन्ते।
सञ्चरणम्	– सम् + चरणम्।
कुसुमावलि:	– कुसुम + आवलि:।
स्यान्मे	– स्यात् + मे।
सम्भ्रमितजनेभ्यो धृत	– सम् + भ्रमितजनेभ्य: : धृत।
कुर्याज्जीवित	– कुर्यात् + जीवित।
स्यान्न	– स्यात् + न।
नो	– न + उ।

संयोग:

दुर्वहमत्र	– दुर्वहम् + अत्र।
अनन्ता:	– अन् + अन्ता:।
मामस्मान्	– माम् + अस्मान्।
क्षणमपि	– क्षणम् + अपि।
समविष्टा	– सम् + आविष्टा।

अभ्यास:

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत। (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) कवि: किमर्थं प्रकृते: शरणम् इच्छति?
(ख) कस्मात् कारणात् महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते?
(ग) अस्माकं पर्यावरणं किं किं दूषितम् अस्ति?
(घ) कवि: कुत्र सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति?
(ङ) स्वस्थजीवनाय कीदृशं वातावरणं भ्रमणीयम्?
(च) अन्तिमे पद्यांशे कवे: का कामना अस्ति?

उत्तरम्–

(क) 'अत्र जीवितं दुर्वहं जातम्' अत: कवि: प्रकृते: शरणम् इच्छति।
(ख) यानानां हि अनन्ता: पंक्तय: अत: महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते।
(ग) अस्माकं पर्यावरणे वायुमण्डलं, जलं, भक्ष्यं, धरातलं च दूषितम् अस्ति।
(घ) कवि: एकान्ते कान्तारे सञ्चरणं कुर्नम् इच्छति।
(ङ) स्वस्थजीवनाय शुचि- प्राकृतिक-वातावरणं भ्रमणीयम्।
(च) अन्तिमे पद्यांशे कवे: कामना अस्ति, यत्–लतातरुगुल्मा: प्रस्तरतले पिष्टा: नो भवन्तु। निसर्गे पाषाणि सभ्यता समाविष्टा न स्यात्। मानवाय जीवनं कमनीयम्।

Scanned by TapScanner

2. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत (संधि अथवा संधिविच्छेद कीजिए)–**

(क) प्रकृतिः + ... = प्रकृतिरेव
(ग) ..... + अनन्ताः = ह्यनन्ताः
(ङ) ..... + नगरात् = अस्मान्नगरात्
(छ) धूमम् + मुञ्चति = ...
(ख) स्यात् + ... + ... = स्यान्नैव
(घ) बहिः + अन्तः + जगति = ...
(च) सम् + चरणम् = ...

उत्तरम्– (क) एव, (ख) न + एव, (ग) हि, (घ) बहिरन्तर्जगति, (ङ) अस्मात्, (च) सञ्चरणम्, (छ) धूमं मुञ्चति/धूमम्मुञ्चति।

3. **अधोलिखितानाम् अव्ययानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत।** (नीचे लिखे अव्ययों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

भृशम्, यत्र, तत्र, अत्र, अपि, एव, सदा, बहिः

(क) इदानीं वायुमण्डलं ..... प्रदूषितमस्ति।
(ख) ..... जीवनं दुर्वहम् अस्ति।
(ग) प्राकृतिक-वातावरणे क्षणं सञ्चरणम् ..... लाभदायकं भवति।
(घ) पर्यावरणस्य संरक्षणम् ..... प्रकृतेः आराधना।
(ङ) ..... समयस्य सदुपयोगः करणीयः।
(च) भूकम्पित-समये ..... गमनमेव उचितं भवति।
(छ) ..... हरीतिमा ..... शुचि पर्यावरणम्।

उत्तरम्– (क) भृशम्, (ख) अत्र, (ग) अपि, (घ) एव, (ङ) सदा, (च) बहिः, (छ) यत्र, तत्र।

4. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखित-पदेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं/संयोगं कुरुत।** (उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित पदों की प्रकृति, प्रत्यय का विभाजन कीजिए अथवा संयोग कीजिए।)

यथा–जातम् = जन् + क्त

(क) प्र + कृ + क्तिन् = ...
(ख) नि + सृ + क्त + टाप् = ...
(ग) ..... + क्त = दूषितम्
(घ) ..... + ... = करणीयम्
(ङ) ..... + यत् = भक्ष्यम्
(च) रम् + ... + ... = रमणीया
(छ) ..... + ... + ... = वरणीया
(ज) पिष् + ... = पिष्टाः

उत्तरम्– (क) प्रकृतिः, (ख) निसृता, (ग) दूष्, (घ) कृ+अनीयर्, (ङ) भक्ष्, (च) अनीयर्+टाप्, (छ) वृ+अनीयर+टाप्, (ज) क्त।

5. **(अ) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत।** (निम्नलिखित पदों के पर्याय पद लिखिए।)

(क) सलिलम् .....
(ख) आम्रम् .....
(ग) वनम् .....
(घ) शरीरम् .....
(ङ) कुटिलम् .....
(च) पाषाणम् .....

(आ) अधोलिखितपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत- (निम्नलिखित पदों के विलोम पद पाठ से चुनकर लिखिए)

(क) सुकरम् .....
(ख) दूषितम् .....
(ग) गृहणन्ती .....
(घ) निर्मलम् .....
(ङ) दानवाय .....

उत्तरम्–

(अ) (क) जलम्, वारि, तोयम्, (ख) रसालम्, (ग) अरण्यम्, कान्तारम्, (घ) कायः, देहम्, (ङ) वक्रम्, (च) प्रस्तरम्, शिलाखण्डम्।

(आ) (क) दुर्वहम्, (ख) निर्मलम्, (ग) वितरन्ती, (घ) दूषितम्, (ङ) मानवाय

Scanned by TapScanner

6. **उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा च समस्तपदानि लिखत।** (उदाहरण के अनुसार अथवा पाठ से चुनकर समस्त पदों को लिखिए।)

यथा– विग्रह पदानि	समस्तपद	समासनाम
(क) मलेन सहितम्	समलम्	अव्ययीभाव
(ख) हरिता: च ये तरव: (तेषां)	.....	कर्मधारय
(ग) ललिता: च या: लता: (तासाम्)	.....	कर्मधारय
(घ) नवा मालिका	.....	कर्मधारय
(ङ) धृत: सुखसन्देश: येन (तम्)	.....	बहुब्रीहि
(च) कज्जलम् इव मलिनम्	.....	कर्मधारय
(छ) दुर्दान्तै: दशनै:	.....	कर्मधारय

उत्तरम्– (क) समलम्, (ख) हरिततरूणाम्, (ग) ललितलतानाम्, (घ) नवमालिका, (ङ) धृतसुखसन्देशम्, (च) कज्जलमलिनम्, (छ) दुर्दान्तदशनै:।

7. **रेखाङ्कित-पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए।)

(क) शकटीयानम् कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति।

(ख) उद्याने पक्षिणां कलरवं चेत: प्रसादयति।

(ग) पाषाणीसभ्यतायां लतातरुगुल्मा: प्रस्तरतले पिष्टा: सन्ति।

(घ) महानगरेषु वाहनानाम् अनन्ता: पङ्क्तय: धावन्ति।

(ङ) प्रकृत्या: सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

उत्तरम्– (क) कीदृशं, (ख) केषां, (ग) के, (घ) क्व/कुत्र, (ङ) कस्या:।

योग्यताविस्तार:

समास – समसनं समास:

समास का शाब्दिक अर्थ होता है–संक्षेप। दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से जो तीसरा नया और संक्षिप्त रूप बनता है वह समास कहलाता है। समास के मुख्यत: चार भेद हैं–

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष 3. बहुब्रीहि 4. द्वन्द्व

1. **अव्ययीभाव**– इस समास में पहला पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है। यथा-निर्मक्षिकम् मक्षिकाणाम् अभाव:। यहाँ प्रथमपद निर् है और द्वितीयपद मक्षिकम् है। यहाँ मक्षिका की प्रधानता न होकर मक्षिका का अभाव प्रधान है, अत: यहाँ अव्ययीभाव समास है। कुछ अन्य उदाहरण देखें–

(क) उपग्रामम्	–	ग्रामस्य समीपे	–	(समीपता की प्रधानता)
(ख) निर्जनम्	–	जनानाम् अभाव:	–	(अभाव की प्रधानता)
(ग) अनुरथम्	–	रथस्य पश्चात्	–	(पश्चात् की प्रधानता)
(घ) प्रतिगृहम्	–	गृहं गृहं प्रति	–	(प्रत्येक की प्रधानता)
(ङ) यथाशक्ति	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य	–	(सीमा की प्रधानता)
(च) सचक्रम्	–	चक्रेण सहितम्	–	(सहित की प्रधानता)

2. **तत्पुरुष**– 'प्रायेण उत्तरपदप्रधान: तत्पुरुष:' इस समास में प्राय: उत्तरपद की प्रधानता होतीहै और पूर्व पद उत्तरपद के विशेषण का कार्य करता है। समस्तपद में पूर्वपद की विभक्ति का लोप हो जाता है।

यथा– राजपुरुष: अर्थात् राजा का पुरुष। यहाँ राजा की प्रधानता न होकर पुरुष की प्रधानता है, और राजा शब्द पुरुष के विशेषण का कार्य करता है।

(क) ग्रामगत:	–	ग्रामं गत:।	(ख) शरणागत:	–	शरणम् आगत:।
(ग) देशभक्त:	–	देशस्य भक्त:।	(घ) सिंहभीत:	–	सिंहात् भीत:।
(ङ) भयापन्न:	–	भयम् आपन्न:।	(च) हरित्रात:	–	हरिणा त्रात:।

तत्पुरुष समास के दो भेद हैं-कर्मधारय और द्विगु।

(क) **कर्मधारय** – इस समास में एक पद विशेष्य तथा दूसरा पद पहले पद का विशेषण होता है।

Scanned by TapScanner

यथा–

पीताम्बरम् – पीतं च तत् अम्बरम्।
कज्जलमलिनम् – कज्जलम् इव मलिनम्।
मीननयनम् – मीन इव नयनम्।
महापुरुषः – महान् च असौ पुरुषः।
नीलकमलम् – नीलं च तत् कमलम्।
मुखकमलम् – कमलम् इव मुखम्।

(ख) **द्विगु**– 'संख्यापूर्वो द्विगुः' इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है और समाहार (अर्थात् एकत्रीकरण या समूह) अर्थ की प्रधानता होती है।

यथा–

त्रिभुजम् – त्रयाणां भुजानां समाहारः।
इसमें पूर्वपद 'त्रि' संख्यावाची है।
पंचपात्रम् – पंचानां पात्राणां समाहारः।
सप्तर्षिः – सप्तानां ऋषीणां समाहारः।
पंचवटी – पंचानां वटानां समाहारः।
चतुर्युगम् – चतुर्णां युगानां समाहारः।

3. **बहुव्रीहि**– 'अन्यपदप्रधानः बहुव्रीहिः'

इस समास में पूर्व तथा उत्तर पदों की प्रधानता न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है।

यथा–

पीताम्बरः – पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)। यहाँ न तो पीतम् शब्द की प्रधानता है और न अम्बरम् शब्द की अपितु पीताम्बरधारी किसी अन्य व्यक्ति (विष्णु) की प्रधानता है।
नीलकण्ठः – नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)।
दशाननः – दश आननानि यस्य सः (रावणः)।
अनेककोटिसारः – अनेककोटिः सारः (धनम्) यस्य सः।
विगलितसमृद्धिम् – विगलिता समृद्धिः यस्य तम्।
प्रक्षालितपादम् – प्रक्षालितौ पादौ यस्य तम्।

4. **द्वन्द्व**– 'उभयपदप्रधानः द्वन्द्वः' इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोंनों की समान रूप से प्रधानता होती है। पदों के बीच? में 'च' का प्रयोग विग्रह में होता है।

यथा–

रामलक्ष्मणौ – रामश्च लक्ष्मणश्च।
धर्मार्थकाममोक्षाः – धर्मश्च, अर्थश्च, कामश्च, मोक्षश्च।
पतरौ – माता च पिता च।
वसन्तग्रीष्मशिशिराः – वसन्तश्च ग्रीष्मश्च शिशिरश्च।

कविपरिचय– प्रो. हरिदत्त शर्मा सम्प्रति इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के आचार्य हैं। इनके कई संस्कृत काव्य प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे-गीतकंदलिका, त्रिपथगा, उत्कलिका, बालगीताली, आक्रन्दनम्, लसल्लतिका इत्यादि। इनकी रचनाओं में समाज की विसंगतियों के प्रति आक्रोश तथा स्वस्थ वातावरण के प्रति दिशानिर्देश के भाव प्राप्त होते हैं।

भावविस्तारः

पृथिवी, जलं, तेजो वायुराकाशश्चेति पञ्चमहाभूतानि प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि। एतैः तत्त्वैरेव पर्यावरणस्यरचना भवति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सर्वविधजीवनसुखं ददाति। अस्माभिः सदैव तथा प्रयतितव्यं यथा जलं स्थलं गगनञ्च निर्मलं स्यात्। पर्यावरणसम्बद्धाः केचन श्लोकाः अधोलिखिताः सन्ति–

यथा–

पृथिवीं परितो व्याप्य तामाच्छाद्य स्थितं च यत्
जगदाधाररूपेण, पर्यावरणमुच्यते।।

प्रदूषणविषये–

सृष्टौ स्थितौ विनाशे च नृविज्ञैर्बहुनाशकम्।
पञ्चतत्त्वविरुद्धं यत्साधितं तत्प्रदूषणम्।।

वायुप्रदूषणविषये–

प्रक्षिप्तो वाहनैर्धूमः कृष्णे बह्वपकारकः।
दुष्टैर्रसायनैर्युक्तो घातकः श्वासरुग्वहः।।

जलप्रदूषणविषये–

यन्त्रशाला परित्यक्तैर्नगरेदूषितद्रवैः।
नदीनदौ समुद्राश्च प्रक्षिप्तैर्दूषणं गताः।।

प्रदूषण निवारणाय संरक्षणाय च–

शोधनं रोपणं रक्षावर्धनं वायुवारिणः।
वनानां वन्यवस्तूनां भूमेः संरक्षणं वरम्।।
एते श्लोकाः पर्यावरणकाव्यात् संकलिताः सन्ति।

Scanned by TapScanner

तत्सम-तद्भव-शब्दानामध्ययनम्–

अधोलिखितानां तत्समशब्दानां तदुद्भूतानां च तद्भवशब्दानां परिचय: करणीय:–

तत्सम		तद्भव	तत्सम		तद्भव
प्रस्तर	–	पत्थर	चाकचिक्य	–	चकाचक, चकाचौंध
वाष्प	–	भाप	धूम:	–	धुआँ
दुर्वह	–	दूभर	शतम्	–	सौ (100)
वक्र	–	बाँका	बहि:	–	बाहर
कज्जल	–	काजल			

छन्द: परिचय:

अस्मिन् गीते शुचि पर्यावरणम् इति ध्रुवकं (स्थायी) वर्तते। तदतिरिक्तं सर्वत्र प्रतिपङ्क्ति 26 मात्रा: सन्ति। इदं गीतिकाच्छन्दस: रूपमस्ति।

Scanned by TapScanner

द्वितीयः पाठः

बुद्धिर्बलवती सदा

पाठ परिचय–प्रस्तुत पाठ शुकसप्ततिः नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। 'शुकसप्तति' के विषय में अधिक जानकारी हेतु पाठ के अनत में योग्यता-विस्तार देखिए। इसमें अपने दो छोटे-छोटे पुत्रों के साथ जंगल के रास्ते से पिता के घर जा रही बुद्धिमती नामक नारी के बुद्धिकौशल को दिखाया गया है जो सामने आए हुए शेर को डरा कर भगा देती है। इस कथाग्रन्थ में नीतिनिपुण शुक और सारिका की कहानियों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सद्वृत्ति का विकास कराया गया है।

अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसतिस्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्ट्र्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद–"कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।"

इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी।
अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः शृगालः हसन्नाह– "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"

व्याघ्रः – गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः।

शृगालः – व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?

व्याघ्रः – प्रत्यक्षमेव मया मात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा।

शब्दार्थः– **आख्यः**–नामकः (नामक)। **भार्या**–पत्नी (पत्नी)। **पुत्रद्वयम्**–पुत्रौ (दो पुत्र)। **उपेता**–युक्ता, सहिता (सहित)। **गहनकानने**–सघनवने (घने जंगल में)। **ददर्श**–अपश्यत् (देखा)। **धाष्ट्र्यात्**–धृष्टभावात् (ढिठाई से)। **चपेटया**–करप्रहारेण (थप्पड़ से)। **प्रहृत्य**–ताडयित्वा (प्रहार करके, पीटकर)। **जगाद**–उक्तवती, कथितवती (कहा)। **एकैकशः**–एकैकं कृत्वा

Scanned by TapScanner

(एक-एक करके)। **कलहम्**–विवादम् (झगड़ा)। **विभज्य**–विभक्तं कृत्वा (बाँटकर)। **लक्ष्यते**–अन्विष्यते (देखा (ढूँढा) जाएगा)। **श्रुत्वा**–आकर्ण्य (सुनकर)। **व्याघ्रमारी**–व्याघ्रहन्त्री (बाघ को मारने वाली)। **मत्वा**–ज्ञात्वा (मानकर, जानकर)। **नष्टः**–पलायितः (भाग गया)। **विमुक्ता**–वियुक्ता (छुट गई)। **भामिनी**–रूपवती (रूपवती नारी)। **व्याघ्रम्**–व्याडः, भेलः (बाघ को)। **जम्बुकः**–शृगालः (सियार)। **गूढप्रदेशम्**–गुप्तप्रदेशम् (गुप्त स्थान पर)। **गृहीतकरजीवितः**–हस्तनिहितप्राणवान् (हथेली पर जान रखकर)। **कौतुकम्**–आश्चर्यम् (आश्चर्य)। **आवेदितम्**–विज्ञापितम् (बताया)। **प्रत्यक्षम्**–समक्षम् (सामने)। **अत्तुम्**–भक्षयितुम् (खाने के लिए)। **कलहमानौ**–विवदमानौ (दोनों झगड़ते हुए)। **प्रहरन्ती**–ताडयन्ती (पीटती हुई)।

सरलार्थ–

देउल नामक एक गाँव था। वहाँ राजसिंह नामक राजकुमार रहता था। एक बार किसी आवश्यक कार्य से उसकी बुद्धिमती (नाम वाली) पत्नी दो पुत्रों के साथ पिता के घर की ओर चल पड़ी। मार्ग में घने जंगल में उसने एक बाघ देखा। उसने आते हुए बाघ को देखकर ढीठपने से (अपने) दोनों पुत्रों को थप्पड़ मारकर कहा–"क्यों एक-एक करके बाघ को खाने के लिए झगड़ रहे हो? यह (बाघ) एक ही है, तो बाँटकर खा लो। बाद में दूसरा कोई खोज लिया जाएगा।"

यह सुनकर 'यह कोई बाघ मारने वाली है' ऐसा मानकर भय से युक्त मन वाला बाघ (वहाँ से) भाग गया।

"वह रूपवती अपनी बुद्धि से बाघ के भय से बच गई। संसार में दूसरा (कोई) बुद्धिमान् (भी) महान् भय से बच जाता है।"

भयभीत बाघ को देखकर कोई धूर्त (कपटी) सियार हँसते हुए बोला–"आप किसके डर से भाग आए हैं?"

बाघ – जाओ, जाओ सियार! तुम भी किसी गुप्त प्रदेश (स्थान) पर। क्योंकि बाघ मारने वाली जो शास्त्रों में सुनी हुई है वह मुझे मारने वाली थी, परन्तु प्राणों को हथेली पर रखकर मैं उसके आगे से जल्दी से भाग आया।

सियार – हे बाघ! तुमने बहुत आश्चर्य बताया, कि तुम मनुष्य से भी डर रहे हो।

बाघ – मैंने प्रत्यक्ष रूप से उसे अपने पुत्रों जो कि एक-एक करके मुझे खाने के लिए झगड़ रहे थे को थप्पड़ से पीटते हुए देखा।

जम्बुकः – स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। व्याघ्र! तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।

व्याघ्रः – शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।

जम्बुकः – यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथाकृत्वा काननं ययौ। शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती चिन्तितवती-जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच–

रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा।
विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥
इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा।
व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्ध शृगालकः॥

Scanned by TapScanner

एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव उच्यते–

बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा॥

शब्दार्थः– धूर्ता–छलिनी, शठा (कपटी नारी)। **ईक्षते**–पश्यति (देखती है)। **मुक्त्वा**–त्यक्तवा (छोड़कर)। **वेला**–समय, कालः (समय)। **अवेला**–अकालः (असमय)। **आयान्तम्**–आगच्छन्तम् (आते हुए को)। **प्रत्युत्पन्नमतिः**–तीक्ष्ण बुद्धिः (तीव्र बुद्धि वाली)। **आक्षिप्यन्ती**–(आक्षेप करती हुई)। **तर्जयन्ती**–निर्भत्सयन्ती (डाँटती हुई)। **धूर्त!**–शठ! (हे कपटी। **विश्वास्य**–समाश्वस्य (विश्वास दिलाकर)। **तूर्णम्**–शीघ्रम् (शीघ्र)। **गलबद्धशृगालकः**–(गले में सियार बँधे हुए)। **सर्वदा**–सदा (हमेशा)।

सरलार्थ–

सियार – हे स्वामी! वह कपटी नारी जहाँ है वहाँ चलिए। हे बाघ! तुम्हारे पुनः वहाँ जाने पर यदि वह सामने देखती (सामना करती) है तो तुम मुझे मार देना, ऐसा।

बाघ – हे सियार! यदि तुम मुझे छोड़कर चले जाते हो तो समय भी असमय (अकाल) हो जाएगा।

सियार – यदि ऐसा है तो मुझे अपने गले से बाँधकर जल्दी चलो। वह बाघ वैसा करके जंगल में गया। सियार के साथ फिर से आते हुए बाघ को दूर से ही देखकर बुद्धिमती ने सोचा–

'सियार द्वारा उत्साहित (भड़काए गए) बाघ से कैसे बचा जाए?' परन्तु वह प्रत्युत्पन्नमति सियार को आक्षिप्त करते हुए (दोष लगाते हुए) फटकारती हुई बोली–

अरे हे धूर्त! तूने मुझे पहले तीन बाघ दिए। विश्वास दिलाने के बाद भी आज एक ही लाकर क्यों जा रहा है? अब बता दे।

यह कहकर वह भयंकर बाघमारी नारी तेजी से दौड़ी। गले से बँधे सियार वाला बाघ भी अचानक भाग गया।

इस प्रकार वह बुद्धिमती बाघ के भय से फिर मुक्त हो गई। इसीलिए कहा जाता है–

हे तन्वि! सदैव सभी कामों में बुद्धि ही बलवती होती है।

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

बुद्धिर्बलवती – बुद्धि + बलवती।
देउलाख्यो ग्रामः – देउल + आख्यः।
केनापि – के + अपि।
पुत्रद्वयोपेता – पुत्रद्वयः + उपेता।
पितुर्गृहम् – पितुः + गृहम्।
एकैकशो व्याघ्र. – एक + एकशः +व्याघ्र.।
एकस्तावद्विभज्य – एकः + तावत् + विभज्य।
पश्चाद् अन्यो द्वितीयः – पश्चात् + अन्यः + द्वितीयः।
कश्चिल्लभते – कः + चित् + लभते।
काचिदियम् – काचित् + इयम्।
व्याघ्रो भयाकुलचिन्तो नष्टः – व्याघ्रः+भय + आकुलचित्तः + नष्टः।
भयाद् व्याघ्रस्य – भयात् + व्याघ्रस्य।
अन्योऽपि – अन्यः + अपि।
बुद्धिमाँल्लोके – बुद्धिमान् + लोके।
महतोभयात् – महतः + भयात्।
भयाकुलम् – भय + आकुलम्।
कश्चित् – कः + चित्।
हसन्नाह – हसन् + आह।
किञ्चिद् गूढ. – किम् + चित् + गृढ.।
यतो व्याघ्रमारीति – यतः + व्याघ्रमारी + इति।
तयाहम् – तया + अहम्।
जीवितो नष्टः – जीवितः + नष्टः।
यन्मानुषादपि – यत् + मानुषात् + अपि।
असात्मपुत्रावेकैकशः– सा + आत्मपुत्रौ + एक + एकशः।
एकशो माम् – एकशः + माम्।
यत्रास्ते – यत्र + आस्ते।
अपीक्षते – अपि + ईक्ष्यते।
वेलाप्यवेला – वेला + अपि + अवेला।
पुनरायान्तम् – पुनः + आयान्तम्।
कृतोत्साहात् – कृत + उत्साहात्।
प्रत्युत्पन्नमतिः – प्रति + उत्पन्नमतिः।
आक्षिपन्त्यङ्गुल्या – आक्षिन्ती + अङ्गुल्या।
तर्जयन्त्युवाच – तर्जयन्ती + उवाच।
विश्वस्याद्यैकम् – विश्वास्य + अद्य + एकम्।
वदाधुना – वद + अधुना।

Scanned by TapScanner

इत्युक्त्वा	– इति + उक्त्वा।	**अयमेकः**	– अयम् + एकः।
व्याघ्रोऽपि	– व्याघ्रः + अपि।	**इयमिति**	– इयम् + इति।
पुनरपि	– पुनः + अपि।	**त्वमपि**	– त्वम् + अपि।
मुक्ताऽभवत्	– मुक्ता + अभवत्।	**हन्तुमारब्धः**	– हन्तुम + आरब्धः।
अत एव	– अतः + एव।	**प्रत्यक्षमेव**	– प्रत्यक्षम् + एव।
		मामत्तुम्	– माम् + अत्तुम्।
		सम्मुखमपीक्षते	– सम्मुखम् + अपीक्षते।
		जम्बुकमाक्षिपन्ती	– जम्बुकम् + आक्षिपन्ती।
		एकमानीय	– एकम् + आनीय।

संयोगः

व्याघ्रमागच्छनम्	– व्याघ्रम् + आगच्छन्तम्।
कथमेक.	– कथम् + एक.।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत। (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) बुद्धिमती केन उपेता पितृर्गृहं प्रति चलिता?
(ख) व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः?
(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते?
(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति?
(ङ) बुद्धिमतीशृगालं किम् उक्तवती?

उत्तरम्–

(क) बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितृगृहं प्रति चलिता।
(ख) व्याघ्रः इति विचार्य पलायितः, यत् इयं व्याघ्रमारी अस्ति।
(ग) लोके महतो भयात् बुद्धिमान् मुच्यते।
(घ) जम्बुकः एवं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति, यत् "त्वया महत्कोतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि।"
(ङ) बुद्धिमती शृगालम् उक्तवती यत् रे रे धूर्त! त्वया मह्यं पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य (अपि) अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद।

2. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत। (स्थूल पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए)

(क) तत्र राजसिंहो नाम राजपुत्रः वसतिस्म।
(ख) बुद्धिमती चपेटया पुत्रौ प्रहृतवती।
(ग) व्याघ्रं दृष्ट्वा धूर्तःशृगालः अवदत्।
(घ) त्वम् मानुषात् विभेषि।
(ङ) पुरा त्वया मह्यं व्याघ्रत्रयं दत्तम्।

उत्तरम्–

(क) तत्र किं नाम राजपुत्रः वसतिस्म।
(ख) बुद्धिमती कया पुत्रौ प्रहृतवती।
(ग) कं दृष्ट्वा धूर्तःशृगालः अवदत्।
(घ) त्वम् कस्मात्/कुतः विभेषि।
(ङ) पुरा त्वया कस्मै व्याघ्रत्रयं दत्तम्।

3. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण संयोजयत। (निम्नलिखित वाक्यों का घटनाक्रम में संयोजन कीजिए।)

(क) व्याघ्रः व्याघ्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः।
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः साशृगालं आक्षिपन्ती उवाच।
(ग) जम्बुककृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्।
(घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रं अपश्यत्।
(ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच-अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यत।
(च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
(छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयं आनयितुं' प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्। (ज) गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः।

उत्तरम्– (1)–(च), (2)–(घ), (3)–(ङ), (4)–(क), (5)–(ग), (6)–(ख), (7)–(छ), (8)–(ज)।

4. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत। (संधि अथवा संधिविच्छेद कीजिए)

(क) पितुर्गृहम्	–	.....	+	.....
(ख) एकैकः	–	.....	+	.....
(ग)	–	अन्यः	+	अपि
(घ)	–	इति	+	उक्त्वा

Scanned by TapScanner

(ङ) ..... – यत्र + आस्ते

उत्तरम्– (क) पितु+गृहम् (ख) एक+एकः (ग) अन्योऽनि (घ) इत्युक्त्वा (ङ) यत्रास्ते।

5. **अधोलिखितानां पदानाम् अर्थः कोष्ठकात् चित्वा लिखत।** (निम्नलिखित शब्दों के अर्थ कोष्ठक से चुनकर लिखिए।)

(क) ददर्श – (दर्शितवान्, दृष्टवान्)
(ख) जगाद – (अकथयत्, अगच्छत्)
(ग) ययौ – (याचितवान्, गतवान्)
(घ) अत्तुम् – (खादितुम्, आविष्कर्तुम्)
(ङ) मुच्यते – (मुक्तो भवति, मग्नो भवति)
(च) ईक्षते – (पश्यति, इच्छति)

उत्तरम्– (क) दृष्टवान्, (ख) अकथयत्, (ग) गतवान्, (घ) खादितुम्, (ङ) मुक्तो भवति, (च) ईक्षते।

6. **(अ) पाठात् चित्वा पर्यायपदं लिखत।** (पाठ से चुनकर पर्यायवाची शब्द लिखिए)

(क) वनम् – .....
(ख) शृगालः – .....
(ग) शीघ्रम् – .....
(घ) पत्नी – .....
(ङ) गच्छसि – .....

(आ) पाठात् चित्वा विपरीतार्थकं पदं लिखत। (पाठ से विपरीतार्थक शब्द चुनकर लिखें)

(क) प्रथमः – .....
(ख) उक्त्वा – .....
(ग) अधुना – .....
(घ) अवेला – .....
(ङ) बुद्धिहीना – .....

उत्तरम्–

(अ) (क) काननम्, (ख) जम्बुकः, (ग) तूर्णम्, (घ) भार्या, (ङ) यासि।
(आ) (क) अन्यः, (ख) तुष्णींभूय, (ग) पुरा, (घ) वेला, (ङ) बुद्धिमती

7. **(अ) प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत।** (प्रकृति व प्रत्यय का विभाजन कीजिए)

(क) चलितः – .....
(ख) नष्टः – .....
(ग) आवेदितः – .....
(घ) दृष्टः – .....
(ङ) गतः – .....
(च) हतः – .....
(छ) पठितः – .....
(ज) लब्धः – .....

(आ) उदाहरणमनुसृत्य कर्तरि प्रथमा विभक्तेः क्रियायाञ्च 'क्तवतु' प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा वाच्यपरिवर्तनं कुरुत। (उदाहरण के अनुसार कर्तृवाच्य प्रथम विभक्ति व क्रिया पद में 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग करके वाच्य परिवर्तन कीजिए)

यथा–तया अहं हन्तुम् आरब्धः – सा मां हन्तुम् आरब्धवती।
(क) मया पुस्तकं पठितम्। – .....
(ख) रामेण भोजनं कृतम्। – .....
(ग) सीतया लेखः लिखितः। – .....
(घ) अश्वेन तृणं भुक्तम्। – .....
(ङ) त्वया चित्रं दृष्टम्। – .....

उत्तरम्–

(अ) (क) √चल्+क्त (ख) √नश्+क्त (ग) आ+√विद्+क्त (घ) √दृश्+क्त (ङ) √गम्+क्त (च) √हन्+क्त (छ) √पठ्+क्त (ज) √लभ्+क्त।
(आ) (क) अहं पुस्तकं पठितवान्। (ख) रामः भोजनं कृतवान्। (ग) सीता लेखं लिखितवती। (घ) अश्वः तृणं भुक्तवान्। (ङ) त्वं चित्रं दृष्टवान्।

परियोजनाकार्यम् (परियोजना कार्य)

बुद्धिमत्याः स्थाने आत्मानं परिकल्प्य तद्भावनां स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

भाषिकविस्तारः

ददर्श-दृश् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

Scanned by TapScanner

विभेषि 'भी' धातु, लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।
प्रहरन्ती – प्र + हृ धातु, शतृ प्रत्यय, स्त्रीलिङ्ग।
गम्यताम् – गम् धातु, कर्मवाच्य, लोट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
ययौ – 'या' धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
यासि – गच्छसि।

समास

गलबद्धशृगालकः – गले बद्धः शृगालः यस्य सः।
प्रत्युत्पन्नमतिः – प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः।
जम्बुककृतोत्साहात् – जम्बुकेन कृतः उत्साहः - जम्बुककृतोत्साहः तस्मात्।
पुत्रद्वयोपेता – पुत्रद्वयेन उपेता।
भयाकुलचित्तः – भयेन आकुलः चित्तम् यस्य सः।
व्याघ्रमारी – व्याघ्रं मारयति इति।
गृहीतकरजीवितः – गृहीतं करे जीवितं येन सः।
भयङ्करा – भयं करोति या इति।

ग्रन्थ-परिचय–

शुकसप्ततिः के लेखक और काल के विषय में यद्यपि भ्रान्ति बनी हुई है, तथापि इसका काल 1000 ई. से 1400 ई. के मध्य माना जाता है। हेमचन्द्र ने (1088-1172) में शुकसप्ततिः का उल्लेख किया है। चौदहवीं शताब्दी में फारसी भाषा में 'तूतिनामह' नाम से अनूदित हुआ था।

शुकसप्ततिः का ढाँचा अत्यन्त सरल और मनोरंजक है। हरिदत्त नामक सेठ का मदनविनोद नामक एक पुत्र था। वह विषयासक्त और कुमार्गगामी था। सेठ को दुःखी देखकर उसके मित्र त्रिविक्रम नामक ब्राह्मण ने अपने घर से नीतिनिपुण शुक और सारिका लेकर उसके घर जाकर कहा-इस सपत्नीक शुक का तुम पुत्र की भाँति पालन करो। इसका संरक्षण करने से तुम्हारा दुखदूर होगा। हरिदत्त ने मदनविनोद को वह तोता दे दिया। तोते की कहानियों ने मदनविनोद का हृदय परिवर्तन कर दिया और वह अपने व्यवसाय में लग गया।

व्यापार प्रसंग में जब वह देशान्तर गया तब शुक ने अपनी मनोरंजक कहानियों से उसकी पत्नी का तब तक विनोद करता रहा जब तक उसका पति वापस नहीं आ गया। संक्षेप में शुकसप्ततिः अत्यधिक मनोरंजक कथाओं का संग्रह है।

हन् (मारना) धातोः रूपम्।

लट्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यमपुरुषः	हन्सि	हथः	हथ
उत्तमपुरुषः	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लृट्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तमपुरुषः	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लङ्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अहन्	अहताम्	अहत
मध्यमपुरुषः	अहः	अहतम्	अहत
उत्तमपुरुषः	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लोट्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यमपुरुषः	जहि	हतम्	हत
उत्तमपुरुषः	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यमपुरुषः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तमपुरुषः	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

Scanned by TapScanner

तृतीयः पाठः

व्यायामः सर्वदा पथ्यः

पाठ परिचय–आयुर्वेद को पञ्चम वेद भी माना गया है। 'पहला सुख नीरोगी काया' के अनुसार यह शास्त्र अत्यधिक उपयोगी है। प्रस्तुत पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुतसंहिता' के चिकित्सा स्थान में वर्णित 24वें अध्याय से संकलित है। व्यायाम करने वाले व्यक्ति से रोग उसी तरह दूर रहते हैं जैसे गरुड़ से साँप। इस पाठ में आचार्य सुश्रुत ने व्यायाम की परिभाषा बताते हुए उससे होने वाले लाभों की चर्चा की है। शरीर में सुगठन, कान्ति, स्फूर्ति, सहिष्णुता, नीरोगता आदि व्यायाम के प्रमुख लाभ हैं।

शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् ।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः ॥1॥

अन्वयः– शरीर-आयास-जननं कर्म व्यायाम्-संतितम् (भवति)। तत्कृत्वा तु सुखम् (भवति)। देहं समन्ततः विमृद्नीयात्।

शब्दार्थः– आयासजननम्–श्रमोत्पत्तिः (प्रयास, श्रम की उत्पत्ति)। **संज्ञितम्**–प्रकृतम्, प्रोक्तम् (कहा गया है)। **विमृद्नीयात्**–मर्दयेत (मालिश करनी चाहिए)। **समन्ततः**–सर्वतः, परितः (पूरी तरह से)।

व्याख्या– शरीर के परिश्रम से सम्बन्धित (एक विशेष प्रकार का) कर्म (वि + आयाम) ही व्यायाम कहा गया है। इसे करके सुख मिलता है। शरीर की सब ओर से मालिश करनी चाहिए।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥2॥

अन्वयः– (तत्कृत्वा) शरीर-उपचयः, कान्तिः, गात्राणां सुविभक्तता, दीप्त-अग्नित्वम्, अनालस्यं, स्थिरत्वं, लाघवं, मृजा (च जायन्ते)।

शब्दार्थः– उपचयः–अभिवृद्धिः (वृद्धि)। **कान्तिः**–आभा (चमक)। **गात्रम्**–शरीरम् (शरीर)। **सुविभक्तता**–देह सौष्ठवम् (शारीरिक गठीलापन)। **दीप्ताग्नित्वम्**–पाचन शक्ति वृद्धिः (पाचन शक्ति का बढ़ना)। **स्थिरत्वम्**–स्थिरता (स्थिरता)। **मृजा**–स्वच्छीकरणम् (स्वच्छ करना)।

व्याख्या– शरीर की वृद्धि, चमक, शरीर का गठीलापन (सौन्दर्य), जठराग्नि तेज होना (पाचन शक्ति बढ़ना), आलस्य न आना, स्थिरता, लाघव और स्वच्छता (व्यायाम करने से) आती है।

श्रमक्लमपिपासोष्ण-शीतादीनां सहिष्णुता ।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते ॥3॥

अन्वयः– व्यायामात् श्रमक्लम-पिपासा-उष्ण-शीतादीनां सहिष्णुता परमम् आरोग्यं च अपि उपजायते।

शब्दार्थः– क्लमः–श्रमजनितशिथिलता (थकान)। **सहिष्णुता**–सहिष्णुत्वम् (सहन कर सकना)। **आरोग्यम्**–स्वास्थ्यम् (स्वास्थ्य। **उपजायते**–निष्पद्यते (पैदा होता है)।

Scanned by TapScanner

व्याख्या– परिश्रम-जनित थकान, पिपासा (प्यास), गरमी-सर्दी आदि को सहन कर सकना और परम आरोग्य (स्वास्थ्य) व्यायाम से मिलता है।

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित्स्थौल्यापकर्षणम् ।
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥4॥

अन्वयः– तेन (व्यायामेन) च सदृशं स्थौल्य-अपकर्षणम् किञ्चित् न अस्ति। व्यायामिनं च मर्त्यम् अरयः बलात् न अर्दयन्ति।

शब्दार्थः– स्थौल्यापकर्षणम्–पीनत्वापक्षयम् (मोटापा घटाना)। **मर्त्यम्**–मानवम्, पुरुषम् (मनुष्य को)। **अर्दयन्ति**–मर्दयन्ति (कुचल देते हैं)। **अरयः**–शत्रवः (शत्रु लोग)।

व्याख्या– इस (व्यायाम) के समान मोटापे को कम करने वाला कोई (दूसरा उत्तम साधन) नहीं है। व्यायाम करने वाले व्यक्ति को शत्रु बल से नहीं पछाड़ सकते हैं।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥5॥

अन्वयः– जरा च एनं (व्यायामिनं) सहसा आक्रम्य न अधिरोहित। व्यायाम-अभिरतस्य च मांसं स्थिरीभवति।

शब्दार्थः– सहसा–अकस्मात् (अचानक)। **जरा**–वृद्धावस्था (बुढ़ापा)। **समधिरोहति**–अधिरोहति (चढ़ता/बढ़ता है)। **अभिरतस्य**–तल्लनीस्य (तल्लीन रहने वाले का)।

व्याख्या– बुढ़ापा भी इस (व्यायामशील) पर अचानक आक्रमण करके सवार नहीं होता है। तल्लीनता से व्यायाम करने वाले का मांस भी स्थिर हो जाता है।

व्यायामस्विन्नगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च ।
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः
वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् ॥6॥

अन्वयः– व्यायाम-स्विन्नगात्रस्य पद्भ्याम् उद्वर्तितस्य च व्याधयः वैनतेयम् उरगाः इव न उपसर्पन्ति। वयः रूप-गुणैः हीनम् अपि (जनं) सुदर्शनं कुर्यात्।

शब्दार्थः– स्विन्नागात्रस्य–स्वेदसिक्तदेहस्य (पसीने से लथपथ शरीर वाले का)। **पद्भ्याम्**–चरणाभ्याम् (दोनों पैरों से)। **उद्वर्तितस्य**– उन्नमितस्य (ऊपर उठाकर व्यायाम करने वाले के)। **नोपसर्पन्ति**–नोपगच्छन्ति (नहीं आती हैं)। **वैनतेयः**–गरुडः (गरुड़)। **उरगः**–सर्पः (साँप)।

व्याख्या– व्यायाम के कारण पसीने से लथपथ शरीर वाले तथा दोनों पैर उठाकर व्यायाम करने वाले के पास रोग उसी तरह नहीं आते हैं, जैसे गरुड़ के पास साँप। व्यायाम आयु, रूप आदि गुणों से रहित को भी सुन्दर बना देता है।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥7॥

अन्वयः– नित्यं व्यायामं कुर्वतः विरुद्धम् अपि भोजनं, विदग्धम् अविदग्धं वा (भोजनं) निर्दोषं परिपच्यते।

शब्दार्थः– विरुद्धम्–प्रतिकूलम् (विरुद्ध, प्रतिकूल)। **विदग्धम्**–सुपक्वम् (अच्छी तरह पका हुआ)। **परिपच्यते**–जीर्यते (पच जाता है)।

व्याख्या– नित्य व्यायाम करने वाले को प्रतिकूल, पक्का या कच्चा सब तरह का भोजन आसानी से पच जाता है।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम्।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥8॥

अन्वयः– स्निग्धभोजिनां बलिनां (च) व्यायामः हि सदा पथ्यः (भवति)। सः (व्यायामः) शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः।

शब्दार्थः– स्निग्धभोजिनाम्–वसायुक्तभोजिनाम् (चिकनाई युक्त भोजन खाने वालों का)। **पथ्यम्**–उचितम् (उचित, स्वास्थ्यकर)।

व्याख्या– चिकनाई वाला भोजन खाने वालों तथा बलवानों के लिए व्यायाम सदैव स्वास्थ्यवर्धक है। उनके लिए सर्दी और वसन्त (आदि सभी ऋतुओं) में व्यायाम परम स्वास्थ्यवर्धक बताया गया है।

सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः ।
बलस्यार्धेन कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥9॥

Scanned by TapScanner

अन्वयः– अतः आत्महितैषिभिः पुम्भिः सर्वेषु ऋतुषु अहरदः बलस्य अर्धेन व्यायामः कर्त्तव्यः, अन्यथा हन्ति।

शब्दार्थः– अहरहः–प्रतिदिनम् (प्रतिदिन)। **पुम्भिः**–पुरुषैः, जनैः (लोगों के द्वारा)। **आत्महितैषिभिः**– स्वहितैतिभिः (अपना भला चाहने वालों के द्वारा)। **हन्ति**–नाशयति (मारता है)।

व्याख्या– इसलिए अपना कल्याण (भला/हित) चाहने वाले लोगों को सभी ऋतुओं में प्रतिदिन अपने बल के आधे भाव (आधी ताकत) से व्यायाम करना चाहिए, अन्यथा वह मरता है।

हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् ॥10॥

अन्वयः– व्यायामं कुर्वतः जन्तोः हृदिस्थान-आस्थितः वायुः यदा वक्त्रं प्रपद्यते, तत् बल-अर्धस्य लक्षणम्।

शब्दार्थः– अस्थितः–स्थितः (स्थित)। **वक्त्रम्**–मुखम् (मुँह)। **प्रपद्यते**–उपगच्छति (पहुँचता है)।

व्याख्या– व्यायाम करते हुए व्यक्ति की हृदय में स्थित वायु जब मुँह पर पहुँचती है तो यह बल का आधा लक्षण (पहचान) है।

वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च।
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ॥11॥

अन्वयः– वयः, बल-शरीराणि, देश-काल-अशनानि च समीक्ष्य व्यायामं कुर्यात्। अन्यथा रोगम् आप्नुयात्।

शब्दार्थः– समीक्ष्य–निरीक्ष्य, परीक्ष्य (जाँचकर)। **आप्नुयात्**–(पाएगा)।

व्याख्या– आयु, बल, शरीर, देश (स्थान), काल, भोजन आदि को परखकर (ही) व्यायाम करना चाहिए, अन्यथा वह रोग पाएगा।

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

शरीरायासजनम्	–	शरीर + आयाजननम्।
व्यायामः	–	वि + आयामः।
शरीरोपचयः	–	शरीर + उपचयः।
कान्तिर्गात्राणां	–	कान्तिः + गात्राणाम्।
दीप्ताग्निनत्वम्	–	दीप्त + अग्नित्वम्।
पिपासोष्णशीतादीनाम्	–	पिपासा + उष्ण-शीत + आदिनाम्।
चापि	–	च + अस्ति।
व्यायामादुपजायते	–	व्यायामात् + उपजायते।
चास्ति	–	च + अस्ति।
किञ्चित्	–	किम् + चित्।
स्थौल्यापकर्षणम्	–	स्थौल्य + अपकर्षणम्।
अर्दयन्त्यरयो बलात्	–	अर्दयन्ति + अरयः + बलात्।
चैनम्	–	च + एनम्।
सहस्राक्रम्य	–	सहसा + आक्रम्य।
व्यायामाभिरतस्य	–	व्यायाम + अभिरतस्य।
व्याधयो नोपसर्पन्ति	–	व्याधयः + न + उपसर्पन्ति।
इवोरगाः	–	इव + उरगाः।
गुणैर्हीनम्	–	गुणैः + हीनम्।
कुर्वतोनित्यम्	–	कुर्वतः + नित्यम्।
व्यायामो हि	–	व्यायामः + हि।
पथ्योबलिनां	–	पथ्यः + बलिनाम्।
सर्वेष्वृतुष्वहरहः	–	सर्वेषु + ऋतुषु + अहः + अहः।
पुम्भिरात्म.	–	पुम्भिः + आत्म.।
बलस्यार्धेन	–	बलस्य + अर्धेन।
कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा	–	कर्त्तव्यः + व्यायामः + हन्ति + अतः + अन्यथा।
हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा	–	हृदिस्थान + आस्थितः + वायुः + यदा।
कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य	–	कुर्वतः + जन्तोः + तत् + बल + अर्धस्य।
वयोबलम्	–	वयः + बलम्।
देशकालाशनानि	–	देशकाल + अशनानि।
कुर्यादव्यायामम्	–	कुर्यात् + व्यायामम्।

संयोगः

अग्नित्वमनालस्यम्	–	अग्नित्वम् + अन् : आलस्यम्।
मर्त्यमर्दयन्ति	–	मर्त्यम् + अर्दयन्ति।
समधिरोहति	–	सम् + अधिरोहति।
पद्भ्यामुद्वर्तिनस्य	–	पद्भ्याम् + उद्वर्तितस्य।
वैनतेयमिव	–	वैनतेयम् + इव।
हीनमपि	–	हीनम् + अपि।
विरुद्धमपि	–	विरुद्धम् + अपि।
विदग्धमविद्ग्धम्	–	विदग्धम् + अविदग्धम्।
समीक्ष्य	–	सम् + ईक्ष्य।
व्यायाममन्यथा	–	व्यायामम् + अन्यथा।
रोगमाप्नुयात	–	रोगम् + आप्नुयात्।

Scanned by TapScanner

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते?
(ख) व्यायामात् किं किमुपजायते?
(ग) जरा कस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति?
(घ) कियता बलेन व्यायामः कर्तव्यः?
(ङ) अर्धबलस्य लक्षणम् किम्?

उत्तरम्–

(क) कीदृशं शरीरायासजननं व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते।
(ख) व्यायामात् श्रम-क्लम-पिपासा-उष्ण-शीतादीनां सहिष्णुता परमम् आरोग्यं च उपजायते।
(ग) जरा व्यायामाभिरतस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति।
(घ) बलस्यार्धेन व्यायामः कर्तव्यः।
(ङ) व्यायामं कुर्वतः जन्तोः हृदिस्थान-आस्थितः वायुः यदा वक्त्रं प्रपद्यते तद् अर्धबलस्य लक्षणम्।

2. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु तृतीयाविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत।** (उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए शब्दों की तृतीया विभक्ति का प्रयोग करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

यथा–व्यायामः ..... हीनमपि सुदर्शनं करोति (गुण)
व्यायामः गुणैः हीनमपि सुदर्शनं करोति।

(क) ..... व्यायामः कर्त्तव्यः। (बलस्यार्ध)
(ख) ..... सदृशं किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति। (व्यायाम)
(ग) ..... विना जीवनं नास्ति। (विद्या)
(घ) सः ..... खञ्जः अस्ति। (चरण)
(ङ) सूपकारः ..... भोजनं जिघ्रति। (नासिका)

उत्तरम्– (क) बलस्यार्धेन, (ख) व्यायामेन, (ग) विद्यां/विद्यया/विद्यायाः, (घ) चरणेन, (ङ) नासिकया।

3. **स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (स्थूल शब्दों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए)

(क) **शरीरस्य** आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।
(ख) **अरयः** व्यायामिनं न अर्दयन्ति।
(ग) **आत्महितैषिभिः** सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः।
(घ) व्यायामं कुर्वतः **विरुद्ध** भोजनम् अपि परिपच्यते।
(ङ) **गात्राणां** सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

उत्तरम्–

(क) **कस्य** आयासजननं कर्म व्यायामः इति **कथ्यते।**
(ख) **के** व्यायामिनं न अर्दयन्ति।
(ग) **कैः** सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः।
(घ) व्यायामं कुर्वतः **कीदृशं** भोजनम् अपि परिपच्यते।
(ङ) **केषां** सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

4. **(अ) षष्ठ श्लोकस्य भावमाश्रित्य रिक्तस्थानानि पूरयत।** (छठे श्लोक के भाव के आधार पर रिक्त स्थान पूरे कीजिए।)

यथा- ..... समीपे उरगाः न ..... एवमेव व्यायामिनः जनस्य समीपं ..... न गच्छन्ति।
व्यायामः वयोरूपगुणहीनम् अपि जनम् ..... करोति।

(आ) 'व्यायामस्य लाभाः' इति विषयमधिकृत्य पञ्चवाक्येषु एकम् अनुच्छेदं लिखत। ('व्यायाम के लाभ' इस विषय के आधार पर पाँच वाक्यों का एक अनुच्छेद लिखिए।)

उत्तरम्–

(अ) वैनतेयस्य, उपसर्पन्ति, व्याधयः, सुदर्शनं।
(आ) (क) व्यायामेन आलस्यं नश्यति। (ख) अनेन जनः स्फूर्तिवान् भवति। (ग) व्यायामशीलस्य मतिः तीक्ष्णा भवति।
(घ) व्यायामशीलः एकाग्रचित्तः जायते। (ङ) व्यायामशीलः सदा नीरोगः जीवति।

5. **यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'तत्कृत्वा तु सुखं देहम्' अत्र विशेषणपदं किम्?
(ख) 'व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?
(ग) 'पुम्भिरात्महितैषिभिः' अत्र 'पुरुषैः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

Scanned by TapScanner

(घ) 'दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा' इति वाक्यात् 'गौरवम्' इति पदस्य विपरीतार्थकं पदं चित्वा लिखत।
(ङ) 'न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणम्' अस्मिन् वाक्ये 'तेन' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम्–

6. (अ) निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत। (निम्नलिखित अव्ययों को रिक्त स्थानों में प्रयोग कीजिए।)

सहसा, अपि, सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा, अन्यथा

(क) ..... व्यायामः कर्तव्यः।
(ख) ..... मनुष्यः सम्यक्रूपेण व्यायामं करोति तदा सः स्वस्थः तिष्ठति।
(ग) व्यायामेन असुन्दराः ..... सुन्दराः भवन्ति।
(घ) व्यायामिनः जनस्य सकाशं वार्धक्यं ..... नायाति।
(ङ) व्यायामेन ..... किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति।
(च) व्यायामं समीक्ष्य एव कर्तव्यम् ..... व्याधयः आयान्ति।

(आ) उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत। (उदाहरण के अनुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए)

कर्मवाच्यम्	**कर्तृवाच्यम्**
यथा– आत्महितैषिभिः व्यायामः क्रियते	आत्महितैषिणः व्यायामं कुर्वन्ति।
(क) बलवता विरुद्धमपि भोजनं पच्यते	.....
(ख) जनैः व्यायामेन कान्तिः लभ्यते	.....
(ग) मोहनेन पाठः पठ्यते	.....
(घ) लतया गीतं गीयते	.....

उत्तरम्–

(अ) (क) सर्वदा, (ख) यदा, सदा, (ग) अपि, (घ) सहसा, (ङ) सदृशं, (च) अन्यथा।
(आ) (क) बलवान् विरुद्धमपि भोजनं पचति। (ख) जनाः व्यायामेन कान्तिं लभन्ते। (ग) मोहनः पाठं पठति। (घ) लता गीतं गायति।

7. (अ) अधोलिखितेषु तद्धितपदेषु प्रकृतिं/प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत। (निम्नलिखित तद्धित शब्दों से प्रकृति/प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए।)

	मूलशब्दः (प्रकृतिः)		**प्रत्ययः**
(क) पथ्यतमः	=	+	.....
(ख) सहिष्णुता	=	+	.....
(ग) अग्नित्वम्	=	+	.....
(घ) स्थिरत्वम्	=	+	.....
(ङ) लाघवम्	=	+	.....

(आ) अधोलिखितकृदन्तपदेषु मूलधातुं प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत। (निम्नलिखित कृदन्त शब्दों में मूल धातु व प्रत्यय अलग करके लिखिए।)

	मूलशब्दः		**प्रत्ययः**
(क) कर्तव्यः	=	+	.....
(ख) भोजनम्	=	+	.....
(ग) आस्थितः	= आ + ...	+	.....
(घ) स्मृतः	=	+	.....
(ङ) समीक्ष्य	सम्	+	.....
(च) आक्रम्य	= आ + ...	+	.....
(छ) जननम्	=	+	.....

उत्तरम्–

(अ) (क) पथ्य+तमप्, (ख) सहिष्णु+तल्, (ग) अग्नि+त्व, (घ) स्थिर+त्व, (ङ) लघु+अण्।

Scanned by TapScanner

(आ) (क) कृ+तव्यत्, (ख) भुज्+लयुट्, (ग) स्था+क्त, (घ) स्मृ+क्त, (ङ) ईक्ष्+ल्यप्, (च) क्रम्+ल्यप्, (छ) जन्+ल्युट्।

योग्यताविस्तार:

(क) सुश्रुत: आयुर्वेदस्य, 'सुश्रुतसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अस्मिन् ग्रन्थे शल्यचिकित्साया: प्राधान्यमस्ति। सुश्रुत: शल्यशास्त्रज्ञस्य दिवोदासस्य शिष्य: आसीत्। दिवोदास: सुश्रुतं वाराणस्याम् आयुर्वेदम् अपाठयत्। सुश्रुत: दिवोदासस्य उपदेशान् स्वग्रन्थेऽलिखत्।

(ख) **उपलब्धासु आयुर्वेदीय**-संहितासु 'सुश्रुतसंहिता' सर्वश्रेष्ठ: शल्यचिकित्साप्रधानो ग्रन्थ:। अस्मिन् ग्रन्थे 120 अध्यायेषु क्रमेण सूत्रस्थाने मौलिकसिद्धान्तानां शल्यकर्मोपयोगि-यन्त्रादीनां, निदानस्थाने व्यायाम: सर्वदा पथ्य: प्रमुखाणां रोगाणां, शरीरस्थाने शरीरशास्त्रस्य चिकित्सास्थाने, शल्यचिकित्साया: कल्पस्थाने चविषाणां प्रकरणानि वर्णितानि। अस्य उत्तरतन्त्रे 66 अध्याया: सन्ति।

(ग) **वैनतेयमिवोरगा:**– कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थीं– कद्रु और विनता। विनता का पुत्र गरुड़ था और कद्रु का पुत्र सर्प। विनता का पुत्र होने के कारण गरुड़ को वैनतेय कहा जाता है। (विनताया: अयम् वैनतेय:, अण् प्रत्यये कृते)। गरुड़ सर्प से अधिक ताकतवर होता है, भयवश साँप गरुड़ के पास जाने का साहस नहीं करता। यहाँ व्यायाम करने वाले मनुष्य की तुलना गरुड़ से तथा व्याधियों की तुलना साँप से की गई है। जिस प्रकार गरुड़ के समक्ष साँप नहीं जाता। उसी प्रकार व्यायाम करने वाले व्यक्ति के पास रोग नहीं फटकते।

भाषिकविस्तार:

गुणवाचक शब्दों से भाव अर्थ में ष्यञ् अर्थात् य प्रत्यय लगाकर भाववाची पदों का निर्माण किया जाता है। शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि होती है और अन्तिम अ का लोप होता है।

(क) शूरस्य भाव: शौर्यम् – शूर + ष्यञ्
(ख) सुन्दरस्य भाव: सौन्दर्यम् – सुन्दर + ष्यञ्
(ग) सुखस्य भाव: सौख्यम् – सुख + ष्यञ्
(घ) विदुष: भाव: वैदुष्यम् – विद्वस् + ष्यञ्
(ङ) मधुरस्य भाव: माधुर्यम् – मधुर + ष्यञ्
(च) स्थूलस्य भाव: स्थौल्यम् – स्थूल + ष्यञ्
(छ) अरोगस्य भाव: आरोग्यम् – अरोग + ष्यञ्
(ज) सहितस्य भाव: साहित्यम् – सहित + ष्यञ्

थाल्-प्रत्यय:– 'प्रकार' अर्थ में थाल् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे– तेन प्रकारेण – तथा
अन्येन प्रकारेण – अन्यथा
उभय प्रकारेण – उभयथा
येन प्रकारेण – यथा
सर्व प्रकारेण – सर्वथा

भावविस्तार:

(क) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

(ख) लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

(ग) यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनम्, उचितश्च व्यवहार: आवश्यकोऽस्ति तथैव शरीरस्य स्वास्थ्याय व्यायाम: अपि आवश्यक:।

(घ) युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु:खहा।।

(ङ) पक्षिण: आकाशे उड्डीयन्ते तेषाम् उड्डयनमेव तेषां व्यायाम:। पशवोऽपि इतस्तत: पलायन्ते, पलायनमेव तेषां व्यायाम:। शैशवे शिशु: स्वहस्तपादौ चालयति, अयमेव तस्य व्यायाम:।
वि+आ+यम् धातो: घञ् प्रत्ययात् निष्पन्न: व्यायाम शब्द: विस्तारस्य विकासस्य च वाचक:। यतो हि व्यायामेन अङ्गानां विकास: भवति। अत: सुखपूर्वकं जीवनं यापयितुं मनुष्यै: नित्यं व्यायाम: करणीय:।

Scanned by TapScanner

चतुर्थः पाठः

शिशुलालनम्

पाठ परिचय–प्रस्तुत पाठ संस्कृतवाङ्मय के प्रसिद्ध नाटक 'कुन्दमाला' के पंचम अङ्क से सम्पादित करके लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध नाटककार दिङ्नाग हैं। प्रस्तुत नाटक में कवि ने रामकथा क उत्तरार्ध की करुण घटना का मार्मिक चित्रण किया है। पूरा नाटक वाल्मीकि के तपोवन के आस-पास ही है। लव और कुश से मिलने पर राम उन्हें गले लगाने के उत्कण्ठित हो जाते हैं। वे कुश और लव को सिंहासन पर अपने पास, अपनी गोद में बैठाना चाहते हैं किन्तु वे दोनों अतिशालीनतापूर्वक मना करते हैं। सिंहासनारूढ राम कुश और लव के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उन्हें अपनी गोद में बैठा लेते हैं और आनन्दित होते हैं। पाठ में शिशु स्नेह का अत्यन्त मनोहारी वर्णन किया गया है।

(सिंहासनस्थः रामः। ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गौ तापसौ कुशलवौ)

विदूषकः – **इत इत आर्यौ!**

कुशलवौ – *(रामस्य समीपम् उपसृत्य प्रणम्य च)* **अपि कुशलं महाराजस्य?**

रामः – **युष्मद्दर्शनात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एव, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य। (परिष्वज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः।**

(आसनार्धमुपवेशयति)

उभौ – **राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्।**

रामः – **सव्यवधानं न चारित्रलोपाय। तस्मादङ्क – व्यवहितमध्यास्यतां सिंहासनम्।**

(अङ्कमुपवेशयति)

उभौ – *(अनिच्छां नाटयतः)* **राजन्! अलमतिदाक्षिण्येन।**

रामः – अलमतिशालीनतया।
भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव।
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्॥

रामः – **एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्वंशस्य कर्त्ता?**

Scanned by TapScanner

शब्दार्थ:– **सिंहासनस्य:**–सिंहासनासीन: (सिंहासन पर विराजमान)। **उपसृत्य**–उपगम्य (पास जाकर)। **भाजनम्**–पात्रम् (पात्र, अधिकारी)। **कण्ठाश्लेषस्य**–ग्रीवालग्नस्य (गले लगाने का)। **परिष्वज्य**–आलिंगन कृत्वा (गले लगाकर)। **युक्तम्**–उचितम् (उचित)। **अध्यासितुम्**–उपवेष्टुम् (बैठने के लिए)। **सव्यवधानम्**–सावरोधम् (रुकावट सहित)। **अध्यास्यताम्**–उपविश्यताम् (बैठिए)। **अलमतिदाक्षिव्येन**–अलमतिकौशलेन (अधिक कुशलता मत कीजिए)। **वय:**–आयु: (आयु)। **हिमकर:**–चन्द्र: (चन्द्रमा)। **पशुपति:**–शिव:, शूली (भगवान् शिव:)। **केतकच्छदत्वम्**–केतकस्य छदत्वम् (केतकी के फूल से बना मस्तक का शेखर (जूड़ा)। **कौतूहलेन**–जिज्ञासया (जिज्ञासा से)। **पितामह:**–पितु: पिता (दादाजी)।

सरलार्थ–

(सिंहासन पर स्थित राम। इसके बाद प्रवेश करते हैं विदूषक द्वारा मार्ग दिखाए जाते हुए तपस्वी कुश और लव)

विदूषक – हे आर्यों! इधर से, इधर से।

कुश और – (राम के समीप जाकर और प्रणाम करके) क्या महाराज कुशल हैं?

लव

राम – आपके दर्शनों से कुशल हूँ। हम यहाँ आपकी कुशलता पूछने के पात्र हैं, नहीं फिर (आप जैसे) अतिथियों को समुचित रूप से गले लगाने के पात्र हैं (हम)। (गले लगाकर) अरे! हृदय को छूने वाला स्पर्श है।)

दोनों – यह राजा का आसन है, इस पर बैठाना उचित नहीं है।

राम – (यह) व्यवधान (रुकावट) के साथ, आचरण के लोप के लिए नहीं है। इसलिए गोद की रुकावट के साथ बैठ जाइए सिंहासन पर।

(गोद में बैठाते हैं)

दोनों – (अनिच्छा का अभिनय करते हैं) हे राजन्! अत्यधिक कुशलता मत कीजिए।

राम – अधिक शालीनता मत कीजिए।

'अत्यधिक गुणी लोगों के लिए भी छोटी उम्र के कारण बालक लालनीय ही होता है। चन्द्रमा बालभाव के कारण ही शङ्कर के मस्तक का आभूषण बनकर केतकी पुष्पों से निर्मित चूड़ा की भाँति शोभित होता है।'

राम – आप दोनों के सौंदर्य-दर्शन से उत्पन्न जिज्ञासा से यह पूछ रहा हूँ–क्षत्रिय कुल के पितामह सूर्य और चन्द्र में से आपके वंश का कर्ता (जनक) कौन है?

लव: – **भगवन् सहस्रदीधिति:।**

राम: – **कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?**

विदूषक: – **किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?**

लव: – **भ्रातरावावां सोदर्यौ।**

राम: – **समरूप: शरीरसन्निवेश:। वयमस्तु न किञ्चिदन्तरम्।**

लव: – आवां यमलौ।

राम: – **सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?**

लव: – **आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि** *(कुशं निर्दिश्य)* **आर्योऽपि गुरुचरणवन्दनायाम्** .....

.....

कुश: – **अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि।**

राम: – **अहो! उदात्तरम्य: समुदाचार:। किं नामधेयो भवतोर्गुरु:?**

लव: – **ननु भगवान् वाल्मीकि:।**

राम: – **केन सम्बन्धेन?**

लव: – **उपनयनोपदेशेन।**

शब्दार्थ:– **सहस्रदीधिति:**–सूर्य:, दिनकर: (सूर्य)। **समानाभिजनौ**–समानकुलोत्पन्नौ (एक ही वंश में पैदा होने वाले)। **संवृत्तौ**–सञ्जातौ (हो गए)। **प्रतिवचनम्**–उत्तरम्, प्रत्युत्तरम् (उत्तर)। **सोदर्यौ**–सहोदरौ (सगे भाई)। **शरीरसन्निवेश:**–देह-सरचना (शरीर की बनावट)। **यमलौ**–युगलौ (जुड़वा)। **उदात्तरम्य:**–अतिरमणीय: (अत्यधिक मनोहर)। **समुदाचार:**–शिष्टाचार: (शिष्टाचार)। **उपनयनीपदेशेन**–उपनयन-संस्कार-दीक्षया (उपनयन (जनेऊ) की दीक्षा के कारण)।

Scanned by TapScanner

सरलार्थ–

लव – भगवान सूर्य।
राम – क्या! हमारे ही वंश से सम्बन्धित हैं आप दोनों?
विदूषक – क्या दोनों का एक ही उत्तर है?
लव – हम दोनों सगे भाई हैं।
राम – समान रूप तथा शरीर संरचना भी समान है। आयु का थोड़ा भी अन्तर नहीं है।
लव – हम दोनों जुड़वा (भाई) हैं।
राम – अब उचित है। नाम क्या है?
लव – आर्य (आप) की स्तुति में अपने आपको 'लव' सुना रहा हूँ। (कुश की ओर इशारा करके) आर्य भी गुरु-चरणों की वन्दना में.....
कुश – मैं भी अपने आपको 'कुश' बताता हूँ।
राम – अहो! अत्यधिक मनोहर शिष्टाचार है। आप दोनों के गुरु का क्या नाम है?
लव – भगवान वाल्मीकि।
राम – किस सम्बन्ध से।
लव – उपनयन संस्कार की (दीक्षा देने) के सम्बन्ध से।

रामः – अहमत्रभवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।
लवः – न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।
रामः – अहो माहात्म्यम्।
कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।
रामः – कथ्यताम्।
कुशः – निरनुक्रोशो नाम...
रामः – वयस्य, अपूर्वं खलु नामधेयम्।
विदूषकः – *(विचिन्त्य)* एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति?
कुशः – अम्बा।
विदूषकः – किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?
कुशः – यद्यावयोर्बालभावजनितं कञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपति-निरनुक्रोशस्य पुत्रौ, मा चापलम् इति।
विदूषकः – एतयोर्यदि पितुर्निरनुक्रोश इति नामधेयम् एतयोर्जननी तेनावमानिता निर्वासिता एतेन वचनेन दारकौ निर्भर्त्सयति।
रामः – *(स्वगतम्)* धिङ् मामेवंभूतम्। सा तपस्विनी मत्कृतेनापराधेन स्वापत्यमेवं मन्युगर्भैरक्षरैर्निर्भर्त्सयति।

(सवाष्पमवलोकयति)

रामः – अतिदीर्घः प्रवासोऽयं दारुणश्च। *(विदूषकमवलोक्य जनान्तिकम्)* कुतूहलेनाविष्टो मातरमनयोर्नामतो वेदितुमिच्छामि। न युक्तं च स्त्रीगतमनुयोक्तुम्, विशेषतस्तपोवने। तत् कोऽत्राभ्युपायः?

शब्दार्थः– **नामतः**–नाम्नः (नाम से)। **वेदितुम्**–ज्ञातुम् (जानने के लिए)। **नामधेयम्**–नाम, अभिधानम् (नाम)। **निरनुक्रोशः**–निर्दयः, क्रूरः (निर्दय, क्रूर)। **वयस्य**–मित्र (मित्र)। **भणति**–कथयति (कहता है)। **अम्बा**–जननी, माता (माँ) **उत**–या, अथवा (वा अथवा)। **प्रकृतिस्था**–सामान्य-मनः स्थितिः (स्वाभाविक रूप से)। **अविनयम्**–उद्दण्डता (उद्दण्डता)। **अधिक्षिपति**–वाग्दण्डयति, निर्भत्सयति (फटकारती है)। **चापलम्**–चपलताम् (चञ्चलता)। **अवमानिता**–अपमानिता (अपमानित की गई)। **दारकौ**–पुत्रौ (दो पुत्र)। **निर्भत्सयति**–अधिक्षिपति, वाग्दण्डयति (धमकाती है)। **स्वापत्यम्**–स्वसन्ततिम् (अपनी सन्तान को)। **मन्युगर्भैः**– अहंकारयुक्तैः (अहंकार से भरे)। **प्रवासः**–विदेशगमनम् (विदेश (दूसरे स्थान) को जाना। **दारुण**–भीषणः, भयङ्करः (भयंकर)। **अवलोक्य**–दृष्ट्वा, वीक्ष्य (देखकर)।

सरलार्थ–

राम – मैं आप दोनों आदरणीयों के पिता को नाम से जानना चाहता हूँ।

Scanned by TapScanner

लव – मैं इनका नाम नहीं जानता हूँ। कोई भी इस तपोवन में उनका नाम नहीं लेता (बोलता) है।
राम – अरे (बड़ी) महत्ता है।
कुश – मैं जानता हूँ उनका नाम।
राम – कहिए (बताइए)।
कुश – 'निर्दय' नाम है।
राम – मित्र, निश्चय ही अनोखा नाम है।
विदूषक – *(सोचकर)* यह पूछ रहा हूँ कि (उन्हें) 'निर्दय' कौन कहता है?
कुश – माँ।
विदूषक – क्या वे गुस्से में ऐसा कहती हैं या स्वाभाविक (वास्तविक) रूप में?
कुश – यदि हम दोनों की बालभाव से उत्पन्न उद्दण्डता देखती हैं तब ऐसा (कहकर) फटकारती है–'निर्दय के पुत्रों, चञ्चलता मत करो' ऐसा।
विदूषक – यदि इनके पिता का नाम निर्दय (निरनुक्रोश) है, तो इनकी माता उससे अपमानित व निष्कासित होने के कारण इन्हें फटकारती हैं।
राम – *(अपने मन में)* ऐसे मुझको धिक्कार है। वह तपस्विनी मेरे द्वारा किए गए अपराध के कारण अपनी सन्तान की इस प्रकार अहंकार युक्त शब्दों से फटकारती है।

(गीली आँखों से देखते हैं)

राम – यह प्रवास बहुत लम्बा व भयंकर (दूभर) हो गया है। (विदूषक को देखकर, अकेले में) इनकी माता को (न बताए जाने के कारण) छूटे हुए नाम से जानना चाहता हूँ। स्त्री के विषय में पूछताछ उचित नहीं है, विशेष रूप से तपोवन में। तो यहाँ (इस विषय में) क्या उपाय है?

विदूषकः – *(जनान्तिकम्)* **अहं पुनः पृच्छामि।** *(प्रकाशम्)* **किं नामधेया युवयोर्जननी?**
लवः – **तस्याः द्वे नामनी।**
विदूषकः – **कथमिव?**
लवः – **तपोवनवासिनो देवीति नाम्नाह्वयन्ति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।**
रामः – **अपि च इतस्तावद् वयस्य!**
मुहूर्त्तमात्रम्।
विदूषकः – *(उपसृत्य)* **आज्ञापयतु भवान्।**
रामः – **अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः?**

(नेपथ्ये)

इयती वेला सञ्जाता रामायणगानस्य नियोगः किमर्थं न विधीयते?
उभौ – **राजन्! उपाध्यायदूतोऽस्मान् त्वरयति।**
रामः – **मयापि सम्माननीय एव मुनिनियोगः। तथाहि–**

भवन्तौ गायन्तौ कविरपि पुराणो व्रतनिधिर्
गिरां सन्दर्भोऽयं प्रथममवतीर्णो वसुमतीम्।
कथा चेयं श्लाघ्या सरसिरुहनाभस्य नियतं,
पुनाति श्रोतारं रमयति च सोऽयं परिकरः॥

वयस्य! अपूर्वोऽयं मानवानां सरस्वत्यवतारः, तदहं सुहृज्जनसाधारणं श्रोतुमिच्छामि। सन्निधीयन्तां सभासदः, प्रेष्यतामस्मदन्तिकं सौमित्रिः,अहमप्येतयोश्चिरासनपरिखेदं विहरणं कृत्वा अपनयामि।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

शब्दार्थः– **प्रकाशम्**–स्पष्टवाचा (स्पष्ट शब्दों में)। **आह्वयन्ति**–आकारयन्ति, शब्दापयन्ति (पुकारते हैं)। **आज्ञापयतु**–आदेशयतु (आज्ञा दीजिए)। **इयती**–एतावती (इतनी)। **उपाध्यायः**–आचार्यः, शिक्षकः (शिक्षक)। **वसुमतीम्**–पृथिवीम् (पृथिवी को)। **श्लाघ्या**–प्रशंसनीया (प्रशंसनीय है)। **सरसिरुहनाभस्य**–विष्णोः, नारायणस्य (विष्णु का)। **सौमित्रिः**–लक्ष्मणः (लक्ष्मण)। **विहरणम्**–भ्रमणम् (भ्रमण)। **निष्क्रान्ताः**–मृनर्गताः (निकल जाते हैं)।

Scanned by TapScanner

सरलार्थ–

विदूषक – *(अकेले में)* फिर मैं पूछ लेता हूँ। *(स्पष्ट शब्दों में)* तुम दोनों की माता का नाम क्या है?

लव – उसके दो नाम हैं।

विदूषक – कैसे?

लव – तपोवनवासी उसे 'देवा' इस नाम से पुकारते हैं, (और) भगवान् वाल्मीकि 'वधू' इस नाम से।

राम – मित्र, इसके अलावा क्या है?
मुहूर्त मात्र के लिए।

विदूषक – *(पास जाकर)* आज्ञा दीजिए आप।

राम – क्या इन दोनों कुमारों और हमारे वंश का वृत्तान्त पूर्णत: समान है?

(नेपथ्य में)

इतना समय हो गया है, रामायण के गायन की तैयारी क्यों नहीं की जा रही है?

दोनों – हे राजन्! उपाध्याय का दूत हमें शीघ्रता के लिए कह रहा है।

राम – मुनि की व्यवस्था हमारे लिए भी सम्मानीय है क्योंकि–'आप दोनों (कुश और लव) इस कथा का गान करने वाले हैं, तपोनिधि पुराण मुनि (वाल्मीकि) इस रचना के कवि हैं, धरती पर प्रथम बार अवतरित होने वाला स्फुट वाणी का यह काव्य है और इसकी कथा कमलनाभि विष्णु से सम्बद्ध है इस प्रकार निश्चय ही यह संयोग श्रोताओं को पवित्र और आनन्दित करने वाला है।'

मित्र! सरस्वती का यह अवतार मानवों के लिए अनोखा है, मैं उस जनसाधारण के हृदय (में स्थित) भाव को सुनना चाहता हूँ। सभी सभासद बैठ जाएँ। लक्ष्मण को मेरे पास भेजा जाए। मैं भी उन दोनों के चिरकालजनित कष्ट को विहार करके (जाकर) दूर कर देता हूँ।

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं।)

पाठ में प्रयुक्त पद्यांश (अन्वय व भाव)

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव।
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति-मस्तक-केतकच्छत्वम्॥

अन्वय – गुणमहताम् अपि वयोऽनुरोधात् शिशुजन: लालनीय: एव भवति। बालभावात् हि हिमकर: अपि पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम् व्रजति।

भाव – अत्यधिक गुणी लोगों के लिए भी छोटी उम्र के कारण बालक लालनीय ही होता है। चन्द्रमा बालभाव के कारण ही शटर के मस्तक का आभूषण बनकर केतकी पुष्पों से निर्मित चूड़ा की भाँति शोभित होता है।

भवन्तौ गायन्तौ कविरपि पुराणो व्रतनिधिर्
गिरां सन्दर्भोऽयं प्रथमवतीर्णो वसुमतीम्।
कथा चेयं श्लाघ्या सरसिरुहनाभस्य नियतं,
पुनाति श्रोतारं रमयति च सोऽयं परिकर:॥

अन्वय – भवन्तौ गायन्तौ, पुराण: व्रतनिधि: कवि: अपि, वसुमतीम् प्रथमं अवतीर्ण: गिराम् अयं सन्दर्भ:, सरसिरुहनाभस्य च इयं श्लाघ्या कथा, स: च अयं परिकर: नियतं श्रोतारं पुनाति रमयति च।

भाव – भगवान् वाल्मीकि द्वारा निबद्ध पुराणपुरुष की कथा, कुश लव द्वारा श्री राम को सुनायी जानी थी, उसी की सूचना देते हुए नेपथ्य से कुश और लव को बिना समय नष्ट किये अपने कर्तव्य का पालन करने का निर्देश दिया जाता है। दोनों राम से आज्ञा लेकर जाना चाहते हैं तब श्री राम उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से उस रचना का सम्मान करते हैं।

आप दोनों (कुश और लव) इस कथा का गान करने वाले हैं, तपोनिधि पुराण मुनि (वाल्मीकि) इस रचना के कवि हैं, धरती पर प्रथम बार अवतरित होने वाला स्फुट वाणी का यह काव्य है और इसकी कथा कमलनाभि विष्णु से सम्बद्ध है इस प्रकार निश्चय ही यह संयोग श्रोताओं को पवित्र और आनन्दित करने वाला है।

Scanned by TapScanner

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

विदूषकेनोपदिश्य. – विदूषकेन + उपदिश्य.।
इत इत आर्यौ – इतः + इतः : आर्यौ।
युष्मद्दर्शनात् – युष्मत् + दर्शनात्।
पुनरतिथि. – पुनः + अतिथि.।
कण्ठाश्लेषस्य – कण्ठ + आश्लेषस्य।
राजासनम् – राजा + आसनम्।
खल्वेतत् – खलु + एतत्।
आसनार्धम् – आसन् + अधर्म्।
तस्मादङ्क. – तस्मात् + अङ्क.।
शिशुजनो
वयोऽनुरोधात् – शिशुजनः + वयः + अनुरोधात्।
लालनीय एव – लालनीयः + एव।
हिमकरोऽपि – हिमकरः + अपि।
केतकच्छदत्वम् – केतक + छदत्वम्।
सौन्दर्यावलोकः – सौन्दर्य + अवलोकः।
को वा – कः + वा।
भवतोर्वंशस्य – भवतोः + वंशस्य।
समानाभिजनौक – समान + अभिजनौ।
द्वयोरप्येकम् – द्वयोः + अपि + एकम्।
भ्रातरावावाम् – भ्रातरौ + आवाम्।
वयसस्तु – वयसः + तु।
किञ्चिदन्तरम् – किम् + चित् + अन्तरम्।
इत्यात्मानम् – इति + आत्मानम्।
आर्योऽपि – आर्यः + अपि।
नामधेयो भवतोर्गुरुः – नामधेयः + भवतो + गुरुः।
उपनयनोपदेशेने – उपनयन + उपदेशेन।
नामतो वेदितुम् – नामतः + वेदितुम्।
जानाम्यस्य – जानानि + अस्या।
कश्चिदस्मिन् – कः + चित् + अस्मिन्।
तपोवने – तपः + वने।
व्यवहरति – वि + अवहरति।
जानाम्यहम् – जानामि + अहम्।
निरनुक्रोशे नाम – निः + अनुक्रोशः + नाम।
निरनुक्रोश इति – निः + अनुक्रोशः : इति।
क एवम् – कः + एवम्।
यद्यावयोबलि. – यदि + आवयोः + बाल.।
कञ्चिदविनयम् – कम् + चित् + अविनयम्।
एतयोर्यदि – एतयोः + यदि।
पितुर्निरनुक्रोशः – पितुः + निः(निर्) +अनुक्रोशः।
एतयोर्जननी – एतयोः + जननी।
तेनावमानिता – तेन + अवमानिता।
धिङ्माम् – धिक् + माम्।
मत्कृतेनापराधेन – मत्कृतेन + अपराधेन।

स्वापत्यम् – स्व + अपत्यम्।
मन्युगर्भैरक्षरैर्निर्भत्सयति – मन्युगर्भैः + अक्षरैः + निः (निर्) + भत्स्यति।
प्रवासोऽयम् – प्रवासः + अयम्।
दारुणश्च – दारुणः + च।
जनान्तिकम् – जन + अन्तिकम्।
कुतूहलेनावशिष्टो मातरम् – कुतूहलेन + अवशिष्टः + मातरम्।
अनयोनामतो वेदितुम् – अनयोः + नामतः + वेदितुम्।
विशेषस्तपोवने – विशेषः + तपोवने।
कोऽत्राभ्युपायः – कः + अत्र + अभि + उपायः।
युवयोर्जननी – युवयोः + जननी।
वासिनोदेवीति – वासिनः + देवी + इति।
नाम्नाह्वयन्ति – नाम्ना + आह्वयन्ति।
वाल्मीकिर्वधूरिति – वाल्मीकिः + वधूः + इति।
इतस्तावत् – इतः + तावत्।
कुमारयोरनयोरस्माकम् – कुमारयोः + अनयोः + अस्माकम्।
वृत्तान्तः – वृत्त + अन्तः।
दूतोऽस्मान् – दूतः + अस्मान्।
मयापि – मया + अपि।
सम्माननीय एव – सम्माननीयः + एव।
कविरपि – कविः + अपि।
पुराणे व्रतनिधिः – पुराणः + व्रतनिधिः।
सन्दर्भोऽयम् – सन्दर्भः + अयम्।
अवतीर्णो वसुमतीम् – अवतीर्णः + वसुमतीम्।
चेयम् – च + इयम्।
सोऽयम् – सः + अयम्।
अपूर्वोऽयम् – अपूर्वः + अयम्।
सरस्वत्यवतारः – सरस्वती + अवतारः।
तदहम् – तत् + अहम्।
सुहृज्जन – सुहृत् + जन।
सन्निधीयन्ताम् – सत् + निधीयन्ताम्।
अस्मदन्तिकम् – अस्मत् + अन्तिकम्।
एतयोश्चिरासन. – एतयोः + चिर + आसन्।

संयोगः

कुशलमिव – कुशलम् + इव।
वयमत्र – वयम् + अत्र।
अर्धमुपवेशयति – अर्धम् + उपवेशयति।
युक्तमध्यासितुम् – युक्तम् + अध्यासितुम्।
व्यवहितमध्यास्यताम् – व्यवहितम् + अध्यास्यताम्।
अङ्कमुपवेशयति – अङ्कम् + उपवेशयति।
अनिच्छाम् – अन् + इच्छाम्।
अलमति. – अलम् + अति.।
महतामपि – महताम् + अपि।
कथमस्मत् – कथम् + अस्मत्।
एकमेव – एकम् + एव।
अहमपि – अहम् + अपि।

Scanned by TapScanner

समुदाचारः – सम् + उदाचारः।
अहमत्र – अहम् + अत्र।
वैदितुमिच्छामि – वेदितुम् + इच्छामि।
मामेवम् – माम् + एवम्।
स्वापत्यमेवम् – स्वापत्यम् + एवम्।
सवाष्पमालोकयति – सवाष्पम् + आलोकयति।
विदूषकमवलोक्य – विदूषकम् + अवलोक्य।
मातरमनयोः – मातरम् + अनयोः।
वेदितुमिच्छामि – वेदितुम् + इच्छामि।
स्त्रीगतमनुयोक्तुम् – स्त्रीगतम् + अनुयोक्तुम्।
कथमिव – कथम् + इव।
किमर्थम् – किम् + अर्थम्।
प्रथममवतीर्णः – प्रथमम् + अवतीर्णः।
श्रोतुमिच्छामि – श्रोतुम् + इच्छामि।
प्रेष्यतामस्मत् – प्रेष्यताम् + अस्मत्।
अहमपि – अहम् + अपि।

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)
(क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदृशः आसीत्? (ख) रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयितुम् कथयति?
(ग) बालभावात् हिमकरः कुत्र विराजते? (घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्त्ता कः?
(ङ) केन सम्बन्धेन वाल्मीकिः कुशलवयोः गुरुः आसीत्? (च) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः केन नाम्ना आह्वयति?

उत्तरम्–
(क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः हृदयग्राही आसीत्। (ख) रामः लवकुशौ सिंहासनम् उपवेशयितुम् कथयति।
(ग) बालभावात् हिमकरः पशुपतिमस्तके विराजते। (घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्त्ता भगवान् सूर्यः।
(ङ) उपनयनोपदेशेन वाल्मीकिः कुशलवयोः गुरुः आसीत्। (च) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकः 'वधूः' इति नाम्ना आह्वयति।

2. **रेखाङ्कितेषु पदेषु विभक्तिकारणं निर्दिशत।** (रेखांकित शब्दों में कौन-सी विभक्ति प्रयुक्त हुई है, लिखें।)
(क) राजन्! अलम् अतिदाक्षिण्येन। (ख) रामः लवकुशौ आसनार्धम् उपवेशयति।
(ग) धिङ् माम् एवंभूतम्। (घ) अटव्यवहितम् अध्यास्यतां सिंहासनम्।
(ङ) अलम् अतिविस्तरेण।

उत्तरम्– (क) तृतीया– 'अलम्' इति योगे। (ख) द्वितीया– 'उपविश्' इति योगे। (ग) द्वितीया– 'धिक्' इति योगे। (घ) द्वितीया– 'अधि + आस्' इति योगे। (ङ) तृतीया– 'अलम्' इति योगे।

3. **यथानिर्देशम् उत्तरत-**
(क) 'जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?
(ख) 'किं कुपिता एवं भणति उत प्रकृतिस्था'- अस्मात् वाक्यात् 'हर्षिता' इति पदस्य विपरीतार्थकपदं चित्वा लिखत।
(ग) विदूषकः (उपसृत्य) 'आज्ञापयतु भवान्!' अत्र भवान् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(घ) 'तस्मादङ्क-व्यवहितम् अध्यास्यातां सिंहासनम्' - अत्र क्रियापदं किम्?
(ङ) 'वयमस्तु न किञ्चिदन्तरम्'-अत्र 'आयुषः इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

उत्तरम्– (क) अहम्, (ख) कुपित, (ग) रामाय, (घ) अध्यास्याताम्, (ङ) वयसः

4. **अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति।** (निम्नलिखित वाक्यों में कौन किसे कहता है)

	कः	कम्
(क) सव्यवधानं न चारित्र्यलोपाय।	.....	.....
(ख) किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?	.....	.....
(ग) जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।	.....	.....
(घ) तस्या द्वे नाम्नी।	.....	.....

उत्तरम्– (क) रामः, कुशलवौ प्रति, (ख) विदूषकः, कुशं प्रति, (ग) कुशः, रामं प्रति, (घ) लवः, विदूषकं प्रति।

5. **मञ्जूषातः पर्यायद्वयं चित्वा पदानां समक्षं लिखत।** (मंजूषा से दो पर्यायवाची शब्द चुनकर (दिए गए) शब्दों के सामने लिखें।)

शिवः शिष्टाचारः शशिः चन्द्रशेखरः सुतः इदानीम् अधुना पुत्रः सूर्यः सदाचारः निशाकरः भानुः

(क) हिमकरः – ....
(ख) सम्प्रति – ....

Scanned by TapScanner

(ग) समुदाचारः – ....

(घ) पशुपतिः – ....

(ङ) तनयः – ....

(च) सहस्रदीधितिः – ....

उत्तरम्– (क) शशिः, निशाकर (ख) इदानीम्, अधुना (ग) शिष्टाचारः, सदाचारः (घ) शिवः, चन्द्रशेखरः (ङ) सुतः, पुत्रः (च) सूर्यः, भानुः।

6. **(अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्त-प्रकृतिं-प्रत्ययञ्च लिखत।** (उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रकृति व प्रत्यय लिखिए।)

पदानि		प्रकृतिः		प्रत्ययः
यथा–आसनम्	–	आस्	+	ल्युट् प्रत्ययः
(क) युक्तम्	–	.....	+	.....
(ख) भाजनम्	–	.....	+	.....
(ग) शालीनता	–	.....	+	.....
(घ) लालनीयः	–	.....	+	.....
(ङ) छदत्वम्	–	.....	+	.....
(च) सन्निहितः	–	.....	+	.....
(छ) सम्माननीया	–	.....	+	.....

(आ) विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत। (विशेषण-विशेष्य शब्दों को जोड़िए)–

विशेषण पदानि		विशेष्य पदानि
यथा–श्लाघ्या	–	कथा
(1) उदात्तरम्यः		(क) समुदाचारः
(2) अतिदीर्घः		(ख) स्पर्शः
(3) समरूपः		(ग) कुशलवयोः
(4) हृदयग्राही		(घ) प्रवासः
(5) कुमारयोः		(ङ) कुटुम्बवृत्तान्तः

उत्तरम्–

(अ) (क) √युज्+क्त (ख) √भाज्+ल्युट् (ग) शालीन+तल् (घ) लालन+अनीयर् (ङ) छद+त्व (च) सत्+नि+√धा+क्त (छ) सम्माननीय+टाप्।

(आ) (1)–(क); (2)–(घ); (3)–(ङ); (4)–(ख); (5)–(ख)।

7. **(अ) अधोलिखितपदेषु सन्धिं कुरुत।** (निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए।)

(क) द्वयोः + अपि – .....

(ख) द्वौ + अपि – .....

(ग) कः + अत्र – .....

(घ) अनभिज्ञः + अहम् – .....

(ङ) इति + आत्मानम् – .....

(आ) अधोलिखितपदेषु विच्छेदं कुरुत। (निम्नलिखित शब्दों में विच्छेद कीजिए।)

(क) अहमप्येतयोः – .....

(ख) वयोऽनुरोधात् – .....

(ग) समानाभिजनौ – .....

(घ) खल्वेतत् – .....

उत्तरम्–

(अ) (क) द्वयोरपि (ख) द्वावपि (ग) कोऽत्र (घ) अनभिज्ञोऽहम् (ङ) इत्यात्मानम्।

(आ) (क) अहम् + अपि + एतयोः, (ख) वयः + अनुरोधात्, (ग) समान + अभिजनौ, (घ) खलु + एतत्

Scanned by TapScanner

योग्यताविस्तारः

नाट्य-प्रसङ्गः

कुन्दमाला के लेखक दिङ्नाग ने प्रस्तुत नाटक में रामकथा के करुण अवसाद भरे उत्तरार्ध की नाटकीय सम्भावनाओं को मौलिकता से साकार किया है। इसी कथानक पर प्रसिद्ध नाटककार भवभूति का उत्तररामचरित भी आश्रित है। कुन्दमाला के छहों अटों का दृश्यविधान वाल्मीकि-तपोवन के परिसर में ही केन्द्रित है। प्रस्तुत नाटकांश पञ्चम अङ्क से सम्पादित कर सङ्कलित किया गया है। लव और कुश से मिलने पर राम के हृदय में उनसे आलिंगन की लालसा होती है। उनके स्पर्शसुख से अभिभूत हो राम, उन्हें अपने सिंहासन पर, अपनी गोद में बिठाकर लाड़ करते हैं। इसी भाव की पुष्टि में नाटक में यह श्लोक उद्धृत है–

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव।
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति- मस्तक- केतकच्छदत्वम्॥

शिशुस्नेहसमभावश्लोकाः–

अनेन कस्यापि कलाङ्कुरेण
स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद्
यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः॥ (कालिदासस्य)

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ (भवभूतेः)

धूलीधूसरतनवः
क्रीडाराज्ये स्वके च रममाणाः।
कृतमुखवाद्यविकाराःक्रीडन्ति सुनिर्भरं बालाः॥ (कस्यचित्)

अनियतरुदित स्मित विराजत्
कतिपयकोमलदन्तकुड्मलाग्रम्।
वदनकमलकं शिशोः स्मरामि
स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते॥

Scanned by TapScanner

पञ्चमः पाठः

जननी तुल्यवत्सला

पाठ-परिचय– महाभारत भारतीय संस्कृत का एक बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें केवल भारत की संस्कृति ही नहीं झलकती अपितु भारतीय इतिहास का भी विशाल भंडार इस पुस्तक में विद्यमान है। महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो आज के युग में भी उतने ही उपादेय हैं, जितने कभी पहले थे। महाभारत के वनपर्व से ली गई यह कथा न केवल मनुष्यों के प्रति अपितु सभी जीव-जन्तुओं के प्रति समदृष्टि पर बल देती है। समाज में असहाय, गरीब, दुर्बल लोगों अथवा जीवों के प्रति भी मां का स्नेह और उसकी ममता उतनी ही प्रगाढ़ होती है जितनी सबल लोगों के प्रति, यही इस पाठ का मुख्य संदेश है।

कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत। सः ऋषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारम् यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।

भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत्– ''अयि शुभे! किमेवं रोदिषि? उच्यताम्'' इति। सा च

विनिपातो न वः कश्चिद् दृश्यते त्रिदशाधिपः।
अहं तु पुत्रं शोचामि, तेन रोदिमि कौशिक!॥

''भो वासव! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि। सः दीन इति जानन्नपि कृषकः तं बहुधा पीडयति। सः कृच्छ्रेण भारमुद्वहति। इतरमिव धुरं वोढुं सः न शक्नोति। एतत् भवान् पश्यति न?'' इति प्रत्यवोचत्।

शब्दार्थः– बलीवर्दाभ्याम्– (वृषभाभ्याम्) दो बैलों से, **क्षेत्रकर्षणम्**– (क्षेत्रस्य कर्षणम्) खेत की जुताई, **जवेन**– (तीव्रगत्या) तीव्रगति से, **तोदनेन**– (कष्टप्रदानेन) कष्ट देने से, **नुद्यमानः**– (बलेन नीयमानः) धकेला जाता हुआ, हाँका जाता हुआ, **हलमूढ्वा**– (हलम् आदाय) हल उठाकर, हल ढोकर, **पपात**– (भूमौ अपतत्) गिर गया, **कृषीवलः**– (कृषकः) किसान, **उत्थापयितुम**– (उपरि नेतुम्) उठाने के लिए, **वृषः**– (वृषभः) बैल, **धेनूनाम्**– (गवाम्) गायों की, **नेत्राभ्याम्**– (चतुर्भ्याम्, नयनाभ्याम्) दोनों आँखों से, **अश्रूणि**– (नयनजलम्) आँसू, **आविरासन्**– (आगताः) आने लगे, आए, **सुराधिपः**– (सुराणां राजा, देवताओं के राजा) इन्द्र (देवानाम् अधिपः), **उच्यताम्**– (कथ्यताम्) कहें, कहा जाए, **वासव**– (इन्द्रः, देवराजः) इन्द्र, **कृच्छ्रेण**– (काठिन्येन) कठिनाई से, **इतरमिव**– (भिन्नम् इव दूसरों के समान), **धुरम्**– (धुरम्) जुए को (गाड़ी में जुए का वह भाग जो बैलों के कंधों पर रखा रहता है।) **वोढुम्**– (वहनाय योग्यम्) ढोने के लिए, **प्रत्यवोचत**– (उत्तरं दत्तवान्) जवाब दिया।

Scanned by TapScanner

हिन्दी में अनुवाद– कोई किसान दो बैलों से अपने खेत की जुताई कर रहा था। उन दोनों बैलों में से एक शरीर से दुर्बल था और वह तेज गति से चलने में असमर्थ था। इसीलिए किसान उस दुबले बैल को हाँकने वाली छड़ी से हाँक रहा था। वह बैल हल को लेकर जाने में असमर्थ था इसलिए खेत में गिर पड़ा। क्रोधित किसान ने उसको उठाने के लिए बहुत बार यत्न किया तो भी बैल नहीं उठा।

भूमि पर गिरे हुए अपने पुत्र को देखकर सभी गायों की माता सुरभि की आंखों से आंसू गिर रहे थे। सुरभि की इस अवस्था को देखकर देवताओं के राजा इन्द्र ने सुरभि से पूछा– "हे कल्याणी! इस प्रकार क्यों रो रही हो? बताओ।" और उसने भी (उत्तर देते हुए कहा)–

"देवताओं के राजा इन्द्र! आपने कभी अपने किसी परिवारजन का पतन होता हुआ नहीं देखा। (मैंने देखा है, इसीलिए) मैं अपने पुत्र का शोक मना रही हूँ और इसी कारण मैं रो रही हूँ।।"

"हे इन्द्र! मैं अपने पुत्र की दीनता को देखकर रो रही हूँ। वह दीन (अति दुर्बल) है यह जानते हुए भी किसान उसे अनेक प्रकार से पीड़ित कर रहा है। वह बड़ी कठिनता से भार को उठा रहा है। वह दूसरे जुए को उठाने में समर्थ नहीं है। यह तो आप देख रहे हैं न।"– ऐसा उसने उत्तर दिया।

"भद्रे! नूनम्। सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन्नेव एतादृशं वात्सल्यं कथम्?" इति इन्द्रेण पृष्टा सुरभिः प्रत्यवोचत्–

यदि पुत्रसहस्रं मे, सर्वत्र सममेव मे।
दीनस्य तु सतः शक्र! पुत्रस्याभ्यधिका कृपा॥

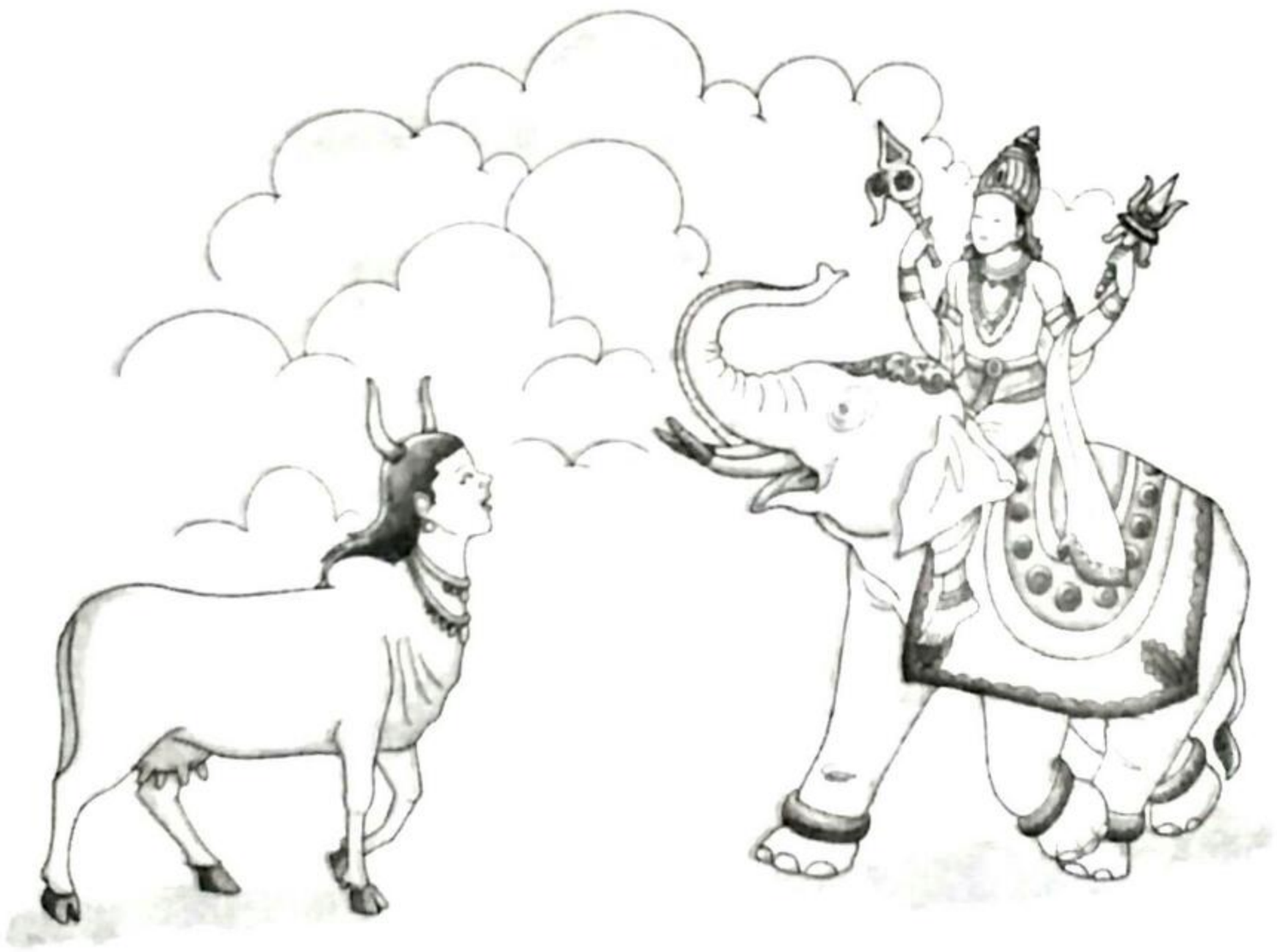

"बहून्यपत्यानि मे सन्तीति सत्यम्। तथाप्यहमेतस्मिन् पुत्रे विशिष्य आत्मवेदनामनुभवामि। यतो हि अयमन्येभ्यो दुर्बलः। सर्वेष्वपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एव। तथापि दुर्बले सुते मातुः अभ्यधिका कृपा सहजैव" इति। सुरभिवचनं श्रुत्वा भृशं विस्मितस्याखण्डलस्यापि हृदयमद्रवत्। स च तामेवमसान्त्वयत्–" गच्छ वत्से! सर्वं भद्रं जायेत।"

अचिरादेव चण्डवातेन मेघरवैश्च सह प्रवर्षः समजायत। पश्यतः एव सर्वत्र जलोपप्लवः सञ्जातः। कृषकः हर्षतिरेकेण कर्षणाविमुखः सन् वृषभौ नीत्वा गृहमगात्।

अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्रहृदया भवेत्॥

शब्दार्थाः– नूनम्– (निश्चयेन) निश्चय ही, **सहस्रम्**– (दशशतम्) हजार, **वात्सल्यम्**– (स्नेहभावः) वात्सल्य (प्रेमभाव), **अपत्यानि**– (सन्ततयः) सन्तान, **विशिष्य**– (विशेषतः) विशेषकर, **वेदनाम्**– (पीड़ाम्, दुःखम्) कष्ट को, **तुल्यवत्सला**–

Scanned by TapScanner

(समस्नेहयुता) समान रूप से प्यार करने वाली, **सुतः**– (पुत्रः / तनयः) पुत्र, **भृशम्**– (अत्यधिकम्) बहुत अधिक, **आखण्डलस्य** – (देवराजस्य इन्द्रस्य) इन्द्र का, **असान्त्वयत्**– (सान्त्वना दत्तवान्, सान्त्वना दी) दिलासा दी (समाश्वासयत्), **अचिरात्**– (शीघ्रम्) शीघ्र ही, **चण्डवातेन**– (वेगयुता वायुना) प्रचण्ड (तीव्र) हवा से, **मेघरवैः**– (मेघस्य गर्जनेन) बादलों के गर्जन से, **प्रवर्षः**– (वृष्टिः) वर्षा, **जलोपप्लवः**– (जल विपत्तिः) जलसंकट (उपप्लवः विपत्ति), **कर्षणविमुखः**– (कर्षणकर्मणा विमुखः) जोतने के काम से विमुख होकर, **वृषभौ**– (वृषौ) दोनों बैलों को, **अगात्**– (गतवान्, अगच्छत्) गया, **त्रिदशाधिपः**– (त्रिदशानाम् अधिपः – इन्द्रः) देवताओं का राजा इन्द्र, **प्रतोदेन**– (अत्यधिकेन कष्टप्रददण्डेन) कष्टदायक डण्डे से, **अभिघ्नन्तम्**– (मारयन्तम्) मारते हुए, **लाङ्गलेन**– (हलेन) हल से, **निपीडितम्**– (पीड़ितोऽभवत्) पीड़ित होते हुए।

हिन्दी में अनुवाद– "(इन्द्र ने कहा–) हे कल्याणी! अवश्य। तुम्हारे हजारों पुत्रों के रहते हुए भी इस दुर्बल पुत्र के प्रति ऐसा वात्सल्य क्यों?"– इस प्रकार इन्द्र के द्वारा पूछे जाने पर सुरभि ने उत्तर दिया– "यद्यपि मेरे हजारों पुत्र हैं परंतु मेरा प्रेम सबके प्रति एक समान है। परन्तु हे इन्द्र! जो दीन अर्थात् असहाय पुत्र है उसके प्रति तो और भी अधिक कृपा का भाव होना (स्वाभाविक ही) है।"

"मेरे बहुत से पुत्र हैं यह बात सत्य है। तो भी इस पुत्र के प्रति मैं विशेष रूप से अपनी पीड़ा का अनुभव कर रही हूँ। क्योंकि यह दूसरों की अपेक्षा दुर्बल है। सभी पुत्रों में माता की ममता एक समान ही होती है। तो भी दुर्बल पुत्र में माता का अत्यधिक प्रेम अथवा उसकी कृपा होना स्वाभाविक ही है।" सुरभि के इस वचन को सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित इन्द्र देवता का हृदय भी द्रवित हो गया और उसने सांत्वना देते हुए कहा–

"हे पुत्री! जाओ तुम्हारा सब प्रकार से कल्याण ही हो।"

शीघ्र ही प्रचंड वायु के वेग और बादलों की गर्जना के साथ वर्षा हुई। देखते-देखते सभी जगह जल ही जल हो गया। किसान अत्यधिक खुशी के कारण हल जोतने के कार्य से विमुख होकर दोनों बैलों को लेकर घर की ओर चला गया।

"सभी पुत्रों में माता का प्रेम समान होता है। असहाय पुत्र के प्रति तो वह माता और भी अधिक दयालु हृदय वाली हो जाया करती है।"

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) कृषकः किं करोति स्म?
(ख) माता सुरभिः किमर्थं अश्रूणि मुञ्चति स्म?
(ग) सुरभिः इन्द्रस्य प्रश्नस्य किमुत्तरं ददाति?
(घ) मातुः अधिका कृपा कस्मिन् भवति?
(ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुम् किं कृतवान्?
(च) जननी कीदृशी भवति?
(छ) पाठेऽस्मिन् कयोः संवाद विद्यते?

उत्तरम्–

(क) कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं करोति स्म।
(ख) माता सुरभिः भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा अश्रूणि मुञ्चति स्म।
(ग) सुरभिः उत्तरं ददाति– हे इन्द्र! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वां अहं रोदिमि।
(घ) मातुः अधिका कृपा दीने पुत्रे भवति।
(ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुम् प्रचण्ड-वर्षां कृतवान्।
(च) जननी तुल्यवत्सला भवति।
(छ) पाठेऽस्मिन् सुरभि-इन्द्रयोः संवादः विद्यते।

2. **'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां मेलनं 'ख' स्तम्भे दत्तैः समानार्थकपदैः कुरुत।** (स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तम्भ 'ख' में दिए गए समानार्थक शब्दों से संयोग कीजिए।)

'क' स्तम्भः	**'ख' स्तम्भः**
(क) कृच्छ्रेण	(*i*) वृषभः
(ख) चक्षुभ्याम्	(*ii*) वासवः
(ग) जवेन	(*iii*) नेत्राभ्याम्
(घ) इन्द्रः	(*iv*) अचिरम्
(ङ) पुत्राः	(*v*) द्रुतगत्या
(च) शीघ्रम्	(*vi*) काठिन्येन
(छ) बलीवर्दः	(*vii*) सुताः

उत्तरम्– (क) कृच्छ्रेण– (*vi*) काठिन्येन, (ख) चक्षुभ्याम्– (*iii*) नेत्राभ्याम्, (ग) जवेन– (*v*) द्रुतगत्या, (घ) इन्द्रः– (*ii*) वासवः, (ङ) पुत्राः– (*vii*) सुताः, (च) शीघ्रम्– (*iv*) अचिरम्, (छ) बलीवर्दः– (*i*) वृषभः

Scanned by TapScanner

3. **स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (स्थूल शब्दों को लेकर प्रश्न-निर्माण कीजिए।)

(क) सः **कृच्छ्रेण** भारम् उद्वहति।
(ख) **सुराधिपः** ताम् अपृच्छत्।
(ग) अयम् **अन्येभ्यो** दुर्बलः।
(घ) **धेनूनाम्** माता सुरभिः आसीत्।
(ङ) **सहस्राधिकेषु** पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्।

उत्तरम्–

(क) सः **कथं** भारम् उद्वहति?
(ख) **कः** ताम् अपृच्छत्?
(ग) अयम् **केभ्यो** दुर्बलः?
(घ) **केषाम्** माता सुरभिः आसीत्?
(ङ) **कति** पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्?

4. **रेखाङ्कितपदे यथास्थानं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत।** (रेखांकित पद में यथास्थान संधि/विच्छेद कीजिए।)

(क) कृषकः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन् + आसीत्।
(ख) तयोरेकः वृषभः दुर्बलः आसीत्।
(ग) तथापि वृषः न + उत्थितः।
(घ) सत्स्वपि बहुषु पुत्रेषु अस्मिन् वात्सल्यं कथम्?
(ङ) तथा + अपि + अहम् + एतस्मिन् स्नेहम् अनुभवामि।
(च) मे बहूनि + अपत्यानि सन्ति।
(छ) सर्वत्र जलोपप्लवः संजातः।

उत्तरम्–

(क) कृषकः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्।
(ख) तयोः + एकः वृषभः दुर्बलः आसीत्।
(ग) तथापि वृषः नोत्थितः।
(घ) सत्सु + अपि बहुषु पुत्रेषु अस्मिन् वात्सल्यं कथम्?
(ङ) तथाप्यहमेतस्मिन् स्नेहम् अनुभवामि।
(च) मे बहून्यपत्यानि सन्ति।
(छ) सर्वत्र जल + उपप्लवः संजातः।

5. **अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितसर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्।** (निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित सर्वनाम पद में क्या प्रयुक्त होगा।)

(क) सा च अवदत् भो वासव! अहम् भृशं दुःखिता अस्मि।
(ख) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहम् रोदिमि।
(ग) सः दीनः इति जानन् अपि कृषकः तं पीडयति।
(घ) मे बहूनि अपत्यानि सन्ति।
(ङ) सः च ताम् एवम् असान्त्वयत्।
(च) सहस्रेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन् प्रीतिः अस्ति।

उत्तरम्– (क) सुरभिः– इति पदस्य कृते। (ख) सुरभिः– इति पदस्य कृते। (ग) कृषकः– इति पदस्य कृते। (घ) सुरभेः– इति पदस्य कृते। (ङ) इन्द्रः– इति पदस्य कृते। (च) सुरभेः– इति पदस्य कृते।

6. **उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा प्रकृति प्रत्यय विभागं कुरुतः।** (उदाहरण अनुसार पाठ से चुनकर प्रकृति व प्रत्यय का विभाजन कीजिए।)

यथा– सुरभिवचनं **श्रुत्वा** इन्द्रः विस्मितः। (श्रु + क्त्वा)

(क) बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्।
(ख) स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातुः नेत्राभ्यां अश्रूणि आविरासन्।
(ग) सः दीनः इति जानन् अपि पीडयति।
(घ) धुरं वोढुं सः न शक्नोति।
(ङ) विशिष्य आत्मवेदनानुभवामि।
(च) वृषभो नीत्वा गृहमगात्।

उत्तरम्– (क) कुर्वन् – कृ + शतृ। (ख) दृष्ट्वा – दृश् + क्त्वा। (ग) जानन् – कृ + शतृ। (घ) वोढुम् – वह् + तुमुन्। (ङ) विशिष्य – वि + शिष् + ल्यप्। (च) नीत्वा – नी + क्त्वा।

7. **'क' स्तम्भे विशेषणपदं लिखितम्, 'ख' स्तम्भे पुनः विशेष्यपदम्। तयोः मेलनं कुरुत।** ('क' स्तंभ में विशेषण पद और 'ख' स्तंभ में विशेष्य पद लिखे गए हैं। उनका मिलान कीजिए।)

'क' स्तम्भः

(क) कश्चित्
(ख) दुर्बलम्
(ग) क्रुद्धः
(घ) सहस्राधिकेषु
(ङ) अभ्यधिका
(च) विस्मितः
(छ) तुल्यवत्सला

'ख' स्तम्भः

(*i*) वृषभम्
(*ii*) कृपा
(*iii*) कृषीवलः
(*iv*) आखण्डलः
(*v*) जननी
(*vi*) पुत्रेषु
(*vii*) कृषकः

Scanned by TapScanner

उत्तरम्– (क) कश्चित्– (*vii*) कृषकः, (ख) दुर्बलम्– (*i*) वृषभम्, (ग) क्रुद्धः– (*iii*) कृषीवलः, (घ) सहस्राधिकेषु– (*vi*) पुत्रेषु, (ङ) अभ्यधिका– (*ii*) कृपा, (च) विस्मितः– (*iv*) आखण्डलः, (छ) तुल्यवत्सला– (*v*) जननी

योग्यताविस्तारः

प्रस्तुत पाठ्यांश महाभारत से उद्धृत है, जिसमें मुख्यतः व्यास द्वारा धृतराष्ट्र को एक कथा के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि तुम पिता हो और एक पिता होने के नाते अपने पुत्रों के साथ-साथ अपने भतीजों के हित का ख्याल रखना भी उचित है। इस प्रसंग में गाय के मातृत्व की चर्चा करते हुए गोमाता सुरभि और इन्द्र के संवाद के माध्यम से यह बताया गया है कि माता के लिए सभी सन्तान बराबर होती हैं। उसके हृदय में सबके लिए समान स्नेह होता है। इस कथा का आधार महाभारत, वनपर्व, दशम अध्याय, श्लोक संख्या 8 से श्लोक संख्या 16 तक है। महाभारत के विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है,

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

अर्थात्– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ-चतुष्टय के बारे में जो बातें यहाँ हैं वे तो अन्यत्र मिल सकती हैं, पर जो कुछ यहाँ नहीं है, वह अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

उपरोक्त पाठ में मानवीय मूल्यों की पराकाष्ठा दिखाई गई है। यद्यपि माता के हृदय में अपनी सभी सन्ततियों के प्रति समान प्रेम होता है, पर जो कमज़ोर सन्तान होती है उसके प्रति उसके मन में अतिशय प्रेम होता है।

मातृमहत्त्वविषयक श्लोक–

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रिया॥ **–वेदव्यास**

उपाध्यायान्दशाचार्य, आचार्येभ्यः शतं पिता।
सहस्रं तु पितॄन् माता, गौरवेणातिरिच्यते॥ **–मनुस्मृति**

माता गुरुतरा भूमेः, खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात्, चिन्ता बहुतरी तृणात्॥ **–महाभारत**

निरतिशयं गरिमाणं तेन जनन्याः स्मरन्ति विद्वांसः।
यत् कमपि वहति गर्भे महतामपि स गुरुर्भवति॥

भारतीय संस्कृति में गौ का महत्त्व अनादिकाल से रहा है। हमारे यहाँ सभी इच्छित वस्तुओं को देने की क्षमता गाय में है, इस बात को कामधेनु की संकल्पना से समझा जा सकता है। कामधेनु के बारे में यह माना जाता है कि उनके सामने जो भी इच्छा व्यक्त की जाती है वह तत्काल फलवती हो जाती है।

काले फलं यल्लभते मनुष्यो
न कामधेनोश्च समं द्विजेभ्यः॥

कन्यास्थानां करिवाजियुक्तैः
शतैः सहस्रैः सततं द्विजेभ्यः॥

दत्तैः फलं यल्लभते मनुष्यः
समं तथा स्यान्नतु कामधेनोः॥

गाय के महत्त्व के संदर्भ में महाकवि कालिदास के रघुवंश में, सन्तान प्राप्ति की कामना से राजा दिलीप द्वारा ऋषि वशिष्ठ की कामधेनु नन्दिनी की सेवा और उनकी प्रसन्नता से प्रतापी पुत्र प्राप्त करने की कथा भी काफ़ी प्रसिद्ध है। आज भी गाय की उपयोगिता प्रायः सर्वस्वीकृत ही है।

एकत्र पृथ्वी सर्वा, सशैलवनकानना।
तस्याः गौर्ज्यायसी, साक्षादेकत्रोभयतोमुखी॥

गावो भूतं च भव्यं च, गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथाभूतं, गोषु दत्तं न नश्यति॥

Scanned by TapScanner

षष्ठः पाठः

सुभाषितानि

पाठ परिचय–संस्कृत कृतियों के जिन पद्यों या पद्यांशों में शाश्वत सत्य को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, उन पद्यों को सुभाषित कहते हैं। प्रस्तुत पाठ ऐसे 10 सुभाषितों का संग्रह है। ये संस्कृत के विभिन्न ग्रंथों से समाकलित हैं। इनमें परिश्रम का माहत्म्य, क्रोध का दुष्प्रभाव, सभी वस्तुओं की उपादेयता और बुद्धि की वैशिष्ट्य आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। निश्चित रूप से ये सुभाषित हमारे लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥

अन्वयः–मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः आलस्यम्। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।

शब्दार्थः– **शरीरस्थः**–देहस्थः, कायस्थः (शरीर में स्थित)। **रिपुः**–शत्रुः, अरिः (शत्रु)। **उद्यमसमः**– परिश्रमसमः (परिश्रम के समान)। **अवसीदति**–दुःखयति (दुःखी होता है)।

व्याख्या–आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला महान् शत्रु है। परिश्रम के समान कोई भी बन्धु (भाई, सखा) नहीं है, जिसे (परिश्रम को) करके व्यक्ति दुःखी नहीं होता है।

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥2॥

अन्वयः–गुणी गुणं वेत्ति, निर्गुणः (गुणं) न वेत्ति, बली बलं वेत्ति, निर्बलः (बलं) न वेत्ति, वसन्तस्य गुणं पिकः (वेत्ति), वायसः न (वेत्ति), सिंहस्य बलं करी (वेत्ति), मूषकः न।

शब्दार्थः– **वेत्ति**–जानाति (जानता है)। **निर्गुणः**–गुणहीनः (गुणहीन)। **पिकः**–कोकिलः (कोयल)। **वायसः**–काकः (कौआ। **करी**–गजः (हाथी)।

व्याख्या–गुणवान् (ही) गुण को जानता है, गुणहीन व्यक्ति (गुण को) नहीं जानता है। बलवान् (ही) बल को जानता है, अशक्त (बल को) नहीं जानता है। वसन्तु ऋतु के गुण कोयल जानती है, कौआ नहीं। शेर के बल को हाथी जानता है, चूहा नहीं।

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति,
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ।
अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै,
कथं जनस्तं परितोषयिष्यति ॥3॥

अन्वयः–यः निमित्तम् उद्दिश्य प्रकुप्यति सः तस्य अपगमे ध्रुवं प्रसीदति यस्य मनः अकारणद्वेषि (अस्ति) तं जनः कथं परितोषयिष्यति।

शब्दार्थः– **निमित्तम्**–कारणम् (कारण)। **प्रकुप्यति**–अति कुप्यति (अधिक क्रोध करता है)। **ध्रुवम्**–निश्चितम् (निश्चित रूप से)। **अपगमे**–समाप्ते (समाप्त होने पर)। **अकारणद्वेषि मनः**–अकारणद्वेषिचितः (अकारण द्वेषकारी मन वाला)। **परितोषयतिष्यति**–परिनन्दयिष्यति (सन्तुष्ट करेगा)।

व्याख्या–जो कारण को लक्ष्य करके (जानकर/देखकर) क्रोधित होता है, वह उस (कारण) के हट जाने पर निश्चय ही प्रसन्न हो जाता है। जिसका मन अकारण द्वेष करता है, उसे व्यक्ति कैसे प्रसन्न करेगा?

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितोजनः,
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥4॥

अन्वयः–पशुना अपि उदीरितः अर्थः गुह्यते, हयाः नागाः च बोधिताः (भारं) वहन्ति, पण्डितः जनः अनुक्तम् अपि ऊहति

Scanned by TapScanner

बुद्धयः परेङ्गितज्ञानफलाः भवन्ति।

शब्दार्थः– उदीरितः–उक्तः, कथितः (कहा हुआ)। **गृह्यते**–प्राप्यते (पाया जाता है)। **हयाः**–अश्वाः, तुरगाः (घोड़े)। **नागाः**–हस्तिनः, गजाः (हाथी (अनेक))। **वहन्ति**–नयन्ति (वहन करते (ढोते) हैं)। **ऊहति**–निर्धारयति (अनुमान लगाता है)। **इङ्गितज्ञानफलाः**–(संकेत युक्त ज्ञानरूपी फल वाले)।

व्याख्या–बताया गया विषय (निर्देश) पशु के द्वारा भी ग्रहण कर लिया जाता है। घोड़े और हाथी बोधित होकर भार ढोते हैं। विद्वान् व्यक्ति न कहे गए विषय का भी अनुमान कर लेता है। बुद्धियाँ दूसरों के द्वारा किए गए संकेत से उत्पन्न ज्ञान रूपी फल को पा लेती हैं अर्थात् दूसरों के संकेतों से ही गूढ विषय को जान लेती हैं।

क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,
देहस्थितो देहविनाशनाय ।
यथास्थितः काष्ठगतो हि वह्निः,
स एव वह्निर्दहते शरीरम् ॥5॥

अन्वयः–नराणां देहविनाशाय प्रथमः शत्रुः देहस्थितः क्रोधः। यथा काष्ठगतः स्थिः वह्निः काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्थः क्रोधः) शरीरं दहते।

शब्दार्थः– देहस्थितः–कायस्थ, देहस्थः (शरीर में स्थित)। **काष्ठगतः**–दारुगतः (लकड़ी में स्थित)। **वह्निः**–पावकः, अग्निः (अग्नि)। **दहते**–ज्वालयति (जलाता है)।

व्याख्या–लोगों के शरीर के सर्वनाश के लिए प्रथम शत्रु देह में स्थित क्रोध है। जैसे काष्ठ (लकड़ी) में स्थित (लगी हुई) आग लकड़ी को ही जलाती है उसी प्रकार (शरीर में स्थित क्रोध) शरीर को जलाता है।

मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति,
गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः।
मूर्खाश्चमूर्खैःसुधियःसुधीभिः,
समान-शील-व्यसनेषु सख्यम् ॥6॥

अन्वयः–मृगाः मृगैः सह, गावश्च गोभिः सह, तुरगाः तुरङ्गैः सह, मुर्खाः मुर्खैः सह, सुधियः, सुधीभि सह अनुव्रजन्ति। सख्यम् समानशीलव्यसनेषु (भवति)।

शब्दार्थः– अनुव्रजन्ति–अनुगच्छन्ति (पीछे-पीछे चलते हैं)। **गावः**–धेनवः (गायें)। **तुरगाः**–अश्वाः, हयाः (घोड़े)। **सुधियः**–विद्वांसः (विद्वान्)। **शीलम्**–आचरणम्, चरित्रम् (आचरण, चरित्र)। **व्यसनेषु**–स्वभावे (स्वभाव में, आदत में)।

व्याख्या–हरिण हरिणों के साथ, गायें गायों के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, मूर्ख मूर्खों के साथ और विद्वान् विद्वानों के साथ ही रहा करते हैं। मित्रता समान आचरण व समान स्वभाव (आदत) वालों में ही होती है।

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः ।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते ॥7॥

अन्वयः–फलच्छाया-समन्वितः महावृक्षः सेवितव्यः। दैवात् यदि फलं नास्ति (वृक्षस्य) छाया केन नियार्यते।

शब्दार्थः– सेवितव्यः–आश्रयितव्यः (आश्रय लेना चाहिए)। **समन्वितः**–युक्त (युक्त)। **दैवात्**–भाग्यात् (भाग्य से)। **निवार्यते**–अपवार्यते, बाध्यते (रोका जाता है)।

व्याख्या–फल और छाया से युक्त विशाल वृक्ष का ही आश्रय लेना चाहिए। भाग्य (दुर्भाग्य) से यदि (वृक्ष पर) फल नहीं हैं, तो (भी) छाया (भला) किससे रोकी जा सकती है अर्थात् छाया तो आसानी से मिल जाती है।

अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः ॥8॥

अन्वयः–अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, अनौषधम् मूलं नास्ति, अयोग्यः पुरुषः नास्ति, तत्र योजकः दुर्लभः।

शब्दार्थः– अमन्त्रम्–मन्त्रहीनम् (मन्त्र रहित)। **मूलम्**–जडम् (मूल)। **दुर्लभः**–दुष्प्राप्यः (दुर्लभ)।

व्याख्या–मन्त्र रहित (अक्षर वास्तव में) अक्षर नहीं है। औषध रहित (जड़ वास्तव में) जड़ नहीं है। अयोग्य (पुरुष वास्तव में) पुरुष नहीं है। वहाँ (उनमें) योजक दुर्लभ होता है।

Scanned by TapScanner

संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ॥9॥

अन्वयः–महताम् संपत्तौ च एकरूपता भवति।

यथा–सविता उदये रक्तः भवति, तथा अस्तमये च रक्तः भवति।

शब्दार्थः– महताम्–महात्मनाम् (महात्माओं का)। **सविता**–सूर्यः, रविः (सूर्य)। **रक्तः**–लोहितः, शोणः (लाल)।

व्याख्या–सम्पत्ति और विपत्ति में महापुरुष एकरूप (एकरस) ही रहते हैं। जैसे सूर्य उदय के समय भी लाल होता है तथा अस्त के समय भी लाल ही होता है।

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम् ।
अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ॥10॥

अन्वयः–विचित्रे संसारे खलु किञ्चित् निरर्थकं नास्ति। अश्वः चेत् धावने वीरः, (तर्हि) भारस्य वहने खरः (वीरः) अस्ति।

शब्दार्थः– निरर्थकम्–वृथा, व्यर्थम् (व्यर्थ)। **खरः**–गर्दभः (गधा)।

व्याख्या–इस विचित्र (अद्भुत) संसार में कुछ भी व्यर्थ नहीं है। घोड़ा यदि दौड़ने में वीर (श्रेष्ठ) है तो गधा भार ढोने में (वीर/श्रेष्ठ) है।

श्लोकानाम् अन्वयः–

1. मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः आलस्यम्। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।
2. गुणी गुणं वेत्ति, निर्गुणः (गुणं) न वेत्ति, बली बलं वेत्ति, निर्बलः (बलं) न वेत्ति, वसन्तस्यगुणं पिकः (वेत्ति), वायसः न (वेत्ति), सिंहस्य बलं करी (वेत्ति), मूषकः न।
3. यः निमित्तम् उद्दिश्य प्रकुप्यति सः तस्य अपगमे ध्रुवं प्रसीदति यस्य मनः अकारणद्वेषि (अस्ति) तं जनः कथं परितोषयिष्यति।
4. पशुना अपि उदीरितः अर्थः गृह्यते, हयाः नागाः च बोधिताः (भारं) वहन्ति, पण्डितः जनःअनुक्तम् अपि ऊहति बुद्धयः परेंग्तिज्ञानफलाः भवन्ति।
5. नराणां देहविनाशनाय प्रथमः शत्रुः देहस्थितः क्रोधः। यथा काष्ठगतः स्थितः वह्निः काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्थः क्रोधः) शरीरं दहते ।
6. मृगाः मृगैः सह, गावश्च गोभिः सह, तुरगाः तुरगैः सह, मूर्खाः मूर्खैः सह, सुधियः सुधीभिः सह अनुव्रजन्ति। सख्यम् समानशीलव्यसनेषु (भवति)।
7. फलच्छाया समन्वितः महावृक्षः सेवितव्यः। दैवात् यदि फलं नास्ति (वृक्षस्य) छाया केन निवार्यते।
8. अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, अनौषधम् मूलं नास्ति, अयोग्यः पुरुषः नास्ति, तत्र योजकः दुर्लभः।
9. महताम् संपत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति।
   यथा– सविता उदये रक्तः भवति, तथा अस्तमये च रक्तः भवति।
10. विचित्रे संसारे खलु किञ्चित् निरर्थकं नास्ति। अश्वः चेत् धावने वीरः, (तर्हि) भारस्य वहने खरः (वीरः) अस्ति।

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

शरीरस्थो महान्	– शरीरस्थः + महान्।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः	– न + अस्ति + उद्यमसमः + बन्धुः।
नावसीदति	– न + अवसीदति।
निर्गुणोबली	– निः + गुणः + बली।
निर्बलः	– निः + बलः।
पिको वसन्तस्य	– पिकः + वसन्तस्य।
तस्यापगमे	– तस्य + अपगमे।
मनस्तु	– मनः + तु।
जनस्तम्	– जनः + तम्।
उदीरितोऽर्थ	– उत् + ईरितः + अर्थः।
पशुनापि	– पशुना + अपि।
हयाश्च	– हयाः + च।
नागाश्च	– नागाः + च।
अप्यूहति	– अपि + ऊहति।
पाण्डतो जनः	– पण्डितः + जनः।
परेङ्गितफला हि	– परः + इङ्गितफलाः + हि।
क्रोधो हि	– क्रोधः + हि।
प्रथमो नराणाम्	– प्रथमः + नराणाम्।

Scanned by TapScanner

देहस्थितो
देहविनाशाय – देहस्थित: + देहविनाशाय।
काष्ठगतो हि – काष्ठगत: + हि।
वह्निर्दहते – वह्नि: + दहते।
गावश्च – गाव: + च।
तुरगास्तुरङ्गै: – तुरगा: + तुरङ्गै:।
मुर्खाश्च – मुर्खा: + च।
सेवितव्यो महावृक्ष: – सेवितव्य: + महावृक्ष:।
फलच्छाया – फल + छाया।
नास्ति – न + अस्ति।
नास्ति – न + अस्ति।
योजकस्तत्र – योजक: + तत्र।
रक्तो
रक्तश्चास्तमये – रक्त: + रक्त: + च + अस्तमये।
नास्ति – न + अस्ति।
किञ्चिन्निर्थकम – किम् + चित् + निरर्थकम् (नि: + अर्थकम्)।
अश्वश्चेद् धावने – अश्व: + चेत् + धावने।

संयोग:
निमित्तमुद्दिश्य – निमित्तम् + उद्दिश्य।
अनुक्तमपि – अन् + उक्त् + अपि।
सङ्गमनुव्रजन्ति – सङ्गम् + अनुव्रजन्ति।
अमन्त्रमक्षरम् – अमन्त्रम् + अक्षरम्।
मूलमनौषधम् – मूलम् + अन् + औषधम्।
महतामेकरूपता – महताम् + एकरूपता।

अभ्यास:

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत। (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) केन सम: बन्धु: नास्ति?
(ख) वसन्तस्य गुणं क: जानाति।
(ग) बुद्धय: कीदृश्य: भवन्ति?
(घ) नराणां प्रथम: शत्रु: क:?
(ङ) सुधिय: सख्यं केन सह भवति?
(च) अस्माभि: कीदृश: वृक्ष: सेवितव्य:?

उत्तरम्–

(क) उद्यमेन सम: बन्धु: नास्ति।
(ख) वसन्तस्य गुणं पिक: जानाति।
(ग) बुद्धय: परेङ्गितज्ञानफला: भवन्ति।
(घ) नराणां प्रथम: शत्रु: देहस्थित: क्रोध: भवति:।
(ङ) सुधिय: सख्यं सुधीभि: सह भवति।
(च) अस्माभि: फलच्छाया-समन्वित: वृक्ष: सेवितव्य:।

2. अधोलिखिते अन्वयद्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत। (निम्नलिखित दो अन्वयों में रिक्त स्थान भरिये)

(क) य: ..... उद्दिश्य प्रकुप्यति तस्या ..... स: ध्रुवं प्रसीदति। यस्य मन: अकारणद्वेषि अस्ति, तं कथं .....परितोषयिष्यति?

(ख) ..... खलु संसारे ..... निरर्थकम् नास्ति। अश्व: चेत् ..... वीर:, खर: ..... (वीर:) (भवति)

उत्तरम्– (क) निमित्तम्, अपगमे, जन:, (ख) विचित्रे, किञ्चित्, धावने, भारस्य वहने।

3. अधोलिखितानां वाक्यानां कृते समानार्थकान् श्लोकांशान् पाठात् चित्वा लिखत–

(क) विद्वान् स एव भवति य: अनुक्तम् अपि तथ्यं जानाति।
(ख) मनुष्य: समस्वभावै: जनै: सह मित्रतां करोति।
(ग) परिश्रमं कुर्वाण: नर: कदापि दु:खं न प्राप्नोति।
(घ) महान्त: जना: सर्वदैव समप्रकृतय: भवन्ति।

उत्तरम्–

(क) अनुक्तमप्यूहति पण्डितोजन:, परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धय:।
(ख) समान-शील-व्यवसनेषु सख्यम्।
(ग) नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति।
(घ) संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।

4. यथानिर्देशं परिवर्तनं विधाय वाक्यानि रचयत। (यथानिर्देश परिवर्तन करके वाक्यों की रचना कीजिए।)

(क) गुणी गुणं जानाति। (बहुवचने)
(ख) पशु: उदीरितं अर्थं गृह्णाति। (कर्मवाच्ये)
(ग) मृगा: मृगै: सह अनुव्रजन्ति। (एकवचने)
(घ) क: छायां निवारयति। (कर्मवाच्ये)

उत्तरम्–

(क) गुणिन: गुणं जानन्ति।
(ख) पशुभि: उदीरित: अर्थ: गृह्यते।
(ग) मृग: मृगेण सह अनुव्रजति।
(घ) केन छाया निवार्यते?

5. (अ) सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत। (संधि/संधिच्छेद कीजिए)

(क) न + अस्ति + उद्यमसम: – .....
(ख) ..... + ... – तस्यापगमे
(ग) अनुक्तम् + अपि + ऊहति – .....
(घ) ..... + ... – गावश्च

Scanned by TapScanner

(ङ) ..... + ... – नास्ति (च) रक्तः + च + अस्तमये – .....

(छ) ..... + ... – योजकस्तत्र

(आ) समस्तपदं/विग्रहं लिखत–

(क) उद्यमसम: ..... (ख) शरीरे स्थित: .....

(ग) निर्बल: ..... (घ) देहस्य विनाशनाय .....

(ङ) महावृक्ष: ..... (च) समानं शीलं व्यसनं येषां तेषु .....

(छ) अयोग्य: .....

उत्तरम्–

(अ) (क) नास्त्युद्यमसम:, (ख) तस्य + अपगमे, (ग) अनुक्तमप्यूहति, (घ) गाव: + च, (ङ) न + अस्ति, (च) रक्तश्चास्तमये, (छ) योजक: + तत्र।

(आ) (क) उद्यमेनसमम्, (ख) शरीरस्थ:, (ग) बलेनरहितम्, (घ) देहविनाशाय, (ङ) महाश्चासौ वृक्षश्च, (च) समानशीलव्यसनेषु, (छ) न योग्य:

6. **अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत।** (निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द पाठ से चुनकर लिखिए।)

(क) प्रसीदति ..... (ख) मूर्ख: .....

(ग) बली ..... (घ) सुलभ: .....

(ङ) संपत्तौ ..... (च) अस्ते .....

(छ) सार्थकम् .....

उत्तरम्– (क) अवसीदति, (ख) सुधी, (ग) निर्बल:, (घ) दुर्लभ:, (ङ) विपत्तौ, (च) उदये, (छ) निरर्थकम्।

7. **संस्कृतेन वाक्यप्रयोगं कुरुत** (संस्कृत में वाक्य प्रयोग कीजिए)–

(क) वायस: ..... (ख) निमित्तम् .....

(ग) सूर्य: ..... (घ) पिक: .....

(ङ) वह्नि: .....

उत्तरम्–

(क) **वायस:** कृष्णवर्ण: भवति। (ख) **निमित्तम्** एव 'कारणम्' इति कथ्यते।

(ग) **सूर्य:** संसारस्य प्रकाशक:। (घ) **पिक:** मधुरं कूजति।

(ङ) **वह्नि:** कं न दहति।

परियोजनाकार्यम् (परियोजना कार्य)

(क) उद्यमस्य महत्त्वं वर्णयत: पञ्चश्लोकान् लिखत।

अथवा

कापि कथा या भवखि: पठिता स्यात् यस्यां उद्यमस्य महत्त्वं वर्णितम् तां स्वभाषया लिखत।

(ख) निमित्तमुद्दिश्य य: प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति। यदि भवता कदापि ईदृश:अनुभव: कृत: तर्हि स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तार:

1. **तत्पुरुष समास**

शरीरस्थ:	–	शरीरे स्थित:	गृहस्थ:	–	गृहे स्थित:
मनस्स्थ:	–	मनसि स्थित:	तटस्थ:	–	तटे स्थित:
कूपस्थ:	–	कूपे स्थित:	वृक्षस्थ:	–	वृक्षे स्थित:
विमानस्थ:	–	विमाने स्थित:			

2. **अव्ययीभाव समास**

निर्गुणम्	–	गुणानाम् अभाव:	निर्मक्षिकम्	–	मक्षिकाणाम् अभाव:
निर्जलम्	–	जलस्य अभाव:	निराहारम्	–	आहारस्य अभाव:

Scanned by TapScanner

3. पर्यायवाचिपदानि–

शत्रुः	– रिपुः, अरिः, वैरिः	मित्रम्	– सखा, बन्धुः, सुहृद्
वह्निः	– अग्निः, दाहकः, पावकः	सुधियः	– विद्वांसः, विज्ञाः, अभिज्ञाः
अश्वः	– तुरगः, हयः, घोटकः	गजः	– करी, हस्ती, दन्ती, नागः।
वृक्षः	– द्रुमः, तरुः, महीरुहः।	सविता	– सूर्यः, मित्रः, दिवाकरः, भास्करः।

मन्त्रः– 'मननात् त्रायते इति मन्त्रः।'

अर्थात् वे शब्द जो सोच-विचार कर बोले जाएँ। सलाह लेना, मन्त्रणा करना। मन्त्र्+अच् (किसी भी देवता को सम्बोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वैदिक मन्त्र, वेद का पाठ तीन प्रकार का है– यदि छन्दोबद्ध और उच्च स्वर से बोला जाने वाला है तो 'ऋक्' है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर में बोला जाने वाला है तो 'यजुस्' है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो 'सामन्' है (प्रार्थनापरक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो– 'ओं नमः शिवाय' आदि। पंचतंत्र में भी मंत्रणा, परामर्श, उपदेश तथा गुप्त मंत्रणा के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

Scanned by TapScanner

सप्तमः पाठः

सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

पाठ-परिचय– समाज में आज चारों ओर अपनी श्रेष्ठता और दूसरों का तिरस्कार करने की एक परम्परा-सी बन गई है। इसी कारण हम यत्र-तत्र-सर्वत्र देखते हैं कि समाज में प्रायः विघटन और भेद-भाव का वातावरण पल्लवित हो रहा है। पारस्परिक व्यवहार में दूसरे के कल्याण का सद्भाव तो विनष्ट-सा ही हो गया है। जीवन का एकमात्र लक्ष्य जिस-किसी भी तरह से स्वार्थ-सिद्धि करना बन गया है। उत्तम हो या निकृष्ट अथवा घोर निकृष्ट हर प्रकार के साधन से केवल अपने स्वार्थ को ही सिद्ध करना चाहिए– मानो यह ही मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य रह गया है। संभवतः यह पंक्तियां किसी कवि ने ऐसे ही लोगों के लिए कही हैं–

''नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैः उपायैः फलमेव साध्यम्''

प्रस्तुत पाठ में समाज में आपसी मेलजोल को बढ़ाने की दृष्टि से पशु-पक्षियों के माध्यम से बहुत ही उत्तम शिक्षा दी गई है और यह बताया गया है कि प्रकृति रूपी माता आपस में सौहार्द का सबसे सुंदर प्रतीक है। जहाँ पर प्रकृति का प्रत्येक अंग चाहे वह छोटा पक्षी हो या कोई बड़ा हिंसक प्राणी, सभी का अपने-अपने स्थान पर बड़ा महत्व है। सभी एक-दूसरे पर आश्रित हैं। पाठ में इन पशु पक्षियों का आपस में संवाद दिखाया गया है, जिसमें वह अपनी-अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करना चाह रहे हैं। अंत में प्रकृति रूपी माता उन्हें मिलजुल कर रहने का कल्याणकारी संदेश देती है।

(वनस्य दृश्यम्, समीपे एवैका नदी अपि वहति।) एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षामारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

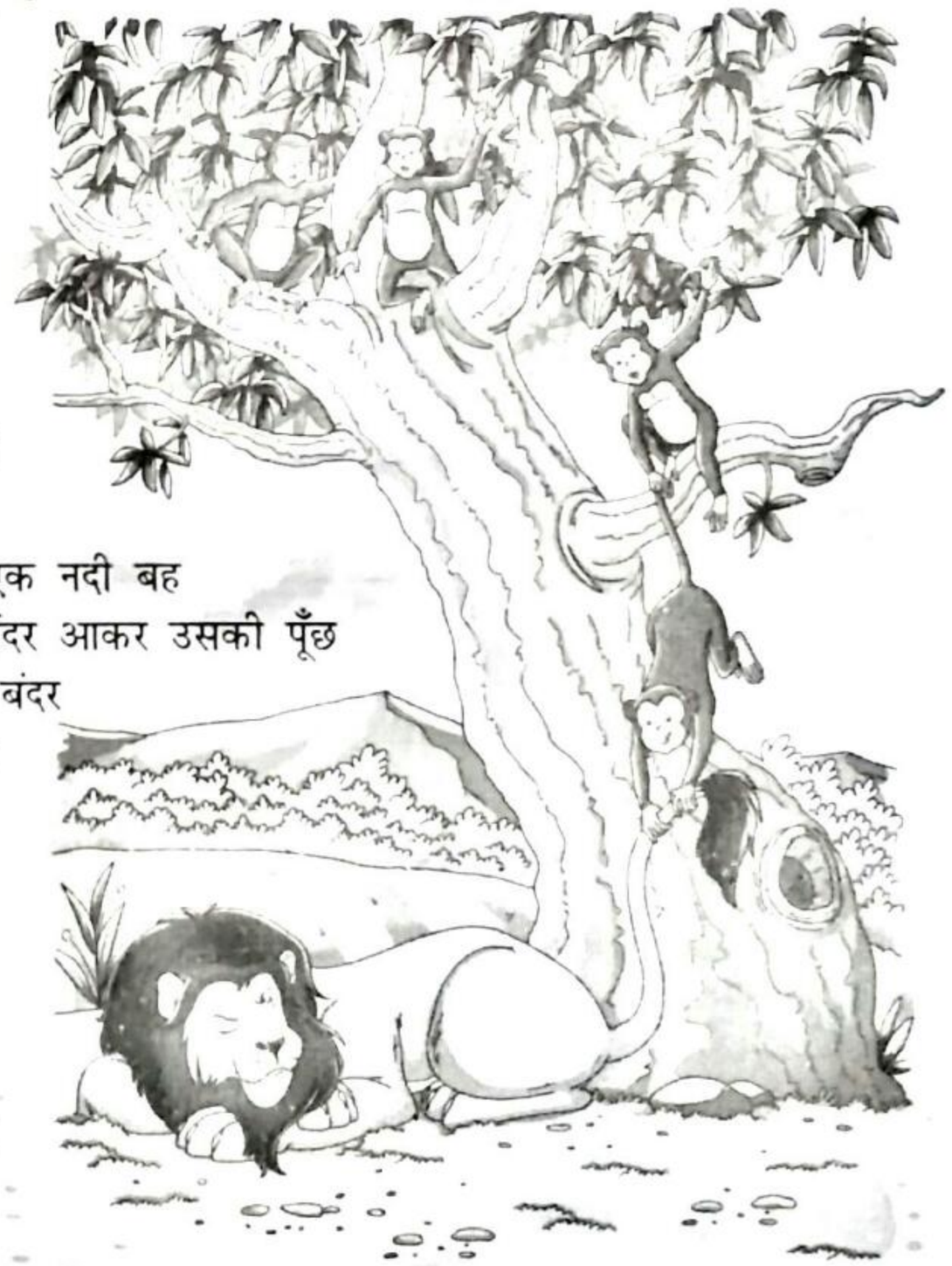

शब्दार्थाः– **धुनोति**– (धु-गृहीत्वा आन्दोलयति) पकड़ कर घुमा देता है, **कर्णमाकृष्य**– (श्रोत्रं कर्षयित्वा, कर्णम् + आकृष्य) कान खींच कर, **तुदन्ति**– (अवसादयन्ति) तंग करते हैं, **कलरवम्**– (पक्षिणां कूजनम्) चहचहाहट।

हिन्दी में अनुवाद– (यह वन का दृश्य है, समीप में ही एक नदी बह रही है) एक शेर सुखपूर्वक विश्राम कर रहा है, तभी एक बंदर आकर उसकी पूँछ को हिलाता है। क्रोधित हुआ शेर उसे मार देना चाहता है परंतु बंदर कूदकर वृक्ष पर चढ़ गया। तभी दूसरे वृक्ष से एक दूसरा बंदर शेर के कान को खींचकर फिर वृक्ष के ऊपर चढ़ जाता है। इस प्रकार बंदर बार-बार शेर को तंग करते हैं। क्रोधित हुआ शेर इधर-उधर दौड़ता है, गरजता है, परंतु कुछ भी करने में वह असमर्थ रहता है। बंदर हँसते हैं और वृक्ष के ऊपर अनेक प्रकार के पक्षी भी शेर की ऐसी दशा को देखकर प्रसन्नतापूर्वक चहचहाते हैं।

निद्राभङ्गदुःखेन वनराजः सन्नपि तुच्छजीवैः आत्मनः एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजन्तून् दृष्ट्वा पृच्छति–

सिंहः – (क्रोधेन गर्जन्) भोः! अहं वनराजः किं भयं न जायते? किमर्थं मामेवं तुदन्ति सर्वे मिलित्वा?

एकः वानरः – यतः त्वं वनराजः भवितुं तु सर्वथाऽयोग्यः। राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः। अपि च स्वरक्षायामपि समर्थः नासि तर्हि कथमस्मान् रक्षिष्यसि?

Scanned by TapScanner

अन्यः वानरः – किं न श्रुतां त्वयां पञ्चतन्त्रोक्तिः–

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः।

(अन्वयः– *यः पार्थिवरूपेण सदा परैः पीड्यमानान् वित्रस्तान् जन्तून् न रक्षति स कृतान्तः न संशयः।।*)

काकः – आम् सत्यं कथितं त्वया– वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः।

पिकः – *(उपहसन्)* कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि। न रूपं न ध्वनिरस्ति। कृष्णवर्णं,
मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम्?

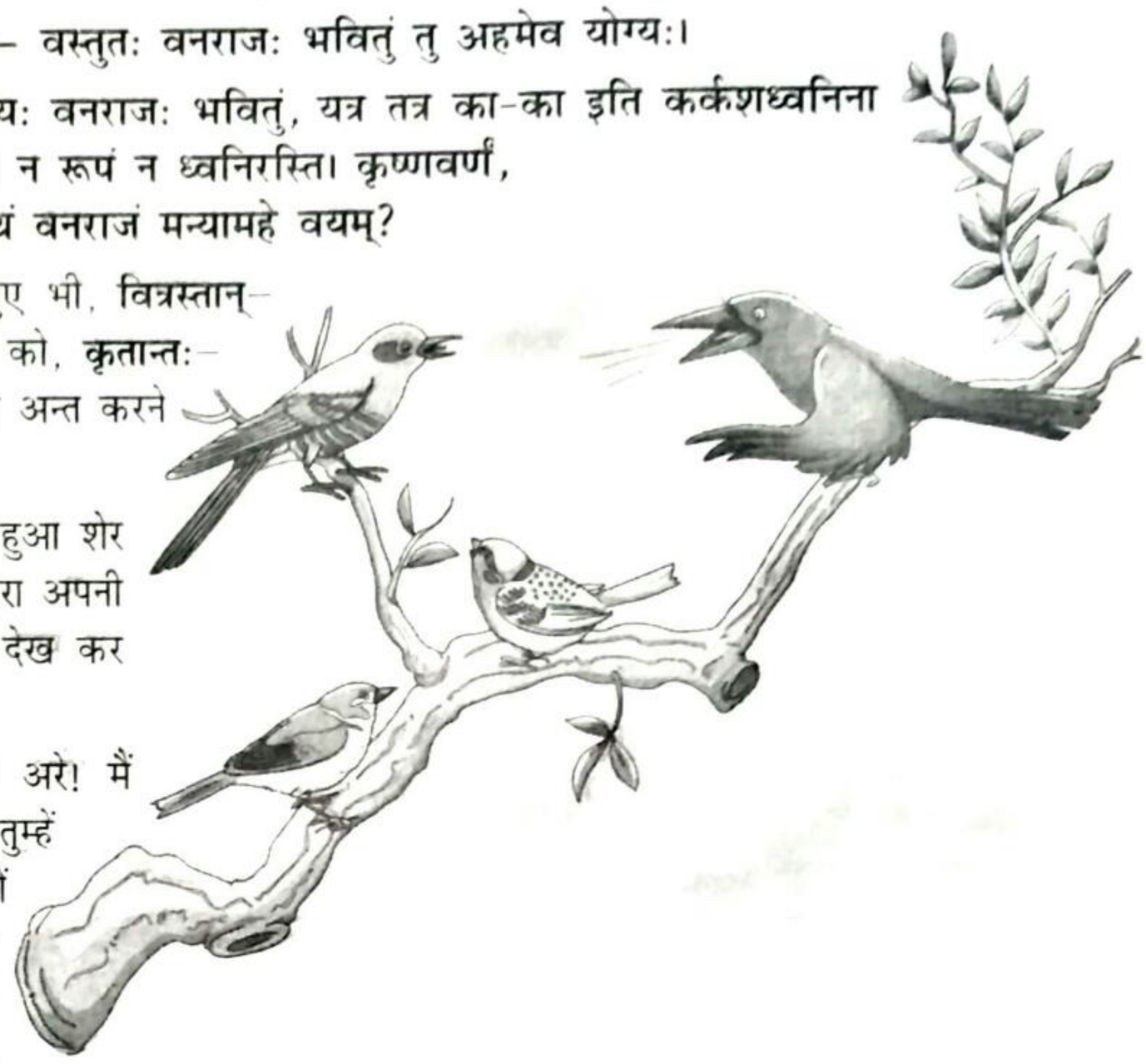

शब्दार्थाः– सन्नपि– (सन् + अपि) होते हुए भी, **वित्रस्तान्**– (विशेषेण भीतान्) विशेष रूप से डरे हुओं को, **कृतान्तः**– (यमराजः) मृत्यु का देवता-यमराज, जीवन का अन्त करने वाले।

हिन्दी-अनुवाद– नींद के टूट जाने से दुखी हुआ शेर वन का राजा होते हुए भी तुच्छ प्राणियों के द्वारा अपनी ऐसी दुर्दशा से थका हुआ सभी प्राणियों को देख कर पूछता है–

शेर – (क्रोधपूर्वक गरजते हुए) अरे! मैं तो वन का राजा हूँ, क्या तुम्हें भय नहीं लगता है? क्यों मुझे इस प्रकार से सभी मिलकर दुखी कर रहे हो?

एक वानर – क्योंकि तुम वन के राजा होने के किसी भी तरह से योग्य नहीं हो। राजा तो रक्षक होता है परंतु आप तो भक्षक हैं। और तो क्या, तुम तो अपनी रक्षा करने में भी समर्थ नहीं हो फिर हमारी रक्षा कैसे करोगे?

दूसरा वानर – क्या तुमने पंचतंत्र की यह उक्ति नहीं सुनी है–
जो प्राणी राजा के रूप में सदैव दूसरों के द्वारा सताए गए तथा विशेष रूप से भयभीत प्राणियों की रक्षा नहीं करता है ऐसा प्राणी राजा के रूप में साक्षात् यमराज ही है इसमें कोई संशय नहीं।

कौआ – हाँ, यह तो बिल्कुल सच कहा है। वास्तव में वनराज होने के लिए तो मैं ही योग्य हूँ।

कोयल – *(उपहास करते हुए)* तुम वन के राजा होने के लिए कैसे योग्य हो? जहाँ-तहाँ काँय-काँय की कठोर ध्वनि से सारे वातावरण को व्याकुल ही करते हो। न तुम्हारा रूप है, न आवाज। काले रंग वाले तथा पवित्र-अपवित्र सभी कुछ खा लेने वाले तुझ को हम किस प्रकार वन का राजा मानें?

काकः – **अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः?**
अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते
उदाहरणस्वरूपा– 'अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्'– इति प्रकारेण।
अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम् अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते।

पिकः – अलम् अलम् अतिविकत्थनेन। किं विस्मर्यते यत–

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

काकः – रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि **कुत्र स्युः पिकाः?**
अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।

शब्दार्थाः– **अनृतम्**– (न ऋतम्, अलीकम्) असत्य, **अतिविकत्थनम्**– (आत्मश्लाघा) डींगें मारना।

Scanned by TapScanner

हिन्दी-अनुवाद–

कौआ – अरे! अरे! क्या बकवास कर रहे हो? यदि मेरा काला रंग है तो क्या तू गोरे रंग का है? और भी, क्या तुम्हें याद है कि मेरी सत्यप्रियता लोगों के लिए उदाहरण रूप है– 'झूठ बोले तो कौवा काटे' इस प्रकार से। हमारा परिश्रम और एकता तो विश्व प्रसिद्ध है। और कौए जैसी चेष्टा करने वाला विद्यार्थी ही आदर्श छात्र माना जाता है।

कोयल – बस करो, बस करो, बहुत अधिक अपनी प्रशंसा मत करो। क्या भूल गए हो–
कौआ काला होता है, कोयल भी काला होता है– कौयल और कौए में रंग की दृष्टि से कोई भेद नहीं है परंतु वसंत का समय आने पर (अपने कटु या मधुर स्वर के कारण) कौआ कौआ रह जाता है और कोयल कोयल।

कौआ – अरे! दूसरों के आश्रय पर जीने वाले (कोयल)! मैं यदि तुम्हारी संतान की पालना न करूँ तो कोयल कहाँ से आएगा। इसीलिए मैं सबसे बड़ा करुणावान् और पक्षियों का राजा कौआ हूँ।

गजः – (समीपतः एवागच्छन्) अरे! अरे! सर्वां वार्तां शृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च। सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि। वन्यपशून् तु तुदन्तं जन्तुमहं स्वशुण्डेन पोथयित्वा मारयिष्यामि। किमन्यः कोऽप्यस्ति एतादृशः पराक्रमी। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

वानरः – अरे! अरे! एवं वा (शीघ्रमेव गजस्यापि पुच्छं विधूय वृक्षोपरि आरोहति।)

(गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोडयितुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा अन्यं वृक्षमतारोहति। एवं गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंहः अपि हसति वदति च।)

सिंहः – भोः गज! मामप्येवमेवातुदन् एते वानराः।

वानरः – एतस्मादेव तु कथयामि यदहमेव योग्यः वानराजपदाय येन विशालकायं पराक्रमिणं, भयंकरं चापि सिंहं गजं वा पराजेतुं समर्था अस्माकं जातिः। अतः वन्यजन्तूनां रक्षायै वयमेव क्षमाः।

शब्दार्थाः– शृण्वन्नेवाहम्– (शृण्वन् + एव + अहम्– आकर्णयन्) सुनते हुए ही मैं, **पोथयित्वा**– (पीडयित्वा हनिष्यामि) पटक-पटक कर मार डालूँगा, **मारयिष्यामि**– (हनिष्यामि) मार डालूँगा, **विधूय**– (आकर्ष्य) खींच कर, **आलोडयितुम्**– हिलाना चाहता है, **पराजेतुम्**– हराने के लिए।

हिन्दी-अनुवाद–

हाथी – (पास में आते हुए) अरे! अरे! संपूर्ण बातचीत को सुनते हुए ही मैं यहाँ आया हूँ। मैं विशाल शरीर वाला, बलशाली और पराक्रम वाला हूँ। शेर हो या कोई दूसरा प्राणी, वन में रहने वाले पशुओं को तंग करने वालों को तो मैं अपनी सूँड से पटक-पटक कर मार दूँगा। है कोई दूसरा इतना पराक्रमी। इसीलिए मैं ही वन का राजा होने के लिए योग्य हूँ।

बंदर – अरे! अरे! ऐसे ही। (और जल्दी से हाथी की पूँछ खींचकर वृक्ष के ऊपर चढ़ जाता है।)

(हाथी उस वृक्ष को ही अपनी सूँड से हिलाना चाहता है, परंतु बंदर तो कूदकर दूसरे वृक्ष पर चढ़ जाता है। इस प्रकार बंदर को एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर दौड़ते हुए देखकर शेर भी हंस पड़ता है और कहता है– अरे हाथी! मुझे भी इसी तरह से ये बंदर तंग कर रहे थे।)

बंदर – इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि मैं ही वन का राजा होने के लिए योग्य हूँ, क्योंकि बड़े से बड़े शरीर वाले, पराक्रमी और भयंकर शेर या हाथी को भी पराजित करने में यह हमारी वानर जाति समर्थ है। इसीलिए वन में रहने वाले प्राणियों की रक्षा करने के लिए हम ही समर्थ हैं।

(एतत्सर्वं श्रुत्वा नदीमध्यः एकः बकः)

बकः – अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदमलंकुर्वाणैः जन्तुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

Scanned by TapScanner

मयूरः – *(वृक्षोपरितः– साट्टहासपूर्वकम्)* **विरम विरम आत्मश्लाघायाः किं न जानासि यत्–**

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव॥

को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।

वानरः – *(सगर्वम्)* **अतएव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः।**

शब्दार्थाः– **चिन्तयिष्यामि**– (विचारयिष्यामि) विचार करूँगा, **विप्लवेतेह**– (विप्लवेत + इह– इह निमज्जेत् / विशीर्येत) डूब जाती है, **जलधौ**– (सागरे) समुद्र में, **नौरिव**– (नौः + इव – नौकायाः समानम्) नौका के समान, **अधिगृह्य**– (गृहीत्वा) पकड़ कर, **आत्मश्लाघा**– (आत्मप्रशंसा) अपनी प्रशंसा, **तत्पराः**– (संलग्नाः) तैयार, संलग्न।

हिन्दी-अनुवाद–

(यह सब सुनकर नदी के बीच से ही एक बगुला)

बगुला – अरे! अरे! मुझे छोड़कर कोई दूसरा वन का राजा कैसे हो सकता है? मैं ही तो शीतल जल में बहुत समय तक एकाग्र होकर, ध्यान मग्न होकर, स्थित प्रज्ञ के समान ठहर कर सभी की रक्षा के उपायों का चिंतन करूंगा और योजना बनाकर अपनी सभा में अनेक पदों को सुशोभित करने वाले प्राणियों के साथ मिलकर रक्षा के उपायों को क्रियान्वित करवाऊँगा। इसीलिए मैं ही वन का राजा होने के लिए योग्य हूँ।

मोर – *(वृक्ष के ऊपर से ही ठहाके के साथ हँसकर)* बस करो! बस करो! अपनी प्रशंसा से बस करो। क्या नहीं जानते हो कि–

यदि अच्छा नेता राजा न बने तो प्रजा बिना किनारों वाली नौका की तरह समुद्र में डूब जाया करती है।

तुम्हारे ध्यान की अवस्था को कौन नहीं जानता, स्थितप्रज्ञ होने के बहाने से बेचारी मछलियों को छल से पकड़कर बड़ी क्रूरता से खा जाते हो। धिक्कार है तुम्हें, तुम्हारे कारण से ही तो सभी पक्षी समूह अपमानित होते हैं।

बंदर – *(बड़े गर्व के साथ)* इसीलिए तो कहता हूँ कि वनराज के पद को सुशोभित करने के योग्य मैं ही हूँ। सभी वन्य प्राणी मेरे राज्याभिषेक के लिए तैयार हो जाएँ।

मयूरः – **अरे वानर! तूष्णीं भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः अतः वने निवसन्तं माम् वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथाकर्तुं क्षमः।**

काकः – *(सव्यङ्ग्यम्)* **अरे अहिभुक्! नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।**

मयूरः – **यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! पश्य! मम पिच्छानामपूर्वं सौंदर्यम्** *(पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्)* **न कोऽपि त्रैलोक्य मत्सदृशः सुन्दरः। वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।**

शब्दार्थाः– **शिरसि**– (मस्तके) सिर पर, **अहिभुक्**– (मयूर) साँप को खाने वाला, मोर, **विधात्रा**– (भगवता) विधाता ने।

हिन्दी-अनुवाद–

मोर – अरे बंदर! चुप हो जा। तू किस प्रकार से वनराज के पद के योग्य है? देखो देखो, मेरे सिर पर राजमुकुट की तरह इस शिखा को स्थापित करते हुए स्वयं विधाता ने ही मुझे पक्षीराज बना दिया है। इसीलिए वन में रहते हुए मुझे वन के राजा के रूप में देखने के लिए तैयार हो जाओ। अब कोई भी दूसरा विधाता के निर्णय को विपरीत करने में समर्थ नहीं है।

कौआ – *(व्यंग्य के साथ)* अरे सांपों को खाने वाले मोर! नृत्य को छोड़कर तुम्हारी कोई विशेषता है कि तुमको वनराज के पद के योग्य हम मान लें।

मोर – क्योंकि मेरा नृत्य तो प्रकृति की आराधना है। देखो देखो, मेरी पूँछ का अपूर्व सौंदर्य। (पंखों को ऊपर उठा कर नृत्य की मुद्रा में खड़े होते हुए) तीनों लोकों में भी कोई मेरे समान सुंदर नहीं है। वन्य प्राणियों के ऊपर

Scanned by TapScanner

आक्रमण करने वाले को तो मैं अपने सौंदर्य से और नृत्य से ही आकर्षित करके जंगल से बाहर कर दूँगा। इसीलिए मैं ही वनराज के पद को पाने के लिए योग्य हूँ।

(एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एतं विवादंशृणुतः वदतः च)

व्याघ्रचित्रकौ – **अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते?**
एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ। यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या।

सिंह – **तूष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्शः प्रचलति।**

बकः – **सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुतः एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।**

सर्वे पक्षिणः – *(उच्चैः)* आम् आम्– कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति।

(परं कश्चिदपि खगः आत्मानं विना नान्यं कमपि अस्मै पदाय योग्यं चिन्तयन्ति तर्हि कथं निर्णयः भवेत् तदा तैः सर्वैः गहननिद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उलूकं वीक्ष्य विचारितम् यदेषः आत्मश्लाघाहीनः पदनिर्लिप्तः उलूको एवास्माकं राजा भविष्यति। परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसम्बन्धिनः सम्भाराः इति।)

सर्वे पक्षिणः सन्ध्यायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव–

काकः – *(अट्टाहसपूर्णेन-स्वरेण)*– **सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर– हंस– कोकिल– चक्रवाक– शुक–सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जाः। पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाणः एषः कथमस्मान् रक्षिष्यति। वस्तुतस्तु–**

स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति॥

शब्दार्थाः– संशीतिलेशस्य– (सन्देहमात्रस्य) ज़रा से भी सन्देह की, **अवकाशः**– (स्थानम्) जगह, **वीक्ष्य**– (विलोक्य / दृष्ट्वा) देखकर, **सम्भाराः**– (सामग्र्यः) सामग्रियाँ, **करालवक्त्रस्य**– (भयंकरमुखस्य) भयंकर मुख वाले का।

हिन्दी-अनुवाद–

(इसी समय बाघ और चीता ये दोनों भी नदी के जल को पीने के लिए आते हैं, इस विवाद को सुनते हैं और कहते हैं।)

बाघ और चीता– अच्छा, राजा के पद के लिए किसी सुपात्र का चयन किया जा रहा है? इसके लिए तो हम दोनों ही योग्य हैं, जिस किसी का भी सर्वसम्मति से चुनाव कर लो।

शेर – अरे चुप हो जा। तुम दोनों भी मेरी तरह भक्षक हो रक्षक नहीं, ये वन के प्राणी भक्षक को रक्षक के पद के योग्य नहीं मानते हैं। इसीलिए तो विचार चल रहा है।

बगुला – शेर महोदय ने सर्वथा उचित बात कही। वास्तव में शेर ने बहुत समय तक शासन कर लिया, परंतु अब तो कोई पक्षी ही राजा हो, यह निश्चय किया जाना चाहिए, इसमें तो लेशमात्र भी संशय नहीं है।

सभी पक्षी – *(जोर से)* हाँ हाँ, कोई पक्षी ही राजा बनेगा।

(परंतु कोई भी पक्षी अपने बिना दूसरे को इस पद के योग्य विचार नहीं करता है, तो कैसे निर्णय हो। तब सभी ने गहन निद्रा में निश्चिंत होकर सोते हुए उल्लू को देखकर विचार किया कि जो आत्मप्रशंसा से हीन है, जिसे पद का भी कोई लोभ नहीं है– ऐसा उल्लू ही हमारा राजा होगा। सभी पक्षी आपस में आदेश करते हैं और राजा के अभिषेक संबंधी सामग्री को ले आते हैं।)

सभी पक्षी तैयारी के लिए जाना चाहते हैं तभी अचानक ही कौआ भयंकर हंसी हंसते हुए कहता है–

कौआ – यह तो बिल्कुल ही गलत है। क्योंकि मोर, हंस, कोयल, चकवा, तोता, सारस आदि मुख्य पक्षियों के विद्यमान रहते हुए यह दिन का अंधा डरावने मुख वाले उल्लू के राज्य-अभिषेक के लिए सभी तैयार हो रहे हैं। सारा दिन सोते हुए यह किस प्रकार हमारी रक्षा करेगा? वास्तव में तो–

जो स्वभाव से अत्यंत भयंकर हो, अत्यंत उग्र हो, क्रूर हो और प्रेमपूर्ण बातचीत न करता हो ऐसे इस उल्लू को राजा बनाकर कौन-सी सिद्धि होगी?

Scanned by TapScanner

उत्तरम्–

(क) सिंहः वानराभ्यां कस्याम् असमर्थ एवासीत्। (ख) गजः वन्यपशून् तुदन्तं केन पोथयित्वा मारयति।
(ग) वानरः आत्मानं कस्मै योग्यः मन्यते। (घ) मयूरस्य नृत्यं कस्याः आराधना।
(ङ) सर्वे कां प्रणमन्ति।

4. **शुद्धकथनानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धकथनानां च समक्षं ''न'' इति लिखत।** (शुद्ध कथनों के सामने 'आम्' और अशुद्ध कथनों के सामने 'न' लिखिए।)

(क) सिंहः आत्मानं तुदन्तं वानरं मारयति। (ख) का-का इति बकस्य ध्वनिः भवति।
(ग) काकपिकयोः वर्णः कृष्णः भवति। (घ) गजः लघुकायः, निर्बलः च भवति।
(ङ) मयूरः बकस्य कारणात् पक्षिकुलम् अवमानितं मन्यते। (च) अन्योन्यसहयोगेन प्राणिनाम् लाभः जायते।

उत्तरम्– (क) न, (ख) आम्, (ग) आम्, (घ) न, (ङ) आम्, (च) आम्

5. **मञ्जूषातः समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।** (मंजूषा से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें।)

स्थितप्रज्ञः, यथासमयम्, मेध्यामेध्यभक्षकः, अहिभुक्, आत्मश्लाघाहीनः, पिकः

(क) काकः ..... भवति। (ख) ..... परभृत् अपि कथ्यते।
(ग) बकः अवचलः ..... इव तिष्ठति। (घ) मयूरः ..... इति नाम्नाऽपि ज्ञायते।
(ङ) उलूकः ..... पदनिर्लिप्तः चासीत्। (च) सर्वेषामेव महत्त्वं विद्यते .....।

उत्तरम्– (क) मेध्यामेध्यभक्षकः, (ख) पिकः, (ग) स्थितप्रज्ञः, (घ) अहिभुक्, (ङ) आत्मश्लाघाहीनः, (च) यथासमयम्

6. **परिचयं पठित्वा पात्रस्य नाम लिखत।** (परिचय पढ़कर पात्र का नाम लिखिए।)

(क) अहं शुण्डेन कमपि पोथयित्वा मारयितुं समर्थः। (ख) मम सत्यप्रियता सर्वेषां कृते उदाहरणस्वरूपा।
(ग) मम पिच्छानामपूर्वं सौन्दर्यम्। (घ) अहं पराक्रमिणं भयंकरं वापि जन्तुं पराजेतुं समर्थः।
(ङ) अहं वनराजः। कथं सर्वे मिलित्वा मां तुदन्ति? (च) अहम् अगाधजलसञ्चारी अपि गर्वं न करोमि?
(छ) अहं सर्वेषां प्राणिनां जननी अस्मि। (ज) एषः तु करालवक्त्रः दिवान्धः चास्ति।

उत्तरम्– (क) गजः, (ख) काकः, (ग) मयूरः, (घ) वानर, (ङ) सिंहः, (च) रोहितः, (छ) प्रकृतिः, (ज) गजः

7. **वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत।** (वाच्य परिवर्तन करके लिखें।)

उदाहरणम्– क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति गर्जति च।
क्रुद्धेन सिंहेन इतस्ततः धाव्यते गर्ज्यते च।

(क) त्वया सत्यं कथितम्। (ख) सिंहः सर्वजन्तून् पृच्छति।
(ग) काकः पिकस्य संततिं पालयति। (घ) मयूरः विधात्रा एव पक्षिराजः वनराजः वा कृतः।
(ङ) सर्वैः खगैः कोऽपि खगः एव वनराजः कर्तुमिष्यते स्म। (च) सर्वे मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय प्रयत्नं कुर्वन्तु।

उत्तरम्–

(क) त्वं सत्यं कथयसि। (ख) सिंहेन सर्वजन्तवः पृच्छ्यन्ते।
(ग) काकेन पिकस्य संततिः पाल्यते। (घ) मयूरं विधाता एव पक्षिराजं वनराजं वा कृतवान्।
(ङ) सर्वैः खगाः कमपि खगम् एव वनराजं कर्तुमिच्छन्ति स्म। (च) सर्वैः मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय प्रयत्नः क्रियते।

8. **समासविग्रहं समस्तपदं वा लिखत।** (समास विग्रह/समस्तपद लिखें।)

(क) तुच्छजीवैः .....। (ख) वृक्षोपरि .....।
(ग) पक्षिणां सम्राट् .....। (घ) स्थिता प्रज्ञा यस्य सः .....।
(ङ) अपूर्वम् .....। (च) व्याघ्रचित्रका .....।

उत्तरम्– (क) तुच्छाः एव जीवाः तैः, (ख) वृक्षस्य उपरि, (ग) पक्षिसम्राट्, (घ) स्थितप्रज्ञः, (ङ) न पूर्वम्, (च) व्याघ्रः च चित्रकः च तयोः समाहारः

9. **प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत / योजयित्वा वा पदं रचयत।** (प्रकृति व प्रत्यय का विभाजन कीजिए या जोड़कर शब्द लिखिए।)

(क) क्रुध् + क्त .....। (ख) आकृष्य .....।
(ग) सत्यप्रियता .....। (घ) पराक्रमी .....।

Scanned by TapScanner

(ङ) कूर्द् + क्त्वा .....। (च) शृण्वन् .....।

उत्तरम्– (क) क्रुद्धः, (ख) आ + कृ + ल्यप्, (ग) सत्यप्रिय + तल्, (घ) पराक्रम + इन्, (ङ) कूर्दित्वा, (च) श्रु + शतृ

योग्यताविस्तारः

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चित् निरर्थकम्।
अश्वश्चेत् धावने वीरः, भारस्य वहने खरः॥
महान्तं प्राप्त सद्बुद्धे! संत्यजेन्न लघुं जनम्।
यत्रास्ति सूचिकाकार्यं कृपाणः किं करिष्यति॥

'शाण्डिल्यशतकम्' से उद्धृत ये दोनों श्लोक भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि संसार में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है, सभी का अपना-अपना महत्त्व है जैसे– घोड़ा यदि दौड़ने में निपुण है तो गधा भार वहन में, सुई जोड़ने का कार्य करती तो कृपाण काटने का। अतः संसार की क्रियाशीलता और गतिशीलता में सभी का अपना-अपना महत्त्व है। सभी के अपने-अपने कार्य हैं, अपना-अपना योगदान है। अतः हमें न तो किसी कार्य को छोटा या बड़ा, तुच्छ या महान् समझना चाहिए और न ही किसी प्राणी को। आपस में मिलजुल कर सौहार्द-पूर्ण तरीके से जीवन यापन करने में ही प्रकृति का सौन्दर्य है। विभिन्न प्राणियों से सम्बन्धित निम्नलिखित श्लोकों को भी पढ़िए और रसास्वादन कीजिए–

इन्द्रियाणि च संयम्य बकवत् पण्डितो नरः।
देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत्॥
काकचेष्टः बकध्यानी श्वाननिद्रः तथैव च।
अल्पाहारः गृहत्यागः विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्॥
स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।
हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः॥
प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो, देवोऽपि तं लङ्घयितुं न शक्तः।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्॥
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

वस्तुतः मित्रों के बिना कोई भी जीना पसन्द नहीं करता चाहे उसके पास बाकी सभी अच्छी चीज़ें क्यों न हों अतः हमें सभी के साथ मिलजुल कर, अपने आस-पास के वातावरण की तथा प्रकृति की सुरक्षा और सुन्दरता में सदैव सहयोग करना चाहिए वस्तुतः तभी हमारी ये कामनाएँ भी सार्थक हो सकती हैं–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

तथा च

अधुना रमणीया हि सृष्टिरेषा जगत्पतेः।
जीवाः सर्वेऽत्र मोदन्तां भावयन्तः परस्परम्॥

Scanned by TapScanner

अष्टमः पाठः

विचित्रः साक्षी

पाठ परिचय–उक्त पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा विरचित कथा का सम्पादित अंश है। प्रस्तुत कथा बंगला के सुविख्यात साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश-रूप में दिये गये फैसले पर आधारित है। सत्य और असत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है। वस्तुतः यह प्रयास सराहनीय है।

कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन स्वपुत्रं एकस्मिन्महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासंकर्त्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिःचौरशङ्क्या तमन्वधावत् अगृह्णाच्च, परं विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत "चौरोऽयं चौरोऽयम्" इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

शब्दार्थः– **भूरि**–पर्याप्तम्, अत्यधिकम् (अत्यधिक)। **परिश्रम्य**–उद्यम्य (परिश्रम करके)। **वित्तम्**–धनम् (धन)। **तनयः**–सुतः, पुत्रः (पुत्र)। **निवसन्**–वासं कुर्वन् (रहते हुए)। **तनूजस्य**–पुत्रस्य, सुतस्य (पुत्र की)। **आकर्ण्य**–श्रुत्वा, निशम्य (सुनकर)। **प्रस्थितः**–चलितः, गतः (चल दिया)। **अर्थकार्श्येन**–धनाभावेन (धन की कमी से)। **विहाय**– त्यक्त्वा (छोड़कर)। **पदातिः**–पद्भ्याम् (पैदल)। **असौ**–सः (वह)। **गन्तव्यात्**–गमनीयात् (गमनीय स्थल से)। **प्रसृते**–विस्तृते (फैलने पर)। **विजने**–निर्जने, एकान्ते (निर्जन, एकान्त में)। **शुभावहा**–कल्याणप्रदा (कल्याणकारिणी)। **विचार्य**– चिन्तयित्वा (विचार करके)। **गृही**–गृहस्थ (गृहस्वामी)। **अभ्यन्तरम्**–अन्तः (भीतर)। **निहिताम्**–स्थापिताम् (रखी हुई)। **पलायितः**–धावितः (भाग गया)। **प्रबुद्धः**–जागृत (जागा हुआ)। **अन्वधावत्**–अन्वगच्छत् (पीछे दौड़ पड़ा)। **क्रोशितुम्**–चीत्कर्तुम् (चिल्लाने)। **तारस्वरेण** –उच्चस्वरेण (ऊँची आवाज से)। **निष्क्रम्य**–निर्गत्य (निकलकर)। **अभर्त्सयन्**–कुत्सितवन्तः, अकुत्सयन् (कोसा, भला-बुरा कहा)। **आरक्षी**–प्रहरी (रखवाला, पहरेदार)। **प्रख्याप्य**–स्थाप्य (डालकर)।

सरलार्थ–किसी निर्धन व्यक्ति ने अत्यधिक परिश्रम करके कुछ धन इकट्ठा किया। वह अपने पुत्र को किसी महाविद्यालय (कॉलेज) में प्रवेश दिलाने में सफल हो गया। उसका पुत्र वहीं छात्रावास में रहते हुए अध्ययन में जुट गया। एक बार वह पिता पुत्र की बीमार को सुनकर दुःखी हो गया और पुत्र को देखने के लिए चल पड़ा। परन्तु धन की कमी से सताया हुआ वह बस को छोड़कर पैदल ही चल दिया।

पैदल चलने के कारण सायंकाल के समय में भी वह (अपने) गन्तव्य से दूर था। रात में अंधकार फैलने पर निर्जन (सुनसान) प्रदेश में पैदल यात्रा (करना) उचित नहीं था। ऐसा विचार कर वह पास में स्थित गाँव में रात्रि-निवास करने के लिए किसी गृहस्थ के यहाँ पहुँच गया। दयालु गृहस्थ ने उसे आश्रय दे दिया।

भाग्य की गति अनोखी है। उसी रात में, उस घर में कोई चोर भीतर घुस आया। वहाँ रखी एक पेटिका को लेकर भाग गया। चोर के पैरों की आवाज सुनकर जागा हुआ अतिथि चोर की आशंका से उसके पीछे दौड़ा और (उसे) पकड़ लिया, किन्तु अनोखी घटना हो गई। चोर ही जोर-जोर से चिल्लाने लगा– "यह चोर है, यह चोर है" ऐसा। उसकी ऊँची आवाज़ से जागे हुए ग्रामीण अपने घर से निकलकर वहाँ आए और बेचारे अतिथि को ही चोर मानकर (उसकी) निन्दा करने लगे। जबकि गाँव का रखवाला ही चोर था। उसी क्षण रक्षा पुरुष (पुलिस वाले) ने उस अतिथि को 'यह चोर है' ऐसा मानकर जेल में डाल दिया।

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशोबंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा

Scanned by TapScanner

वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्। आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्चअतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच-'रे दुष्ट!तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्यफलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

शब्दार्थः– **चौर्याभियोगे**–चौर्यदोषारोपे (चोरी के आरोप में)। **नीतिवान्**–अनयत् (ले गया)। **अवगत्य**–ज्ञात्वा, विज्ञाय (समझकर, जानकर)। **दोषभाजनम्**–दोषी, दोषपात्रम् (दोषी)। **उपस्थातुम्**–उपस्थित्यर्थम् (उपस्थित (पेश) होने के लिए)। **आदिष्टवान्**–आज्ञापयत् (आदेश दिया)। **अन्येद्युः**–अपरेद्युः (दूसरे दिन)। **तत्रत्यः**–तत्रभवः (वहाँ का)। **न्यवेदयत्**– प्रार्थयत् (निवेदन किया)। **क्रोशद्वयान्तराले**–क्रोशद्वयदूरे (दो कोस की दूरी पर)। **निकषा**–निकटे, समीपे (निकट)। **अभियुक्तम्**– आरोपिणम् (आरोपी को)। **प्राप्य**–अवाप्य, लब्धवा (पाकर)। **उपेत्य**–उपगत्य, उपगम्य (पास जाकर)। **पटाच्छादितम्**–वस्त्रेणावृत्तम् (कपड़े से ढका हुआ)। **वहन्तौ**–धारयन्तौ (ढोते हुए)। **कृशकायः**–दुर्बलशरीरः (कमजोर शरीर वाला)। **भारवतः**–भारयुक्तस्य (भारी का)। **दुष्करम्**–कठिन (कठिन)। **निशम्य**–आकर्ण्य, उक्त्वा (सुनकर)। **मुदितः**–प्रसन्नः (प्रसन्न)। **प्रोच्य**–कथयित्वा, उक्त्वा (कहकर)। **चत्वरे**–चतुष्पथे (चौराहे पर)।

सरलार्थ–अगले दिन वह रखवाला चोरी के आरोप में उसे (अतिथि को) न्यायालय ले गया। न्यायाधीश बंकिमचन्द्र ने दोनों से अलग-अलग विवरण सुना। सारा वृत्तान्त जानकर उन्होंने उसे निर्दोष माना और रखवाले को दोषी। किन्तु प्रमाण (सबूत) की कमी से वे निर्णय नहीं कर सके। इसके बाद उन्होंने उन दोनों को अगले दिन पेश होने के लिए आदेश दिया। अगले दिन उन दोनों ने न्यायालय में अपना-अपना पक्ष पुनः रखा। तभी वहाँ के किसी कर्मचारी ने आकर निवेदन किया, कि यहाँ से दो कोस की दूरी पर कोई व्यक्ति किसी के द्वारा मार दिया गया है। उसका पार्थिव शरीर राजमार्ग के निकट है। आदेश दीजिए, क्या किया जाए? ऐसा। न्यायाधीश ने रखवाले और आरोपी को (वह) शव न्यायालय में लाने का आदेश दिया।

आदेश पाकर दोनों चल दिए। वहाँ पहुँचकर लकड़ी के फट्टे (तखते) पर रखे हुए तथा कपड़े से ढके हुए शरीर (शव) को कंधे पर लादे हुए न्यायालय की ओर चल दिए। रखवाला तन्दुरुस्त शरीर वाला था और आरोप दुर्बल शरीर वाला। भारी शव को कंधे पर ढोना उसके लिए कठिन था। वह भार की पीड़ा से रो रहा था। उसके रोने को सुनकर रखवाला उससे बोला– 'अरे दुष्ट! उस दिन तूने मुझे चोरी हुई पेटिका लेने से रोका था। अब अपनी करनी का फल भोग। इस चोरी के मुकदमे में तू तीन वर्ष का कारावास पाएगा।" ऐसा कहकर वह जोर से हँसा। जिस किसी तरह उन दोनों ने शव लाकर एक चौराहे पर रख दिया।

आश्चर्यमघटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान् – मान्यवर!एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं चोरिताया: मञ्जूषाया:

Scanned by TapScanner

ग्रहणाद् वारितः, अतः निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति। न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अतएवोच्यते –

दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः। नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते॥

शब्दार्थः– प्रावारकम्–उत्तरीयवस्त्रम् (लबादा)। **अपसार्य**–अपवार्य (हटाकर)। **अभिवाद्य**–प्रणम्य, नमस्कृत्य (प्रणाम करके)। **वारितः**–निवारितः (रोका गया)। **आदिश्य**–आदेशं दत्त्वा (आदेश देकर)। **मुक्तवान्**–अत्यजत् (छोड़ दिया)। **उच्यते**–कथ्यते (कहा जाता है)। **समालम्ब्य**–अवलम्ब्य (सहारा लेकर)। **लीलयैव**–कौतुकेन (खेल-खेल में)।

सरलार्थ–न्यायाधीश ने उन दोनों को फिर से घटना के विषय में कहने का आदेश दिया। आरक्षी (रखवाले) के अपना पक्ष प्रस्तुत करते समय आश्चर्य हो गया– उस शव ने अपनी चादर हटाकर न्यायाधीश को प्रणाम करके निवेदन किया-मान्यवर! इस आरक्षी ने मार्ग में जो कहा वह बताता हूँ-'तूने मुझे चुराई गई पेटिका लेने से रोका था, इसलिए अपने किए का फल भोग। इस चोरी के मुकदमे में तू तीन वर्ष का कारावास पाएगा' ऐसा।

न्यायाधीश ने आरक्षी को कारावास का दण्ड सुनाया और उस व्यक्ति (अतिथि/आरोपी) को सम्मान सहित छोड़ दिया। इसीलिए कहा गया है–

बुद्धि के वैभव से युक्त लोग कठिन कार्यों को भी नीति और उपाय का सहारा लेकर खेल-खेल में (सरलता से ही) कर लेते हैं।

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

कश्चन – कः + चन।
निर्धना जनः – निर्धनः + जनः।
किञ्चित् – किम् + चित्।
विद्यालये – विद्या + आलये।
सफलो जातः – सफलः + जातः।
तत्रैव – तत्र + एव।
छात्रावासे – छात्र + आवासे।
व्याकुलो जातः – व्याकुलः + जातः।
पदातिरेव – पदातिः + एव।
प्राचलत् – प्र + अचलत्।
समयेऽप्सयौ – समये + अपि + असौ।
निशान्धकारे – निशा + अन्धकारे।
कञ्चित् – कम् + चित्।
करुणापरो गृही – करुणापरः + गृही।
प्रायच्छत् – प्र + अयच्छत्।
कश्चन – कः + चन।
गृहाभ्यन्तरम् – गृह + अभ्यन्तरम्।
प्रबुद्धोऽतिथिः – प्रबुद्धः + अतिथिः।
अन्वधावत् – अनु + अधावत्।
अगृह्णाच्च – अगृह्णात् + च।
चौराऽयम् – चौरः + अयम्।
स्वगृहाद् निष्क्रम्य – स्वगृहात् + निः + क्रम्य।
तत्रागच्छन् – तत्र + अगच्छन्।
मत्वाऽभर्त्सयन् – मत्वा + अभर्त्सयन्।
यद्यपि – यदि + अपि।
चौर आसीत् – चौरः + आसीत्।
प्राक्षिप्त् – प्र + अक्षिपत्।
चौर्याभियोगे – चौर्य + अभियोगे।
न्यायालयम् – न्याय + आलयम्।
न्यायाधीशः – न्याय + अधीशः (अधि + ईश)।
निर्दोषम् – निः + दोषम्।
प्रमाणाभावात् – प्रमाण + अभावात्।
नाशक्नोत् – न + अशक्नोत्।
ततोऽसौ – ततः + असौ।
तदैव – तदा + एव।
कश्चित् – कः + चित्।
न्यवेदयत् – नि + अवेदयत्।
द्वयान्तराले – द्वय + अन्तराले।
कश्चिज्जनः – कः + चित् + जनः।
केनापि – केन + अपि।
प्राचलताम् – प्र + अचलताम्।
तत्रोपेत्य – तत्र + उपेत्य।
पटाच्छादितम् – पट + आच्छादितम्।
अभियुक्तश्च – अभियुक्तः + च।
मुदित आरक्षी – मुदितः + आरक्षी।
त्वयाऽहम् – त्वया + अहम्।
चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणात् – चोरितायाः + मञ्जूषायाः + ग्रहणात्।
कथञ्चित् – कथम् + चित्।
पुनस्तौ – पुनः + तौ।
यदुक्तम् – यत् + उक्तम्।
त्वयाऽयम् – त्वया + अहम्।
अत एव – अतः + एव।
एवोच्यते – एव + उच्यते।
दृष्कराण्यपि – दुः + कराणि (दुष्कराणि) + अपि।
लीलयैव – लीलया + एव।

संयोगः

वित्तमुपार्जितवान् – वित्तम् + उपार्जितवान्।
समभूत – सम् + अभूत्।
रुग्णतामाकर्ण्य – रुग्णताम् + आकर्ण्य।
परमर्थकार्श्येन – परम् + अर्थकार्श्येन।

Scanned by TapScanner

गृहमुपागतः	– गृहम् + उपागतः।	**करणीयमिति**	– करणीयम् + इति।
तस्यामेव	– तस्याम् + एव।	**आनेतुमादिष्टवान्**	– आनेतुम् + आदिष्टवान्।
निहितामेकाम्	– निहिताम् + एकाम्।	**तमुवाच**	– तम् + उवाच।
तमन्वधावत्	– तम् + अन्वधावत्।	**शवमानीय**	– शवम् + आनीय।
विचित्रमघटत्	– विचित्रम् + अघटत्।	**वक्तुमादिष्टौ**	– वक्तुम् + आदिष्टौ।
क्रोशितुमारभत	– क्रोशितुम् + आरभत।	**आश्चर्यमघटत्**	– आश्चर्यम् + अघटत्।
वराकमतिथिमेव	– वराकम् + अतिथिम् + एव।	**प्रावारकमपसार्य**	– प्रावारकम् + अपसार्य।
तत्क्षणमेव	– तत्क्षणम् + एव।	**न्यायाधीशमभिवाद्य**	– न्यायाधीशम् + अभिवाद्य।
वृत्तमवगत्य	– वृत्तम् + अवगत्य।	**कारादण्डमादिश्य**	– कारादण्डम् + आदिश्य।
समागत्य	– सम् + आगत्य।	**समालम्ब्य**	– सम् + आलम्ब्य।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत। (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?
(ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?
(ग) प्रसृते निशान्धकारे स किम् अचिन्तयत्?
(घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?
(ङ) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी किमुक्तवान्?
(च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

उत्तरम्–

(क) निर्धनः जनः भूरिः परिश्रम्य वित्तम् उपर्जितवान्।
(ख) जनः अर्थकार्श्येन पदातिः गच्छति।
(ग) प्रसृते निशान्धकारे स अचिन्तयत्, यत् 'विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा'।
(घ) वस्तुतः चौरः आरक्षी एव आसीत्।
(ङ) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी उक्तवान्–'रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वया अहं चोरिताया: मञ्जूषायाः वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति।
(च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि नीतिं युक्तिं च समालम्ब्य लीलयैव साधयन्ति।

2. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत। (रेखांकित शब्दों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए)

(क) पुत्रं द्रष्टुं सः प्रस्थितः।
(ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।
(ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।
(घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।
(ङ) स भारवेदनया क्रन्दति स्म।
(च) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

उत्तरम्– (क) कं, (ख) कस्मै, (ग) कस्य, (घ) कः, (ङ) कथं, (च) चत्वरे।

3. यथानिर्देशमुत्तरत। (निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।)

(क) 'आदेशं प्राप्य उभौ अचलताम्' अत्र किं कर्तृपदम्?
(ख) 'एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तत् वर्णयामी'– अत्र 'मार्गे' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(ग) 'करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्'– अत्र 'तस्मै' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(घ) 'ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्' अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?
(ङ) 'दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः'– अत्र विशेष्यपदं किम्?

उत्तरम्– (क) उभौ, (ख) अध्वनि, (ग) निर्धनः जनः, (घ) आदिष्टवान्, (ङ) कर्माणि

4. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत। (संधि और संधिविच्छेद कीजिए)

(क) पदातिरेव – ..... + ...
(ख) निशान्धकारे – ..... + ...
(ग) अभि + आगतम् – .....
(घ) भोजन + अन्ते – .....
(ङ) चौरोऽयम् – ..... + ...
(च) गृह + अभ्यन्तरे – .....
(छ) लीलयैव – ..... + ...

Scanned by TapScanner

(ज) यदुक्तम् – ..... + ...

(झ) प्रबुद्धः + अतिथिः – .....

उत्तरम्– (क) पदातिः + एव, (ख) निशा + अन्धकारे, (ग) अभ्यागतम्, (घ) भोजनान्ते, (ङ) चौरः + अयम्, (च) गृहाभ्यन्तरे, (छ) लीलया + एव, (ज) यत् + उक्तम्, (झ) प्रबुद्धोऽतिथिः।

5. **अधोलिखितानि पदानि भिन्न-भिन्नप्रत्ययान्तानि सन्ति। तानि पृथक् कृत्वा निर्दिष्टानां प्रत्ययानामधः लिखत।** (निम्नलिखित शब्दों में विभिन्न प्रत्ययान्त शब्द हैं। उन्हें अलग करके निर्दिष्ट प्रत्ययों के नीचे लिखें।)

परिश्रम्य, उपार्जितवान्, दापयितुम्, प्रस्थितः, द्रष्टुम्, विहाय, पृष्टवान्, प्रविष्टः, आदाय, क्रोशितुम्, नियुक्तः, नीतवान्, निर्णेतुम्, आदिष्टवान्, समागत्य, निशम्य, प्रोच्य, अपसार्य।

ल्यप्	क्त	क्तवतु	तुमुन्
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

उत्तरम्– ल्यप्– परिश्रम्य, विहाय, आदाय, समागत्य, निशम्य, प्रोच्य, अपसार्य; **क्त–** प्रस्थितः, प्रविष्टः, नियुक्तः, आदिष्टवान्; **क्तवतु–** उपार्जितवान्, पृष्टवान्, नीतवान्, निर्णेतुम्; **तुमुन–** दापयितुम्, द्रष्टुम्, क्रोशितुम

6. **(अ) अधोलिखितानि वाक्यानि बहुवचने परिवर्तयत।** (निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित कीजिए।)

(क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्। (ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।

(ग) कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। (घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तौ।

(आ) कोष्ठकेषु दत्तेषु पदेषु यथानिर्दिष्टां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) सः ..... निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृह शब्दे पंचमी)

(ख) गृहस्थः ..... आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथि शब्दे चतुर्थी)

(ग) तौ ..... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधीश शब्दे द्वितीया)

(घ) ..... चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे। (इदम् शब्दे सप्तमी)

(ङ) चौरस्य ..... प्रबुद्धः अतिथिः। (पादध्वनिशब्दे तृतीया)

उत्तरम्–

(अ) (क) ते बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवन्तः।

(ख) चौराः ग्रामे नियुक्ताः राजपुरुषाः आसन्।

(ग) केचन चौराः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टाः।

(घ) अन्येद्युः ते न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तः।

(आ) (क) गृहात्, (ख) अतिथये, (ग) न्यायाधीशं, (घ) , (ङ)

7. **भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत (भिन्न प्रकृति वाले शब्द को चुनिये)–**

(क) विचित्रा, शुभावहा, शङ्कया, मञ्जूषा (ख) कश्चन, किञ्चित्, त्वरितं, यदुक्तम्

(ग) पुत्रः, तनयः, व्याकुल, तनूजः (घ) करुणापरः, अतिथिपरायणः, प्रबुद्धः, जनः

उत्तरम्– (क) शङ्कया, (ख) कश्चन, (ग) व्याकुल, (घ) प्रबुद्धः।

योग्यताविस्तारः

(क) **विचित्रः साक्षी**

न्यायो भवति प्रमाणाधीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुं न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपिन्यायाधीशाः यस्मिन् कस्मिन्नपि विषये प्रमाणाभावे न समर्थाः भवन्ति। अतएव, अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणम्) विना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेद्युः यदा स शवः न्यायाधीशं सर्वं निवेदितवान् सप्रमाणं तदा सः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयमेव सन्देशः।

(ख) **मतिवैभवशालिनः**

बुद्धिसम्पत्ति सम्पन्नाः। ये विद्वांसः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्ताः ते मतिवैभवशालिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्यबलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति।

Scanned by TapScanner

(ग) **स शवः**

न्यायाधीश बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे किमपि प्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्तुं नियुक्तः जातः। यद् घटितमासीत् सः सर्वं सत्यं ज्ञात्वा साक्ष्यं प्रस्तुतवान्। पाठेऽस्मिन् शवः एव 'विचित्रः साक्षी' स्यात्।

भाषिकविस्तारः

उपार्जितवान् – उप + √अर्ज् + तवतु
दापयितुम् – √दा + णिच् + तुमुन्

अदस् (यह) पुँल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अध्वन् (मार्ग) नकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अध्वा	अध्वानौ	अध्वानः
द्वितीया	अध्वानम्	अध्वानौ	अध्वनः
तृतीया	अध्वना	अध्वभ्याम्	अध्वभिः
चतुर्थी	अध्वने	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
पंचमी	अध्वनः	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
षष्ठी	अध्वनः	अध्वनोः	अध्वनाम्
सप्तमी	अध्वनि	अध्वनोः	अध्वसु
सम्बोधन	हे अध्वन्!	हे अध्वानौ!	हे अध्वनः!

Scanned by TapScanner

नवमः पाठः

सूक्तयः

पाठ-परिचय– ''सूक्तयः'' पाठ तिरुवल्लुवर महाकवि के ''तिरुक्कुरल'' नामक ग्रन्थ से लिया गया है और संस्कृत में देवनागरी लिपि में अनूदित हुआ है। मूलरूप से यह ग्रन्थ तमिल भाषा में है और इसके लेखक भी तमिलभाषी महाकवि हैं। तिरुक्कुरल् तमिलभाषा में रचित ''तमिल साहित्य'' की उत्कृष्ट कृति है। इसे तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है। इसके प्रणेता तिरुवल्लुवर हैं। ग्रन्थ का रचनाकाल प्रथम ईस्वी शताब्दी है। इस ग्रन्थ में समस्त मानव जाति के लिए जीवनोपयोगी सत्य का प्रतिपादन हुआ है। 'तिरु' शब्द 'श्री' का वाचक हैं। 'तिरुक्कुरल्' पद का अभिप्राय है 'श्रिया युक्तं कुरल् छन्दः' अथवा 'श्री युक्तवाणी'। इस ग्रन्थ में धर्म-अर्थ-काम नामक तीन भाग हैं। तीनों भागों में पद्य संख्या 1330 है। प्रस्तुत श्लोक सरस, सरल भाषायुक्त तथा प्रेरणाप्रद है।

पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता॥1॥

अन्वयः– पिता पुत्राय बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति। पिता अस्य किं तपः तेपे, इति उक्तिः तत् कृतज्ञता।

शब्दार्थ– बाल्ये– बचपन में, **यच्छति**– देता है, **तेपे**– (तपस्या कृता) तप किया, **उक्तिः**– कथन, **तम्**– उस पिता के प्रति, **कृतज्ञता**– उपकार मानने का भाव।

पिता अपने पुत्र को बचपन में महान् विद्यारूपी धन को देता है। पिता ने इस पुत्र के लिए कितना तप किया? यह कथन ही उस पिता के प्रति कृतज्ञता है।

भावार्थ– भाव यह है कि बाल्यकाल में पिता अपनी सन्तान के लिए जो कष्ट सहता है, योग्य पुत्र उसके इस तप को अनुभव करता है और पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है।

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः ॥2॥

अन्वयः– यदि तथा चित्ते अवक्रता तथा वाचि भवेत् महात्मानः तत् एव समत्वम् इति तथ्यतः आहुः।

शब्दार्थ– अवक्रता– (न-वक्रता / ऋजुता) सरलता, **यथा**– जैसी, **वाचि**– (वाण्याम्) वाणी में, **तदेव**– उसे ही, **समत्वम्**– समानता, **तथ्यतः**– (यथार्थरूपेण) सच्चे रूप में, वास्तव में।

यदि जैसी सरलता मन में हो, वैसी ही वाणी में भी हो तो महात्मा लोग, उसे सच्चे रूप में समानता (मन और वचन की समानता) कहते हैं।

भावार्थ– महापुरुषों का मन जैसा निष्कपट होता है, वैसे ही उनकी वाणी भी निष्कपट होती है।

त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः ॥3॥

अन्वयः– यः विमूढधीः धर्मप्रदां वाचं त्यक्त्वा परुषां वाचं अभ्युदीरयेत्। (सः) पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं भुंक्ते।

शब्दार्थ– धर्मप्रदाम्– धर्म को प्रदान करने वाली, **वाचम्**– वाणी में, **परुषाम्**– (कठोराम्) कठोर, **अभ्युदीरयेत्**– (वदेत्) बोले, बोलता है, **परित्यज्य**– छोड़कर, **पक्वम्**– पका हुआ, **भुङ्क्ते**– खाता है, **अपक्वम्**– कच्चा, **विमूढधीः**– (मूर्खः / बुद्धिहीनः) मूर्ख बुद्धिवाला, **वाचम्**– वाणी को।

Scanned by TapScanner

जो मूढ़ बुद्धि वाला (अज्ञानी), धर्म को प्रदान करने वाली वाणी को छोड़कर, कठोर वाणी बोलता है, वह पके हुए फल को छोड़कर कच्चे फल को खाता है।

भावार्थ– भाव यह है कि कठोरवाणी को त्यागकर, मधुरवाणी को अपनाना चाहिए।

विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते ॥4॥

अन्वयः– अस्मिन् लोके विद्वांस एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः। ये अन्येषां वदने ते तु चक्षुनामिनी मते।

शब्दार्थ– लोके– संसार में, **चक्षुष्मन्तः–** (नेत्रवन्तः) आँखों वाले, **प्रकीर्तिताः**–कहे गए हैं, **ये–** जो, **तु–** तो, **अन्येषाम्–** दूसरों के, **वदने–** (आनने / मुखे) मुख में, **ते–** वे, **चक्षुनामिनी–** नाममात्र की आँखें, **मते–** मानी गई हैं।

इस संसार में विद्वान् लोग ही आँखों वाले कहे गए हैं। दूसरों के मुख पर जो आँखें हैं, वे तो नाममात्र की आँखें मानी गई हैं।

भावार्थ– भाव यह है कि ज्ञानचक्षु ही मनुष्य की असली आँख हैं, जिनसे जीवन का दर्शन होता है। भौतिक आँख अतीत और भविष्य को नहीं दिखा सकती।

यत् प्रोक्तं येन केनापि तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः।
कर्तुं शक्यो भवेद्येन सः विवेक इतीरितः ॥5॥

अन्वयः– येन केन अपि यत् प्रोक्तं, तस्य तत्त्व-अर्थनिर्णयः येन कर्तु शक्यः भवेत् सः विवेकः इति ईरितः।

शब्दार्थ– येन केन अपि– जिस किसी के भी द्वारा, **यत् प्रोक्तम्–** जो कुछ कहा गया है, **तत्त्वार्थ–** वास्तविक अर्थ, **इति–** इस प्रकार, यह, **ईरितः–** (कथितः / प्रेरितः) कहा गया है।

जिस किसी के भी द्वारा जो कुछ कहा गया है, उसके वास्तविक अर्थ का निर्णय जिसके द्वारा किया जा सकता है, उसे 'विवेक' कहा गया है।

भावार्थ– भाव यह है कि अच्छे-बुरे की निर्णायक विवेक बुद्धि होती है।

वाक्पटुर्धैर्यवान् मन्त्री सभायामप्यकातरः।
स केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते ॥6॥

अन्वयः– (यः) वाक्पटुः धैर्यवान् सभायाम् अपि अकातरः मन्त्री सः परैः केन अपि प्रकारेण न परिभूयते।

शब्दार्थ– वाक्पटुः– (वाचि / सम्भाषणे पटुः) वाणी में कुशल, **अकातरः–** (वीरः / साहसी) निडर, **मन्त्री–** मन्त्र (परामर्श) देने वाला, **परैः–** शत्रुओं द्वारा, **परिभूयते–** (तिरस्क्रियते / अवमान्यते) पराजित होता है।

जो बोलने में कुशल (वक्ता), धैर्यशाली, सभा में भी निर्भीक रहकर, अपना परामर्श देने वाला होता है, वह शत्रुओं के द्वारा किसी भी प्रकार पराजित नहीं होता है।

य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म सः परेभ्यः कदापि च ॥7॥

अन्वयः– यः आत्मनः श्रेयः, प्रभूतानि सुखानि च इच्छति, सः च कदापि परेभ्यः अहितं कर्म न कुर्यात्।

शब्दार्थ– आत्मनः– अपने लिए, **श्रेयः–** (कल्याणम्) कल्याण, **प्रभूतानि–** (अत्यधिकानि) अत्यधिक, **परेभ्यः–** दूसरों के लिए, **अहितम्–** बुरा अकल्याणकारक, **कुर्यात्–** करे।

जो अपने लिए कल्याण तथा अत्यधिक सुखों को चाहता है, वह कभी भी दूसरों के लिए बुरा काम नहीं करे।

भावार्थ– भाव यह है कि अपनी आत्मा के प्रतिकूल दूसरों के लिए व्यवहार न करें। दूसरों के हित में ही अपना हित होता है।

आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।
तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः ॥8॥

अन्वयः– आचारः प्रथमः धर्मः, इति एतत् विदुषां वचः। तस्मात् प्राणेभ्यः अपि विशेषतः सदाचारम् रक्षेत्।

शब्दार्थ– आचारः– सदाचार, **प्रथमः–** पहला, सर्वप्रथम, **विदुषाम्–** (विद्वद्जनानाम्) विद्वानों का, **वचः–** वचन, **प्राणेभ्यः अपि–** प्राणों से भी, प्राण देकर भी, **विशेषतः–** विशेष रूप से।

सदाचार सर्वप्रथम धर्म है, ऐसा विद्वानों का वचन है। इसलिए प्राणों से भी विशेषकर सदाचार की रक्षा करनी चाहिए।

Scanned by TapScanner

भावार्थ– अच्छा आचरण धर्म की पहली सीढ़ी है, अत: जीवन में सफलता पाने के लिए प्राणों का बलिदान करके भी, सत् आचरण का पालन करना चाहिए।

अभ्यास:

1. **प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन दीयताम्।** (प्रश्नों का उत्तर एक शब्द में दीजिए।)
   (क) पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति? (ख) मूढमति: कीदृशीं वाचं परित्यजति?
   (ग) अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्त: प्रकीर्तिता:? (घ) प्राणेभ्योपि को रक्षणीय:?
   (ङ) आत्मन: श्रेय: इच्छन् नर: कीदृशं कर्म न कुर्यात्? (च) वाचि किं भवेत्?
   उत्तरम्– (क) विद्याधनम्, (ख) धर्मप्रदाम्, (ग) विद्वांस:, (घ) सदाचार:, (ङ) अहितम्।

2. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (स्थूल शब्दों के आधार पर प्रश्न निर्माण कीजिए।)
   यथा– **विमूढधी:** पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
   क: पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
   (क) संसारे **विद्वांस:** ज्ञानचक्षुभि: नेत्रवन्त: कथ्यन्ते। (ख) जनकेन **सुताय** शैशवै विद्याधनं दीयते।
   (ग) **तत्त्वार्थस्य** निर्णय: विवेकेन कर्तुं शक्य:। (घ) धैर्यवान् **लोके** परिभवं न प्राप्नोति।
   (ङ) आत्मकल्याणम् इच्छन् नर: **परेषाम्** अनिष्टं न कुर्यात्।
   उत्तरम्–
   (क) संसारे **के** ज्ञानचक्षुभि: नेत्रवन्त: कथ्यन्ते? (ख) जनकेन **कस्मै** शैशवै विद्याश्नं दीयते?
   (ग) **कस्य** निर्णय: विवेकेन कर्तुं शक्य:? (घ) धैर्यवान् **कुत्र** परिभवं न प्राप्नोति?
   (ङ) आत्मकल्याणम् इच्छन् नर: **केषाम्** अनिष्टं न कुर्यात्?

3. **पाठात् चित्वा अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयम् उचितपदक्रमेण पूरयत।** (पाठ से चुनकर निम्नलिखित श्लोकों के अन्वय को उचित पदक्रम में भरिए।)
   (क) पिता ..... बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति, अस्य पिता किं तप: तेपे इत्युक्ति: .....।
   (ख) येन ..... यत् प्रोक्तं तस्य तत्त्वार्थनिर्णय: येन कर्तुं ..... भवेत्, स: ..... इति .....।
   (ग) य आत्मन: श्रेय: ..... सुखानि च इच्छति, परेभ्य: अहितं ..... कदापि च न .....।
   उत्तरम्–
   (क) पिता **पुत्राय** बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति, अस्य पिता किं तप: तेपे इत्युक्ति: **तत् कृतज्ञता।**
   (ख) येन **केनापि** यत् प्रोक्तं तस्य तत्त्वार्थनिर्णय: येन कर्तुं **शक्य:** भवेत्, स: **विवेक:** इति **ईरित:।**
   (ग) य आत्मन: श्रेय: **प्रभूतानि** सुखानि च इच्छति, परेभ्य: अहितं **कर्म** कदापि च न **कुर्यात्** ।

4. **अधोलिखितम् उदाहरणद्वयं पठित्वा अन्येषां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत।** (निम्नलिखित दो उदाहरणों को पढ़कर अन्य प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

   (अ) श्लोक संख्या–3
   यथा–सत्या मधुरा च वाणी का? धर्मप्रदा
   (क) धर्मप्रदां वाचं क: त्यजति? .....
   (ख) मूढ: पुरुष: कां वाणीं वदति? .....
   (ग) मन्दमति: कीदृशं फलं खादति? .....

   (आ) श्लोक संख्या–7
   यथा– बुद्धिमान् नर: किम् इच्छति? आत्मन: श्रेय:
   (क) स: कियन्ति सुखानि इच्छति? .....
   (ख) स: कदापि किं न कुर्यात्? .....
   (ग) स: केभ्य: अहितं न कुर्यात्? .....
   उत्तरम्–
   (अ) (क) विमूढधी:, (ख) परुषाम्, (ग) अपक्वम्
   (आ) (क) प्रभूतानि, (ख)अहितम् कर्म, (ग)परेभ्य:

Scanned by TapScanner

5. **मञ्जूषाया: तद्भावात्मकसूक्ती: विचित्य अधोलिखितकथनानां समक्षं लिखत–**

(क) विद्याधनं महत्

.....

.....

(ख) आचार: प्रथमो धर्म:

.....

.....

(ग) चित्ते वाचि च अवक्रता एव समत्वम्

.....

.....

.....

आचारेण तु संयुक्त: सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।
मनसि एकं वचसि एकं कर्मणि एकं महात्मनाम्।
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
सं वो मनांसि जानताम्।
विद्याधनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद्धनम्।
आचारप्रभवो धर्म: सन्तश्चाचारलक्षणा:।

उत्तरम्–

(क) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
विद्याधनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद् धनम्।

(ख) आचारेण तु संयुक्त: सम्पूर्णफलभाग् भवेत्।
आचारप्रभवो धर्म: सन्तश्चाचारलक्षण:।

(ग) मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
सं वो मनांसि जानताम्।

6. **(अ) अधोलिखितानां शब्दानां पुरत: उचितं विलोमशब्दं कोष्ठकात् चित्वा लिखत।** (निम्नलिखित शब्दों के सामने कोष्ठक से उचित शब्द चुनकर लिखिए।)

शब्दा:	**विलोमशब्द:**	
(क) पक्व:	.....	(परिपक्व:, अपक्व:, क्वथित:)
(ख) विमूढधी:	.....	(सुधी:, निधि:, मन्दधी:)
(ग) कातर:	.....	(अकरुण:, अधीर:, अकातर:)
(घ) कृतज्ञता	.....	(कृपणता, कृतघ्नता, कातरता)
(ङ) आलस्यम्	.....	(उद्विग्नता, विलासिता, उद्योग:)
(च) परुषा	.....	(पौरुषी, कोमला, कठोरा)

(आ) अधोलिखितानां शब्दानां त्रय: समानार्थका: शब्दा: मञ्जूषाया: चित्वा लिख्यन्ताम्। (नीचे लिखे गए शब्दों के लिए तीन समानार्थक शब्द मंजूषा से चुनकर लिखिए।)

(क) प्रभूतम्	.....	.....	.....
(ख) श्रेय:	.....	.....	.....
(ग) चित्तम्	.....	.....	.....
(घ) सभा	.....	.....	.....
(ङ) चक्षुष्	.....	.....	.....
(च) मुखम्	.....	.....	.....

शब्द-मञ्जूषा

लोचनम्	नेत्रम्	भूरि	शुभम्	परिषद्	मानसम्
मन:	सभा	नयनम्	आननम्	चेत:	विपुलम्
संसद्	बहु	वक्त्रम्	वदनम्	शिवम्	कल्याणम्

Scanned by TapScanner

उत्तरम्–

(अ) (क) पक्व:– अपक्व:, (ख) विमूढधी:– मन्दधी:, (ग) कातर:– अकातर:, (घ) कृतज्ञता– कृतघ्नता, (ङ) आलस्यम्– उद्योग:, (च) परुषा– कठोरा

(आ) (क) भूरि, विपुलम्, बहु (ख) शुभम्, शिवम्, कल्याणम् (ग) मानसम्, मन:, चेत: (घ) परिषद्, सभा, संसद् (ङ) लोचनम्, नेत्रम्, नयनम् (च) आननम्, वक्त्रम्, वदनम्

7. **अधस्ताद् समासविग्रहा: दीयन्ते तेषां समस्तपदानि पाठाधारेण दीयन्ताम्।** (नीचे समास विग्रह दिए गए हैं, पाठ के आधार पर उनके समस्तपद दीजिए।)

विग्रह:	**समस्तपदम्**	**समासनाम**
(क) तत्त्वार्थस्य निर्णय:	.....	षष्ठी तत्पुरुष:
(ख) वाचि पटु:	.....	सप्तमी तत्पुरुष:
(ग) धर्मं प्रददाति इति (ताम्)	.....	उपपद तत्पुरुष:
(घ) न कातर:	.....	नञ् तत्पुरुष:
(ङ) न हितम्	.....	नञ् तत्पुरुष:
(च) महान् आत्मा येषाम्	.....	बहुव्रीहि:
(छ) विमूढा धी: यस्य स:	.....	बहुव्रीहि:

उत्तरम्– (क) तत्त्वार्थनिर्णय:, (ख) वाक्पटु:, (ग) धर्मप्रदाम्, (घ) अकातर:, (ङ) अहितम्, (च) महात्मान:, (छ) विमूढधी:

योग्यताविस्तार:

क. **'तिरुक्कुरल्-सूक्तिसौरभम्' इति पाठस्य तमिल मूलपाठ: (देवनागरी - लिपौ)**

सोर्कोट्टम् इल्लदु सेप्पुम् ओरू तलैया उळ्ळकोट्टम इन्मै पेरिन्।
मगन् तन्दैवक्काटुम् उद्रवि इवन् तन्दै एन्नोटान् कौम् एननुम सोक्त।
इनिय उळ्वाग इन्नाद कूरल् कनि इरूप्पक् काय् कवरंदट्।
कण्णुडैयर् एन्पवर् कट्टोर मुहत्तिरण्डु पुण्णुडैयर कल्लादवर्।
एप्पोरूल यार यार वाय् केट्टपिनुम् अप्पोरूल मेय् पोरूल काण्पदरिवु।
सोललवल्लन् सोरविलन् अन्जान् अवनै इहलवेल्लल् यारुक्कुम् अरितु।
नोय एल्लाम् नोय् सेयदार मेलवान् नोय् सेययार नोय् इन्मै वेण्डुभवर्।
ओषुक्कम् विषुष्यम् तरलान् ओषुक्कम् उयिरिनुम् ओप्पप्पडुम्।

ख. **ग्रन्थपरिचय:**

तिरुक्कुरल् तमिलभाषायां रचिता तमिलसाहित्यस्य उत्कृष्टा कृति: अस्ति। अस्य प्रणेता तिरुवल्लुवर: अस्ति।
ग्रन्थस्य रचनाकाल: अस्ति-ईशवीयाब्दस्य प्रथमशताब्दी।
अस्मिन् ग्रन्थे सकलमानवाजाते: कृते जीवनोपयोगिसत्यम् प्रतिपादितम्।
तिरु शब्द: 'श्री' वाचक:। 'तिरुक्कुरल्' पदस्य अभिप्राय: अस्ति श्रिया युक्तं कुरल् छन्द: अथवा श्रिया युक्ता वाणी।
अस्मिन् ग्रन्थे धर्म-अर्थ-काम-संज्ञका: त्रय: भागा: सन्ति। त्रयाणां भागानां पद्यसंख्या 1330 अस्ति।

ग. **भाव-विस्तार:**

सदाचार:

किं कुलेन विशालेन शीलमेवात्र कारणम्।
कृमय: किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु।।
आगमानां हि सर्वेषामाचार: श्रेष्ठ उच्यते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मादायुर्विवर्धते।।

मधुरा वाक्

प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति सर्व जन्तव:।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।
वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मी: दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम्।।

विद्याधनम्

विद्याधनम् धनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद्धनम्।
दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते।
माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

विद्वांस:

नास्ति यस्य स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पण: किं करिष्यति।
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

Scanned by TapScanner

दशमः पाठः

भूकम्पविभीषिका

पाठ परिचय–हमारे वातावरण में भौतिक सुख साधनों के साथ-साथ अनेकों आपदाएँ भी लगी रहती हैं। प्राकृतिक आपदाएँ प्राणिमात्र के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। कभी किसी महामारी की आपदा, बाढ़ तथा सूखे की आपदा या तूफान के रूप में भयङ्कर प्रलय– ये सब हम अपने जीवन में देखते तथा सुनते रहते हैं। इस पाठ के माध्यम से यह बताया गया है किसी भी आपदा में बिना किसी घबराहट के, हिम्मत के साथ किस प्रकार हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं। भूकम्प भी एक ऐसी भौतिक आपदा है जो अकस्मात् जन-जीवन को दुष्प्रभावित करती है।

एकोत्तर द्विसहस्रखीष्टाब्दे (2001 ईस्वीये वर्षे) गणतन्त्र-दिवस-पर्वणि यदा समग्रमपि भारत राष्ट्रं नृत्य-गीतवाद्यादिनाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जर– राज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नञ्च जातम्। भूकम्पस्य दारुण – विभीषिका समस्तमपि गुर्जरक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपदं ध्वंसावशेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्यैकेन धक्केन भुजनगरं तु मृत्तिकाक्रीडनकमिव खण्डखण्डम् जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युद्दीपस्तम्भाः। विशीर्णाः गृहसोपान– मार्गाः। फालद्वये विभक्ता भूमिः। भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वार जलधाराभिः– महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं करुणकरुणं क्रन्दन्ति स्म। हा दैव! क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।

शब्दार्थः– पर्वणि–उत्सवे (पर्व पर)। **पर्याकुलम्**–सर्वतः दुःखी (चारों ओर से दुःखी)। **गुर्जर-राज्यम्**–गुराजतः-प्रदेशः (गुजरात प्रदेश)। **पिवर्यस्तम्**–अस्तःव्यस्तम् (अस्त-व्यस्त)। **विपन्नम्**–विपत्तियुक्तम् (आपद ग्रस्त)। **दारुणविभीषिका**–भयङ्कर-आपदम् (भयानक आपदा)। **जनपदम्**–मण्डलम् (जिला)। **ध्वंसावशेषु**–खण्डहरेषु (खण्डहर के अवशेषों में)। **मृत्तिकाक्रीडनकमिव**–मृण्मयक्रीडनकमिव (मिट्टी के खिलौने के समान)। **बहुभूमिकानि**– अनेकतलानि (बहुमंजिले)।

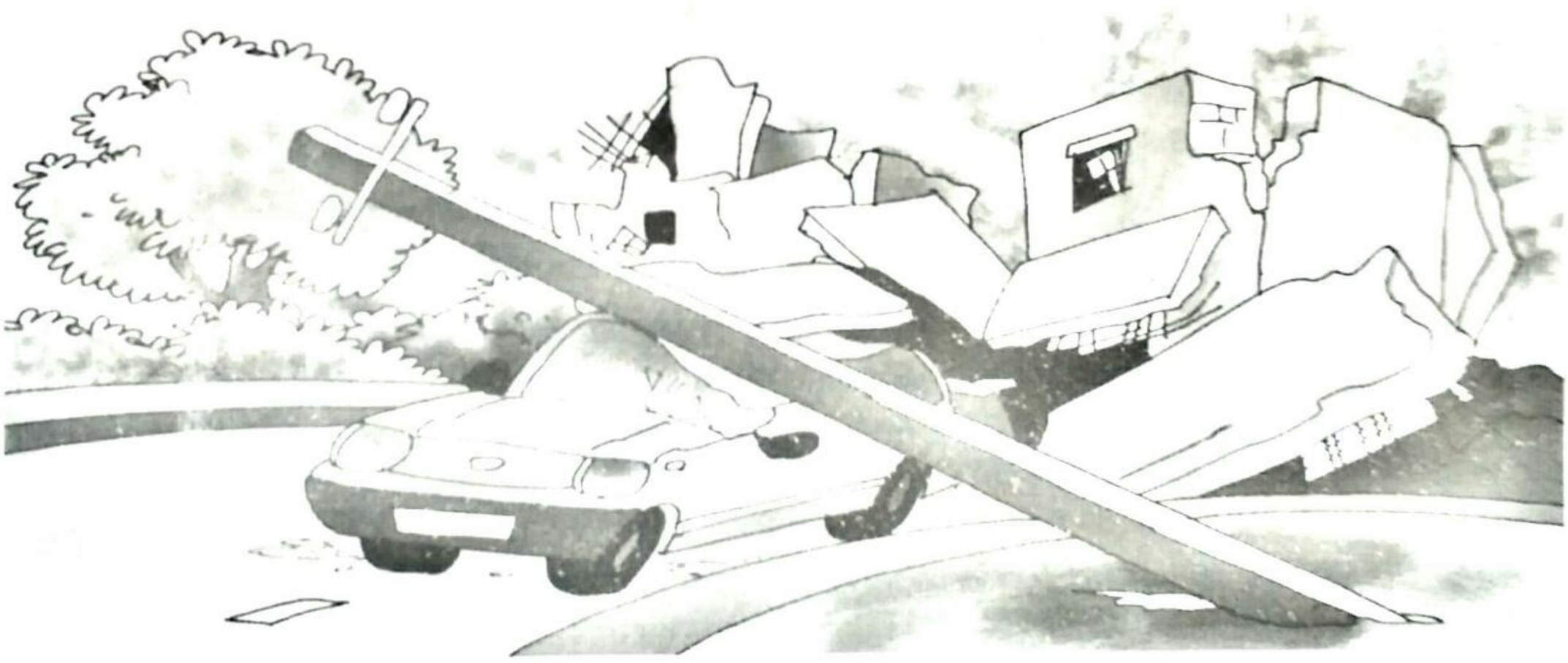

उत्खाताः–उत्पाटिताः (उखड़ गए)। **विशीर्णाः**–नष्टाः (नष्ट हो गए)। **निस्सन्तीभिः**–निर्गच्छन्तीभिः (निकलती हुई (से)। **दुर्वार**–दुर्बाध्य (रोकने में कठिन)। **महाप्लावनदृश्यम्**–भयानकप्लावनदृश्यम् (भयानक बाढ़ का दृश्य)। **क्षुत्क्षामकण्ठाः**–क्षधाकृशकण्ठाः (भूख से सूखे गले वाले)।

सरलार्थ–सन् 2001 ई. में गणतन्त्र दिवस समारोह पर जब पूरा भारत नृत्य-गीत-संगीत आदि के उल्लास (हर्ष) में मग्न था, तभी अकस्मात् गुजरात राज्य पूरी तरह व्याकुल, अस्त-व्यस्त, करुण चीखों से घिरा हुआ और आपदा से ग्रस्त हो गया। भूकम्प की भयंकर आपदा ने सारे गुजरात को विशेष रूप से कच्छ जिले को खण्डहरों में बदल दिया। भूकम्प का केन्द्र भुज नगर तो मिट्टी के खिलौने की भांति चकनाचूर कर गया। बहुमंजिले भवन क्षण-भर में धराशायी हो गए। बिजली के खम्भे उखड़ गए। घर की सीढ़ियाँ व रस्ते बिखरा गए। धरती दो भागों में बँट गई। धरती के अन्दर से निकलती हुई दुर्निवार (जिन्हें रोकना सम्भव न हो ऐसी) जलधाराओं से बाढ़ का दृश्य उपस्थित हो गया। हजारों प्राणी तो क्षण-भर में ही मर गए। टूटे हुए

Scanned by TapScanner

भवनों में दबे (फंसे) हुए हजारों दूसरे लोग सहायता के लिए करुण स्वर पुकार रहे थे। हा दैव! (अरे दुर्भाग्य!) भूख से सूखे (दुबले) हुए गले वाले कुछ बच्चे तो ईश्वर की कृपा से ही दो-तीन दिनों तक जीवित रह पाये।

इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छ भूकम्पस्य। पञ्चोत्तर द्विसहस्र ख्रीष्टाब्दे (2005 ईस्वीये वर्षे) अपि कश्मीर प्रान्ते पाकिस्तान देशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मात्कारणात् लक्षपरिमिताः जनाः अकालकालकवलिताः। पृथ्वी कस्मात्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमानाः बृहत्यः पाषाण– शिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनञ्च। तदैव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिसञ्चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या धरां पर्वतं वा विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूमभस्मावृतं जायते तदा गगनम्। सेल्सियश-ताप-मात्राया अष्टशताङ्कतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पार्श्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति।

शब्दार्थः– भैरव–भयङ्कर (भयानक)। **कालकवलिताः**–मृताः (मर गए)। **संस्खलनम्**–विचलनम् (स्खलन, स्थान से हटना)। **जनयति**–उत्पादयति (उत्पन्न करती है)। **क्वथयति**–तापयति (तपाती/उबालती है)। **विदार्य**–भित्वा (फाड़कर)। **धूमभस्मावृतम्**–धूमभस्माच्छादितम् (धुएँ और राख से ढका हुआ)। **तदुदरे (तत् + उदरे)**–तदन्ते (उसके पेट (गर्भ) में)। **समाविशन्ति**–अन्तर्गच्छन्ति, विलीयन्ते (समा जाती हैं)।

सरलार्थ–यह थी कच्छ के भूकम्प की भयंकर (भीषण) आपदा। सन् 2005 ई. में भी कश्मीर प्रांत में और पाकिस्तान में बहुत तेज भूकम्प आया था। जिस कारण से लगभग एक लाख लोग अकाल मौत को प्राप्त हो गए। भूमि क्यों काँपती है? इस विषय में वैज्ञानिक कहते हैं कि-पृथ्वी के आंतरिक भाग में स्थित बड़ी-बड़ी चट्टानें (प्लेटें) जब आपसी रगड़ से टूटती हैं तब भयंकर स्खलन (स्थान-परिवर्तन/सरकाव) और स्खलन से कम्पन उत्पन्न होता है। वही भयानक कम्पन पृथ्वी के ऊपरी तल पर आकर भयंकर कम्पन (तरंगें) पैदा करता है जिससे महाविनाश का दृश्य पैदा हो जाता है।

भूकम्प विशेषज्ञ कहते हैं कि ज्वालामुखी पर्वतों के विस्फोटों से भी भूकम्प उत्पन्न होते हैं। भूमि के भीतर स्थित अग्नि जब खनिज-मिट्टी-चट्टानों आदि को एक साथ दहकाती है तब वह सारा लावा बनकर अनिवारवीय गति (वेग) से धरती या पर्वत को फाड़कर बाहर निकालता है। तब आकाश धुएँ तथा राख से ढक जाता है। सेल्सियस ताप की मात्रा के 800 डिग्री होने पर लावा जब नदी के वेग (रफ़्तार) से बहता है तब पास में स्थित गाँव या शहर उसके पेट (गर्भ) में क्षणभर में ही समा जाते हैं।

निहन्यन्ते च विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृति समक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति। वस्तुतः शान्तानि एव पञ्चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

शब्दार्थः– निहन्यन्ते–परिहन्यन्ते (मारे जाते हैं)। **उद्गिरन्तः**–प्रकटयन्तः (उगलते हुए प्रकट करते हुए)। **उपशमनस्य**–शान्तेः (शान्ति का)। **वामनकल्पः**–वामनसदृशः (बौना)। **भूकम्परहस्यज्ञाः**–भूकम्पविशेषज्ञाः (भूकम्प विशेषज्ञ)। **निर्माय**–निर्माणंकृत्वा (बनाकर)। **पुञ्जीकरणीयम्**–संग्रहणीयम् (संग्रह (एकत्र) करना चाहिए)। **योगक्षेमाभ्याम्**–(योग और क्षेम की)। **कल्पन्ते**–कामयन्ते (कामना करते हैं)।

सरलार्थ–और विवश प्राणी मारे जाते हैं। ज्वाला को उगलते हुए ये पर्वत भी भयंकर भूकम्प उत्पन्न कर देते हैं।

यद्यपि भूकम्प भाग्य का प्रकोप है। इसे शान्त करने का कोई भी स्थायी उपाय दिखाई नहीं देता है। प्रकृति के सामने विज्ञान के घमण्ड वाला मानव आज भी बौना ही है फिर भी भूकम्प का रहस्य जानने वाला (वैज्ञानिक) कहते हैं कि बहुमंजिले भवनों का निर्माण नहीं करना चाहिए। बाँध बनाकर अत्यधिक मात्रा में नदी का जल भी एक स्थान पर सञ्चित नहीं करना चाहिए। अन्यथा असंतुलन के कारण भूकम्प पैदा हो सकते हैं। वस्तुतः पञ्चतत्त्व– 'पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश' शान्त रहकर ही भूतल का योग (अप्राप्त की प्राप्ति) तथा क्षेम (प्राप्त की रक्षा) कर सकते हैं। वे (पञ्चतत्व) ही अशांत होकर महाविनाश को पैदा करते हैं।

Scanned by TapScanner

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

एकोत्तर – एक + उत्तर।
तदाकस्मादेव – तदा + अकस्मात् + एव।
पर्याकुलम् – परि + आकुलम्।
विपन्नञ्च – विपन्नम् + च।
ध्वंसावशेषु – ध्वंस + अवशेषु।
क्षणेनैव – क्षणेन + एव।
विद्युद्दीप – विद्युत् + दीप।
भूमिगर्भादुपरि – भूमिगर्भात् + उपरि।
प्राणिनस्तु – प्राणिनः + तु।
सहस्त्रशेऽन्ये – सहस्त्रशः + अन्ये।
सहायतार्थम् – सहायता + अर्थम्।
शिशवस्तु – शिशवः + तु।
पञ्चोत्तर – पञ्च + उत्तरा।
पृथिव्या अन्तगर्भे – पृथिव्याः + अन्तः + गर्भे ।
शिला यदा – शिलाः + यदा।
कम्पनञ्च – कम्पनम् + च।
तदैव – तदा + एव।
धराया उपरि – धरायाः + उपरि।
अप्यागत्य – अपि + आगत्य।
विस्फोटैरपि – विस्फोटैः + अपि।
भूकम्पो जायत इति – भूकम्पः + जायते + इति।
विद्यमानोऽग्निर्यदा – विद्यमानः + अग्निः + यदा।
उपेत्य – उप + एत्य।
बहिर्निष्क्रामति – बहिः + निः + क्रामति।
धूमभस्मावृतम् – धूमभस्म + आवृतम्।
अष्टशताङ्कताम् – अष्टशत + अङ्कताम्।
उपगतोऽयम् – उपगतः + अयम्।
लावारसो यदा – लावारसः + यदा।
तदुदरे – तत् + उदरे।
उद्गिरन्त एते – उद्गिरन्तः + एते।
पर्वता अपि – पर्वताः + अपि।
यद्यपि – यदि + अपि।
प्रकोपो भूकम्पो नाम – प्रकोपः + भूकम्पः + नाम।
तस्योपशमनस्य – तस्य + उपशमनस्य।
कोऽपि – कः + अपि।
स्थिरोपायो दृश्यते – स्थिरः + उपायः + दृश्यते।
अद्यापि – अद्य + अपि।
गर्वितो मानवः – गर्वितः + मानवः।
वामनकल्प एव – वामनकल्पः + एव।
तथापि – तथा + अपि।
नैकस्मिन् – न + एकस्मिन्।
भूकम्पस्सम्भवति – भूकम्पः + सम्भवति।
तान्येव – तानि + एव।

संयोगः

समग्रमपिक – समग्रम् + अपि।
मग्नमासीत् – मग्नम् + आसीत्।
समस्तमपि – समस्तम् + अपि।
क्रीडनकमिव – क्रीडनकम् + इव।
इयमासीत् – इयम् + आसीत्।
तलमपि – तलम् + अपि।
समुत्पद्यते – सम् + उत्पद्यते।
सर्वमेव – सर्वम् + एव।
अङ्कतामुपगतः – अङ्कताम् + उपगतः।
समाविशन्ति – सम् + आविशन्ति।
ज्वालामुद्गिरन्तः – ज्वालाम् + उद्गिरन्तः।
समक्षमद्य – समक्षम् + अद्य।
जलमपि – जलम् + अपि।

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) समस्तराष्ट्रं कीदृक् उल्लासे मग्नम् आसीत्?
(ख) भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत्?
(ग) पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते?
(घ) समग्रो विश्वः कैः आतंकितः दृश्यते?
(ङ) केषां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते?
(च) कीदृशानि भवनानि धराशायीनि जायन्ते?

उत्तरम्–

(क) समस्तराष्ट्रं नृत्य-गीत-वादित्राणाम् उल्लासे मग्नम् आसीत्।
(ख) भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दु 'कच्छ' इति जनपदः आसीत्।
(ग) पृथिव्याः स्खलनात् महाकम्पनं जायते।
(घ) समग्रो विश्वः अशान्तपञ्चतत्त्वैः आतंकितः दृश्यते।
(ङ) ज्वालामुखपवर्तनां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते।
(च) बहुभूमिकानि भवनानि धराशायीनि जायन्ते।

2. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (स्थूल शब्दों को लेकर प्रश्न-निर्माण कीजिए।)

(क) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं **ध्वंसावशेषेषु** परिवर्तितवती।
(ख) **वैज्ञानिकाः** कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे, पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।
(ग) विवशाः प्राणिनः **आकाशे** पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।
(घ) **एतादृशी** भयावहघटना गढ़वालक्षेत्रे घटिता।

Scanned by TapScanner

(ङ) तदिदानीम् **भूकम्पकारणं** विचारणीयं तिष्ठति।

उत्तरम्–

(क) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं **केषं** परिवर्तितवती।
(ख) **के:** कथयन्ति यत् पृथिव्या: अन्तर्गर्भे, पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।
(ग) विवशा: प्राणिन: **क्व/कुत्र** पिपीलिका: इव निहन्यन्ते।
(घ) **कीदृशी** भयावहघटना गढ़वालक्षेत्रे घटिता।
(ङ) तदिदानीम् **किं** विचारणीयं तिष्ठति।

3. **'भूकम्पविषये' पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।** ('भूकम्प विषय' पर पाँच वाक्यों का एक अनुच्छेद लिखिए।)

उत्तरम्–

(क) भौगर्भिक-हलचलै: भूकम्प: जायते।
(ख) 'भूकम्प:' प्राकृतिकी आपद् अस्ति।
(ग) अयं हि महाविनाशकारी अस्ति।
(घ) मानव: भूकम्पनिवारणे अक्षम: अस्ति।
(ङ) अस्य विषये सार्वभौमिकी जागरूकता करणीया।

4. **कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं विधाय रिक्तस्थानानि पूरयत।** (कोष्ठकों में दी गई धातुओं में निर्देशानुसार परिवर्तन करके रिक्त स्थान पूरे कीजिए।)

(क) समग्रं भारतं उल्लासे मग्न: ..... (अस् + लट् लकारे)
(ख) भूकम्पविभीषिका कच्छजनपदं विनष्टं ..... (कृ + क्तवतु + ङीप्)
(ग) क्षणेनैव प्राणिन: गृहविहीना: ..... (भू + लङ्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
(घ) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां ..... (भू + लट्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
(ङ) मानवा: ..... यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं करणीयम् न वा? (पृच्छ् + लट्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
(च) नदीवेगेन ग्रामा: तदुदरे ..... (सम् + आ + विश् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष एक वचन)

उत्तरम्– (क) अस्ति, (ख) कृतवती, (ग) अभवन्, (घ) भवन्ति, (ङ) पृच्छन्ति, (च) समाविशेयु:।

5. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत।** (संधि/संधिविच्छेद कीजिए)

(अ) परसवर्णसन्धिनियमानुसारम् –

(क) किञ्च = ... + च (ख) ..... = नगरम् + तु
(ग) विपन्नञ्च = ... + ... (घ) ..... = किम् + नु
(ङ) भुजनगरन्तु = ... + ... (च) ..... = सम् + चय:

(आ) विसर्गसन्धिनियमानुसारम् (विसर्ग संधि नियम के अनुसार)

(क) शिशवस्तु = ... + ... (ख) ..... = विस्फोटै: + अपि
(ग) सहस्रशोऽन्ये = ... + अन्ये (घ) विचित्रोऽयम् = विचित्र: + ...
(ङ) ..... = भूकम्प: + जायते (च) वामनकल्प एव = ... + ...

उत्तरम्–

(अ) (क) किम्, (ख) नगरन्तु, (ग) विपन्नम् + च, (घ) किन्नु, (ङ) भुजनगरम्+तु, (च) सञ्चय:।
(आ) (क) शिशव: + तु, (ख) विस्फोटैरपि, (ग) सहस्रश:, (घ) अयम्, (ङ) भूकम्पो जायते, (च) वामनकल्प + एव।

6. **(अ) 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे विलोमपदानि, तयो: संयोगं कुरुत।** (स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तम्भ 'ख' में दिए गए विलोम शब्दों से संयोग कीजिए।)

क	**ख**
सम्पन्नम्	प्रविशन्तीभि:
ध्वस्तभवनेषु	सुचिरेणैव
निस्सरन्तीभि:	विपन्नम्
निर्माय	नवनिर्मित भवनेषु
क्षणेनैव	विनाश्य

Scanned by TapScanner

(आ)'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे समानार्थकपदानि तयोः संयोगं कुरुत। (स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तम्भ 'ख' में दिए गए समानार्थक शब्दों से संयोग कीजिए)

क	**ख**
पर्याकुलम्	नष्टाः
विशीर्णाः	क्रोधयुक्ताम्
उद्गिरन्तः	संत्रोट्य
विदार्य	व्याकुलम्
प्रकुपिताम्	प्रकटयन्तः

उत्तरम्–

(अ) विपन्नम्, नवनिर्मित-भवनेषु, प्रविशन्तीभिः, विनाश्य, सुचिरेणैव।

(आ) व्याकुलम्, नष्टाः, प्रकटयन्तः, संत्रोट्य, क्रोधयुक्ताम्।

7. **(अ) उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यययोः विभागं कुरुत।** (उदाहरण के अनुसार प्रकृति-प्रत्यय का विभाजन कीजिए।)

यथा– परिवर्तितवती – परि + वृत् + क्तवतु + ङीप् (स्त्री)

(क) धृतवान् – ....

(ख) हसन् – ....

(ग) विशीर्णा – वि + शस्त्र + क्त + ...

(घ) प्रचलन्ती – ..... + ... + शतृ + ङीप् (स्त्री)

(ङ) हतः – ....

(आ)पाठात् विचित्य समस्तपदानि लिखत। (पाठ से चुनकर समस्तपद लिखिए।)

(क) महत् च तत् कम्पनं = ...

(ख) दारुणा च सा विभीषिका = ...

(ग) ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु = ...

(घ) प्राक्तने च तस्मिन् युगे = ...

(ङ) महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन् = ...

उत्तरम्–

(अ) (क) धृ + क्तवतु, (ख) हस् + शतृ, (ग) शृ + क्त + टाप् (स्त्री.), (घ) प्र = चल् (ङ) हन् = क्त।

(आ) (क) महाकम्पनम्, (ख) दारुणविभीषिक, (ग) ध्वस्तभवनेषु, (घ) प्राग्युगे', (ङ) महाराष्ट्रे'

योग्यताविस्तारः

भूकम्प परिचय– भूमि का कम्पन भूकम्प कहलाता है। वह बिन्दु भूकम्प का उद्गम केन्द्रकहा जाता है, जिस बिन्दु पर कम्पन की उत्पत्ति होती है। कम्पन तरंग के रूप में विविध दिशाओं में आगे चलता है। ये तरंगें सभी दिशाओं में उसी प्रकार फैलती हैं जैसे किसी शान्त तालाब में पत्थर के टुकड़ों को फेंकने से तरंगें उत्पन्न होती हैं।

धरातल पर कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ भूकम्प प्रायः आते ही रहते हैं। उदाहरण के अनुसार– प्रशान्त महासागर के चारों ओर के प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गङ्गा, ब्रह्मपुत्र का तटीय भाग इन क्षेत्रों में अनेक भूकम्प आए जिनमें से कुछ तो अत्यधिक भयावह और विनाशकारी थे। सुनामी भी एक प्रकार का भूकम्पन ही है जिसमें भूमि के भीतर अत्यन्त गहराई से तीव्र कम्पन उत्पन्न होता है। यही कम्पन समुद्र के जल को काफी ऊँचाई तक तीव्रता प्रदान करता है। फलस्वरूप तटीय क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। **सुनामी का भीषण प्रकोप 20 सितम्बर 2004** को हुआ। जिसकी चपेट में भारतीय प्रायद्वीप सहित अनेक देश आ गये। क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इनपञ्चतत्वों में सन्तुलन बनाए रखकर प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है। इसके विपरीत असन्तुलित पञ्चतत्वों से सृष्टि विनष्ट हो सकती है?

भूकम्पविषये प्राचीनमतम्

प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्वग्रन्थेषु भूकम्पोल्लेखः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पाः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म।

Scanned by TapScanner

यथा–

वराहसंहितायाम्–

क्षितिकम्पमाहुरेके मह्यन्तर्जलनिवासिसत्त्वकृतम्
भूभारखिन्नदिग्गजनि:श्वास समुद्भवं चान्ये।
अनिलोऽनिलेन निहित: क्षितौ पतन् सस्वनं करोत्यन्ये
केचित् त्वदृष्टकारितमिदमन्ये प्राहुराचार्या:।।

मयूरचित्रे

कदाचित् भूकम्प: श्रेयसेऽपि कल्पते। एतादृशा: अपि उल्लेखा: अस्माकं साहित्ये समुपलभ्यन्ते यथा वारुणमण्डलमौशनसे–

प्रतीच्यां यदि कम्पेत वारुणे सप्तके गणे.
द्वितीययामे रात्रौ तु तृतीये वारुणं स्मृतम् ।
अत्र वृष्टिश्च महती शस्यवृद्धिस्तथैव च.
प्रज्ञा धर्मरताश्चैव भयरोगविवर्जिता: ।।

उल्काभूकम्पदिग्दाहसम्भव: शस्यवृद्धये ।
क्षेमारोग्यसुभिक्षायै वृष्टये च सुखाय च ।
भूकम्पसमा एव अग्निकम्प:, वायुकम्प:, अम्बुकम्प: इत्येवमऽन्येऽपि भवन्ति।

Scanned by TapScanner

एकादशः पाठः प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

पाठ परिचय–प्रस्तुत नाट्यांश संस्कृत के प्रख्यात नाटककार विशाखदत्त द्वारा प्रणीत मुद्राराक्षसम्' नामक नाटक के प्रथम अङ्क से समाकलित है। नन्दवंश का विनाश करके उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के लिए चाणक्य ने अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप किया किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई सूचना न दी। इस प्रकार वह (चन्दनदास) अपनी मित्रता पर दृढ़ रहता है। उसके मैत्री भाव से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिये भी सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिये तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद्-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह घटना सदैव उदाहरणीय व अनुकरणीय है।

चाणक्यः – **वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।**

शिष्यः – **तथेति** *(निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य)* **इतः इतः श्रेष्ठिन्**
(उभौ परिक्रामतः)

शिष्यः – *(उपसृत्य)* **उपाध्याय! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।**

चन्दनदासः – **जयत्वार्यः**

चाणक्यः – **श्रेष्ठिन्! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः?**

चन्दनदासः – *(आत्मगतम्)* **अत्यादरः शटनीयः।** *(प्रकाशम्)* **अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।**

चाणक्यः – **भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।**

चन्दनदासः – **आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।**

चाणक्यः – **भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवताम-परिक्लेश एव।**

चन्दनदासः – *(सहर्षम्)* **आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।**

चाणक्यः – **भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।**

चन्दनदासः – **आज्ञापयतु आर्यः।**

चाणक्यः – **राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।**

चन्दनदासः – **आर्य! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते?**

चाणक्यः – **भवानेव तावत् प्रथमम्।**

चन्दनदासः – *(कर्णौ पिधाय)* **शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः?**

शब्दार्थः– सुहृद्–मित्रम्, सखा (मित्र)। **मणिकारश्रेष्ठिनम्**–रत्नविक्रेता, रत्नव्यापारी (मणियों (रत्नों) का व्यापारी, **जौहरी**)। **इदानीम्**–अधुना (अब)। **निष्क्रम्य**–निर्गत्य (निकलकर)। **उपसृत्य**–उपगम्य, उपगत्य (पास जाकर)। **प्रचीयन्ते**–वर्धन्ते (बढ़ते हैं)। **संव्यवहाराणाम्**–व्यापाराणाम् (व्यापारों का)। **आत्मगतम्**–स्वगतम् (मन-ही-मन)। **प्रकाशम्**–स्पष्टतया (स्पष्ट वाणी में)। **अखण्डिता**–निर्बाधा (बाधा रहित)। **वणिज्या**–वाणिज्यम्, व्यापारः (व्यापार)। **प्रीताभ्यः**–प्रसन्नाभ्यः (प्रसन्न लोगों के प्रति)। **प्रतिप्रियम्**–प्रत्युपकारम् (उपकार के बदले किया गया उपकार)। **कियत्**–कतिमात्रम् (कितना)। **अर्थसम्बन्धः**–धन सम्बन्धः (धन का सम्बन्ध)। **अपरिक्लेशः**–दुःखाभावः (क्लेश (दुःख) का अभाव)। **प्रष्टव्याः**–प्रष्टं योग्याः (पूछने योग्य)। **अवरुद्धवृत्तिः**–अनुकूलवृत्तिः (अनुकूल स्वभाव वाला)। **अधन्यः**–निर्भाग्यः (अभागा)। **अवगम्यते**–अवबुध्यते, ज्ञायते (जाना जाता है)। **पिधाय**–आच्छाद्य, आवृत्य (बन्द करके)।

सरलार्थ–

चाणक्य – हे वत्स! रत्नकार (जौहरी) चन्दनदास को अभी देखना चाहता हूँ।

Scanned by TapScanner

शिष्य – ठीक है (निकलकर चन्दनदास के साथ प्रवेश करके) इधर से सेठ जी इधर से (दोनों घूमते हैं)।

शिष्य – (पास जाकर) हे आचार्य! यह है सेठ चन्दनदास।

चन्दनदास – आर्य की जय हो।

चाणक्य – हे सेठ! स्वागत है तुम्हारा। क्या व्यापार की बढ़ोतरी हो रही है?

चन्दनदास – (मन-ही-मन) अधिक आदर शंका के योग्य होता है। (स्पष्ट शब्दों में) और क्या। आर्य की कृपा से निर्बाध है मेरा व्यापार।

चाणक्य – हे सेठ! प्रसन्न जनों से उपकार का बदला चाहा करते हैं राजा लोग।

चन्दनदास – आज्ञा दीजिये आर्य! क्या और कितना हमें आदेश किया जा रहा है? ऐसा।

चाणक्य – हे सेठ! यह चन्द्रगुप्त का राज्य है नन्द का नहीं। नन्द के ही धन का सम्बन्ध प्रसन्नता उत्पन्न करता है। चन्द्रगुप्त के (धन का सम्बन्ध तो) आपके लिए दु:ख का अभाव ही है।

चन्दनदास – (हर्ष के साथ) आर्य! मैं अनुगृहीत हूँ।

चाणक्य – हे सेठ! और वह क्लेश (दु:ख) का अभाव कैसे उत्पन्न होता है? हमें आपसे यही पूछना है।

चन्दनदास – आज्ञा दीजिये आर्य।

चाणक्य – राजा के प्रति अनुकूल हो जाओ।

चन्दनदास – हे आर्य! कौन अभागा राजा के विरुद्ध है? यह आर्य को ज्ञात है?

चाणक्य – पहले तो आप ही हैं।

चन्दनदास – (दोनों कान बन्द करके) पाप शांत हो, पाप शांत हो। घास-फूँस का अग्नि के साथ विरोध कैसा है?

चाणक्य: – अयमीदृशो विरोध: यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।

चन्दनदास: – आर्य! अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्याय निवेदितम्।

चाणक्य: – भो श्रेष्ठिन्! अलमाशङ्क्या। भीता: पूर्वराजपुरुज़ा: पौराणामिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदास: – एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्य: – पूर्वम् 'अनृतम्', इदानीम् "आसीत्" इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदास: – आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षस्य गृहजन इति।

चाणक्य: – अथेदानीं क्व गत:?

चन्दनदास: – न जानामि।

चाणक्य: – कथं न ज्ञायते नाम? भो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं तत्प्रतिकार:।

Scanned by TapScanner

चन्दनदासः – **आर्य! किं मे भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्?**

चाणक्यः – **चन्दनदास! एष एव ते निश्चयः?**

चन्दनदासः – **बाढम्, एष एव मे निश्चयः।**

चाणक्यः – *(स्वगतम्)* **साधु! चन्दनदास साधु।**
सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥

शब्दार्थः– अपथ्यकारिणः–अपकारिणः (अहित करने वाले)। **अलीकम्**–असत्यम्, मिथ्या (झूठ)। **अनार्येण**–दुष्टेन (दुष्ट के द्वारा)। **पौराणाम्**–नगरवासिनाम् (पुरवासियों का)। **निक्षिप्य**–स्थापयित्वा, संस्थाप्य (डालकर, रखकर)। **देशान्तरम्**–अन्यदेशम् (दूसरे देश (स्थान) पर)। **व्रजन्ति**–गच्छन्ति, यान्ति (जाते हैं)। **प्रच्छादनम्**–आच्छादनम् (छिपाव, छिपाना)। **अस्मद्गृहे**–अस्मद्गेहे (हमारे घर में)। **अमात्यः**–मन्त्री, सचिवः (मन्त्री)। **अनृतम्**–असत्यम् (झूठ)। **प्रतिकारः**–प्रतिशोधः (बदला)। **सन्तम्**–निवसतः (रहने वाले)। **बाढम्**–आम् (हाँ)। **स्वगतम्**–आत्मगतम् (मन-ही-मन)। **सुलभेषु**–सरलता से मिलने पर। **परसंवेदने**–परसमर्पणे (दूसरों को देने पर)। **दुष्करम्**–कठिनम् (कठिन)। **जने**–संसारे, लोके (संसार में)।

सरलार्थ–

चाणक्य – यह ऐसा विरोध है कि तुम आज भी राजा का अहित करने वाले अमात्य राक्षस के घर वालों को अपने घर में रखते हो।

चन्दनदास – आर्य! यह झूठ है। यह किसी दुष्ट ने आपको बताया है।

चाणक्य – हे सेठ! आशङ्का मत करो। डरे हुए पूर्वराजकर्मचारी नगरवासियों के चाहने पर भी घरों में घरवालों को रखकर दूसरे देश चले जाते हैं। फिर उन्हें छिपाना ही दोष को उत्पन्न करता है।

चन्दनदास – अच्छा ऐसा है। उस समय हमारे घर में अमात्य राक्षस के घर के लोग थे। ऐसा।

चाणक्य – पहले 'झूठ', अब 'थे' ये परस्पर विरोधी बातें हैं।

चन्दनदास – आर्य! उस समय हमारे घर में अमात्य राक्षस के घर वाले थे। ऐसा।

चाणक्य – और अब कहाँ चले गए?

चन्दनदास – मैं नहीं जानता हूँ।

चाणक्य – क्यों नहीं जानते हैं? हे सेठ! सिर पर भय है, (और) बहुत दूर है वह प्रतिकार (प्रतिशोध, बदला)।

चन्दनदास – आर्य! क्या मुझे भय दिखा रहे हैं? अमात्य राक्षस के परिजनों के मेरे घर में होने पर भी नहीं देता तो (उनके) न होने पर क्या (दे सकता हूँ)?

चाणक्य – चन्दनदास! क्या यही तुम्हारा निश्चय है?

चन्दनदास – हाँ, यही मेरा निश्चय है।

चाणक्य – (मन-ही-मन) अच्छा है! चन्दनदास, अच्छा है।
दूसरों की वस्तु को समर्पित करने पर बहुत धन प्राप्त होने की स्थिति में भी दूसरों की वस्तु की सुरक्षा रूपी कठिन कार्य को एक शिवि को छोड़कर तुम्हारे अलावा दूसरा कौन कर सकता है?

व्याकरणम्

सन्धिच्छेदः

प्राणेभ्योऽपि – प्रणेभ्यः + अपि।
तथेपि – तथा + अपि।
उपाध्यायः – उप + अध्यायः।
जयत्वार्यः – जयतु + आर्यः।
स्वागतम् – सु + आगतम्।
अत्यादरः – अति + आदरः।
अस्मज्जनादिष्यते – अस्मत् + जन + आदिष्यते।
नन्दस्यैव – नन्दस्य + एव।
अपरिक्लेश एव – अपरिक्लेशः + एव।
अनुगृहीतोऽस्मि – अनुगृहीतः + अस्मि।
चापरिक्लेशः – च + अपरिक्लेशः।
वृत्तिर्भव – वृत्तिः + भव।
पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति – पुनः + अधन्यः + राज्ञः + विरुद्धः + इति।

Scanned by TapScanner

आर्येणावगम्यते – आर्येण + अवगम्यते।
कीदृशस्तृणानाम् – कीदृशः + तृणानाम्।
अद्यापि – अद्य + अपि।
राजापथ्यकारिणोऽमात्य – राजा + अपथ्यकारिणः + अमात्य।
केनाप्यनार्येण – केन + अपि + अनार्येण।
ततस्तत् – ततः + तत्।
आसीदस्मद्गृहे – आसीत् + अस्मत् + गृहे।
गृहजन इति – गृहजनः + इति।
अथेदानीम् – अथ + इदानीम्।
पुनरसन्तम् – पुनः + असन्तम्।
सुलभेष्वर्थलाभेषु – सुलभेष + अर्थलाभेषु।

संयोगः

कुर्यादिदानीम् – कुर्यात् + इदानीम्।
दासमिदानीम् – दासम् + इदानीम्।
द्रष्टमिच्छामि – द्रष्टुम् + इच्छामि।
प्रियमिच्छन्ति – प्रियम् + इच्छन्ति।
राज्यमिदम् – राज्यम् + इदम्।
प्रीतिमुत्पादयति – प्रीतिम् + उत्पादयति।
भवतामपरिक्लेशः – भवताम् + अपरिक्लेशः।
कथमाविर्भवति – कथम् + आविर्भवति।
भवानेन – भवान् + एव।
तृणानामग्निना – तृणानाम् + अग्निना।
अयमीदृशः – अयम् + ईदृशः।
त्वमद्य – तव + अद्य।
अलीकमेतत् – अलीकम् + एतत्।
अनार्येण – अन् + आर्येण।
अलमाशङ्कया – अलम् + आशङ्कया।
पौराणामिच्छतामपि – पौराणाम् + इच्छताम् + अपि।
दोषमुत्पादयति – दोषम् + उत्पादयति।
सन्तमपि – सन्तम् + अपि।

अभ्यासः

1. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए।)

(क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म?
(ख) तृणानां केन सह विरोधः अस्ति?
(ग) कः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति?
(घ) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?
(ङ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?
(च) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वाणिज्या अखण्डिता?

उत्तरम्–

(क) चन्दनदासः अमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म।
(ख) तृणानां अग्निना सह विरोधः अस्ति।
(ग) चाणक्यः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति।
(घ) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना शिविना सह कृता।
(ङ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं राजानः इच्छन्ति।
(च) चन्द्रगुप्तस्य प्रसादेन चन्दनदास्य वाणिज्या अखण्डिता।

2. **स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।** (स्थूल शब्दों के आधार पर प्रश्न-निर्माण कीजिए।)

(क) **शिविना** विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्।
(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः **सुहृत**।
(ग) **आर्यस्य** प्रसादेन में वाणिज्या अखण्डिता।
(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः **राजानः** प्रतिप्रियमिच्छन्ति।
(ङ) **तृणानाम्** अग्निना सह विरोधो भवति।

उत्तरम्–

(क) **केन** विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्?
(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः **कः**?
(ग) **कस्य** प्रसादेन मे वाणिज्या अखण्डिता?
(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः **के** प्रतिप्रियमिच्छन्ति?
(ङ) **केषाम्** अग्निना सह विरोधो भवति?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत।** (निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।)

(क) 'अखण्डिता में वणिज्या'-अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?
(ख) पूर्वम् 'अनृतम्' इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने-अस्मात् वाक्यात् 'अधुना' इति पदस्य समानार्थकपदं चित्वा लिखत।
(ग) 'आर्य! किं मे भयं दर्शयसि' अत्र 'आर्य' इति सम्बोधनपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(घ) 'प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?
(ङ) तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

उत्तरम्– (क) अखण्डिता, (ख) इदानीम्, (ग) चाणक्याय, (घ) राजानः, (ङ) गृहे

Scanned by TapScanner

4. **निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत।** (निर्देशानुसार संधि/संधिविच्छेद कीजिए)

(अ) यथा– क: + अपि – कोऽपि

प्राणेभ्य: + अपि – .....

..... + अस्मि – सज्जोऽस्मि।

आत्मन: + ... – आत्मनोऽधिकारसदृशम्

(आ) यथा– सत् + चित् – सच्चित्

शरत् + चन्द्र: – .....

कदाचित् + च – .....

उत्तरम्– (अ) प्राणेभ्योऽपि, सज्ज:, अधिकारसदृशम्। (आ) शरच्चन्द्र:, कदाचिच्च।

5. **अधोलिखितवाक्येषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत।** (निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए।)

यथा– प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजान:। (एकवचने)

प्रतिप्रियमिच्छति राजा।

(क) स: प्रकृते: शोभां पश्यति (बहुवचने)

(ख) अहं न जानामि। (मध्यमपुरुषैकवचने)

(ग) त्वं कस्य गृहजनं स्वगृहेरक्षसि? (उत्तमपुरुषैकवचने)

(घ) क: इदं दुष्करं कुर्यात्? (प्रथमपुरुषबहुवचने)

(ङ) चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छामि। (प्रथमपुरुषैकवचने)

(च) राजपुरुषा: देशान्तरं व्रजन्ति। (प्रथमपुरुषैकवचने)

उत्तरम्–

(क) ते प्रकृते: शोभां पश्यति। (बहुवचने)

(ख) त्वं न जानासि। (मध्यमपुरुषैकवचने)

(ग) अहं कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षामि? (उत्तमपुरुषैकवचने)

(घ) के इदं दुष्करं कुर्यु:? (प्रथमपुरुषबहुवचने)

(ङ) चन्दनदास: द्रष्टुमिच्छाति। (प्रथमपुरुषैकवचने)

(च) राजपुरुष: देशान्तरं व्रजति। (प्रथमपुरुषैकवचने)

6. **कोष्ठकेषु दत्तयो: पदयो: शुद्धं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत।** (कोष्ठकों में दिए गए शब्दों से शुद्ध विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

(क) ..... विना इदं दुष्करं क: कुर्यात्। (चन्दनदासस्य / चन्दनदासेन)

(ख) ..... इदं वृत्तान्तं निवेदयामि। (गुरवे / गुरो:)

(ग) आर्यस्य ..... अखण्डिता मे वणिज्या। (प्रसादात् / प्रसादेन)

(घ) अलम् ..... । (कलहेन / कलहात्)

(ङ) वीर: ..... बालं रक्षति। (सिंहेन / सिंहात्)

(च) ..... भीत: मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण / कुक्कुरात्)

(छ) छात्र: ..... प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम् / आचार्येण)

उत्तरम्– (क) चन्दनदासेन, (ख) गुरवे, (ग) प्रसादेन, (घ) कलहेन, (ङ) सिंहात्, (च) कुक्कुरात्, (छ) आचार्य।

7. **अधोदत्तमञ्जूषात: समुचितपदानि गृहीत्वा विलोमपदानि लिखत।** (नीचे दी गई मंजूषा से उचित शब्द चुनकर विलोम शब्द लिखिए।)

आदर: असत्यम् गुण: पश्चात् तदानीम् तत्र

(क) अनादर: .....

(ख) दोष: .....

(ग) पूर्वम् .....

(घ) सत्यम् .....

(ङ) इदानीम् .....

(च) अत्र .....

उत्तरम्– आदर:, गुण:, पश्चात्, असत्यम्, तदानीम्, तत्र।

8. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत।** (उदाहरण का अनुसरण करके निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके पाँच वाक्यों की रचना कीजिए।)

यथा निष्क्रम्य– शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(क) उपसृत्य .....

(ख) प्रविश्य .....

(ग) द्रष्टुम् .....

(घ) इदानीम् .....

(ङ) अत्र .....

Scanned by TapScanner

उत्तरम्–

(क) सः मातरम् **उपसृत्य** प्रणमति।
(ग) अहं सर्पं **द्रष्टुम्** इच्छति।
(ङ) **अत्र** मनोहरः तडागः अस्ति।
(ख) आचार्यः कक्षां **प्रविश्य** पाठयति।
(घ) सः **इदानीं** खेलति।

योग्यताविस्तारः

कविपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' इति नाम्नः नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्त आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्यपिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवीं प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मावलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

ग्रन्थपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाटेषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यराजनीतिककौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम् कूटनीतीनाम् निदर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

भावविस्तारः

चाणक्य– चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव 'कौटिल्य' इति नाम्ना प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व-जीवने उपयोगाय च अयं 'कौटिल्यः' इत्यपि कथ्यते।

चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् 'चाणक्यः' इति नाम्ना स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञःआसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तं "अर्थशास्त्रम्" इतिअतिमहत्त्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

चन्द्रगुप्तमौर्यः– चन्द्रगुप्तः महापद्मनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शनेअनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

राक्षसः– नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुरः प्रधानामात्यः आसीत्।

चन्दनदासः– कुसुमपुर नाम्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमं पात्रं मित्रञ्च आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवार नगरात् बहिरगच्छत्।

भाषिक विस्तारः

1. **पृथक् और विना शब्दों के योग में द्वितीया तृतीया और पंचमी तीनों विभक्तियों का प्रयोग–**

यथा– जलं विना जीवनं न सम्भवति। द्वितीया
जलेन विना जीवनं न सम्भवति। तृतीया
जलात् विना जीवनं न सम्भवति। पंचमी
परिश्रमं पृथक् नास्ति सुखम्। द्वितीया
परिश्रमेण पृथक् नास्ति सुखम्। तृतीया
परिश्रमात् पृथक् नास्ति सुखम्। पंचमी

2. **अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः**

अत्यादरः **शङ्कनीयः**
जन्तुशाला **दर्शनीया**
याचकेभ्यः दानं **दानीयम्**
वेदमन्त्राः **स्मरणीयाः**
पुस्तकमेलापके पुस्तकानि **क्रयणीयानि।**

(क) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति।
(ख) अनीयर् प्रत्यये 'अनीय' इति अवशिष्यते।
(ग) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।

Scanned by TapScanner

यथा–पुँल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
पठनीय:	पठनीया	पठनीयम्

इनके रूप क्रमश: देववत्, लतावत् तथा फलवत् चलेगें।

3. **उभ सर्वनामपदम्**

पुँल्लिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे
उभौ	उभे	उभे
उभौ	उभे	उभे
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभयो:	उभयो:	उभयो:
उभयो:	उभयो:	उभयो:

Scanned by TapScanner

द्वादशः पाठः

अन्योक्तयः

पाठ परिचय–'अन्योक्ति' का अर्थ है–किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा करना। यह अप्रत्यक्ष रूप से अथवा किसी बहाने से की जाती है। जब किसी प्रतीक या माध्यम से किसी के गुण की प्रशंसा या दोष की निन्दा की जाती है, तब वह पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य होती है। प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही सात अन्योक्तियों का सङ्कलन है जिनमें राजहंस, कोकिल, मेघ, मालाकार, सरोवर तथा चातक के माध्यम से मानव को सद्वृत्तियों एवं सत्कर्मों के प्रति प्रवृत्त होने का संदेश दिया गया है। ये हमारे लिए अत्यधिक प्रेरक होती हैं तथा मनोहारिणी भी।

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् ।
न सा बकसहस्त्रेण परितस्तीरवासिना ॥1॥

अन्वयः– एकेन राजहंसेन सरसः या शोभा भवेत्। परितः
तीरवासिना बकसस्त्रेण सा (शोभा) न (भवति)॥

शब्दार्थः– सरसः–तडागस्य, सरोवरस्य (तालाब की)। **बकसहस्रेण**–दीर्घजङ्घेन, मीनधातिना, तापसेन, दांभिकेन (हज़ारों बगुलों के द्वारा)। **परितः**–सर्वतः, अभितः (सब (चारों) ओर से)। **तीरवासिना**– तटवासिना (तटवासी से (के द्वारा)।

व्याख्या–एक राजहंस के द्वारा तालाब की जो शोभा होती है। (तालाब के) चारों ओर हज़ारों बगलों से भी वह (शोभा) नहीं होती है।

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि ।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन कने भवितासि कृतोपकारः ॥2॥

अन्वयः–यत्र भवता मृणालपटली भुक्ता, अम्बूनि निपीतानि नलिनानि निषेवितानि रे राजहंस! तस्य सरोवरस्य केन कृत्येन कृतोपकारः भविता असि, वदा॥

शब्दार्थः– भुक्ता–सेविता (सेवन की गई)। **मृणालपटली**–कमलनालसमूहः (कमल डण्डी का समूह)। **भवता**–त्वया (आपके द्वारा)। **निपीतानि**–सम्यक् पीतानि (भली भाँति पीए गए)। **अम्बूनि**–वारीणि, जलानि (जल)। **नलिनानि**–कमलानि, पद्मानि (कमलों को)। **निषेवितानि**–भुक्तानि, सेवितानि (सेवन किए गए)। **कृयेन**–कार्येण (कार्य से)। **भविता**–भविष्यति (होगा)। **कृतोपकारः**–प्रत्युपकारी (उपकार किया हुआ, प्रत्युपकार करने वाला)।

व्याख्या–(हे राजहंस!) जहाँ आपके द्वारा कमलनाल के समूह को सेवन किया गया, जल पीया गया, कमलों का सेवन किया गया। हे राजहंस! उस सरोवर का किस कार्य के द्वारा प्रत्युपकार होगा? तुम बताओ।

तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाघ,
मालाकार! व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां,
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन ॥3॥

अन्वयः–हे मालाकार! भीमभानौ निदाघे अल्पैः तौयैः अपि भवता करुणया अस्य तरोः या पुष्टिः व्यरचि। वाराम् प्रावृषेण्येन विश्वतः धारासारान् अपि विकिरता वारिदेन इह जनयितुम् सा (पुष्टिः) किम् शक्या॥

शब्दार्थः– तोयैः–जलैः, वारिभिः (जल से)। **अल्पैः**–न्यूनैः (थोड़े से (के द्वारा)। **भीमभानौ**–ग्रीष्मकाले, ग्रीष्मतौं (ग्रीष्म ऋतु में)। **निदाघे**–तपने, ग्रीष्मे (तेज धूप में, गर्मी में)। **मालाकार!**–हे मालिन्! (हे माली!)। **व्यरचि**–कृता (की गई)। **पुष्टिः**–पोषणम्, पुष्टता, वृद्धिः (पोषण)। **जनयितुम्**–उत्पादयितुम् (उत्पन्न करने के लिए)। **इह**–अत्र, इहलोके (यहाँ, इस लोक में)। **प्रावृषेण्येन**–वर्षाकालिकेन (वर्षाकालिक से (के द्वारा)। **वाराम्**–जलों के (जलानाम्)। **धारा-आसारान्**–धाराप्रवाहान् (धाराओं का प्रवाह)। **विकिरता**–वर्षयता (बरसाते (छिड़कते) हुए)। **विश्वतः**–परितः, सर्वतः (सब ओर)। **वारिदेन**–जलदेन, मेघेन (बादल से (के द्वारा)।

Scanned by TapScanner

व्याख्या–हे माली! भीषण ग्रीष्मकाल की गरमी से थोड़े से ही जल द्वारा आपके द्वारा करुणापूर्वक इस वृक्ष का जो पोषण किया गया। क्या वर्षाकालीन जल के, चारों ओर से, धाराओं को बरसाने से, बादल के द्वारा, वह पोषण किया जा सकता है?

आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गाः,
भृङ्गा रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते ।
सङ्कोचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो,
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु ॥4॥

अन्वयः–पतङ्गाः परितः अम्बरपथम् आपेदिरे, भृङ्गाः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते। सरः त्वयि सङ्कोचम् अञ्चति, हन्त, दीनदीनः मीनः नु कतमां गतिम् अभ्युपैतु॥

शब्दार्थः– **आपेदिरे**–प्राप्तवनः, अवाप्नुवन् (पा लिए)। **अम्बरपथम्**–गगनमार्गम् (आकाश मार्ग को)। **परितः**–सर्वतः, विश्वतः (सब ओर)। **पतङ्गाः**–खगाः, खेचराः, पक्षिणः (पक्षी)। **भृङ्गाः**–भ्रमराः (भँवरे, भौंरे)। **रसालमुकुलानि**–आम्रकलिकानि (आम के बौर (मंजरियों) को)। **सङ्कोचम् अञ्चति**–संकुचिते (संकुचित होने पर)। **मीनः**–मत्स्यः, क्षषः (मछली)। **हन्त**–अरे, भोः खेदम् (खेद हे)। **अभ्युपैतु**–प्राप्नोतु (प्राप्त करे)।

व्याख्या–पक्षी आकाश में चारों ओर भटक रहे हैं। भौंरे आम की मञ्जरियों की शरण लेते हैं। हे तालाब! कष्ट है, तुम्हारे संकुचित होने (जल घटने) पर बेचारी मछली किस गति को पावे?

एक एव खगो मानी वने वसति चातकः ।
पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम् ॥5॥

अन्वयः–एक एव मानी खगः चातकः वने वसति। वा पिपासितः म्रियते पुरन्दरम् याचते वा॥

शब्दार्थः– **खगः**–पक्षी, खेचरः (पक्षी)। **मानी**–अहंकारी (अभिमानी)। **पिपासितः**–पिपासुः, तृषार्त्तः, तर्षितः (प्यासा)। **याचते**–प्रार्थयते (माँगता है)। **पुरन्दरम्**–इन्द्रम्, सुरपतिम्, सुरेशम् (इन्द्र को)।

व्याख्या–(अकेला) एक ही स्वाभिमानी पक्षी वन में रहता है। वह या तो प्यासा ही मर जाता है या (केवल) इन्द्र से याचना करता है।

आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त–
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि ।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा,
रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः ॥6॥

अन्वयः–तपनोष्णतप्तम् पर्वतकुलम् आश्वास्य उद्दादावविधुराणि काननानि च (आश्वास्य; नानानदीनदशतानि पूरयित्वा च हे जलद! यत् रिक्तः असि तव सा एव उत्तमा श्रीः॥

शब्दार्थः– **आश्वास्य**–समाश्वस्य (सन्तुष्ट करके)। **पर्वतकुलम्**–पर्वतसमूहम् (पर्वतों के समूह को)। **तएनोष्णतप्तम्**–सूर्यातपतप्तम् (सूर्य की गर्मी से तपे हुए को)। **उद्दामःदाव-विधुराणि**–उन्नतवृक्षरहितानि (ऊँचे पेड़ों से रहित को)। **नाना-नदी-नद-शतानि**–अनेकनदीनदशतानि (अनेक नदियों व सैकड़ों नदों (नालों) को। **काननानि**–वनानि (वन, जंगल)। **जलद!**–मेघ!, वारिद! (हे मेघ)। **श्रीः**–शोभा, कान्तिः (शोभा, लक्ष्मी)।

व्याख्या–सूर्य की गरमी से तपे हुए पर्वत समूह (को) और ऊँचे वृक्षों से रहित वनों को (जल से) आश्वस्त करके अनेक नदियों व सैकड़ों नदों (नालों) को भरकर हे मेघ! तुम जो रिक्त (खाली) हो गए हो यही तुम्हारी उत्तम शोभा (निधि) है।

रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता–
मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥7॥

अन्वयः–रे रे मित्र चातक! सावधानमनसा क्षणं श्रूयताम्, गगने हि बहवः अम्भोदाः सन्ति, सर्वे अपि एतादृशाः न (सन्ति) केचित् धरिणीं वृष्टिभिः आर्द्रयन्ति, केचिद् वृथा गर्जन्ति, (त्वम्) यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः दीनं वचः मा ब्रूहि॥

शब्दार्थः– **सावधानमनसा**–ध्यानेन (ध्यान से)। **अम्भोदाः**–जलदाः, मेघाः (बादल)। **बहवः**– अनेके (अनेक)। **गगने**–आकाशे, नभसि (आकाश में)। **आर्द्रयन्ति**–क्लेदयन्ति (जल से भिगोते हैं)। **वसुधाम्**–धराम् (धरती को)। **वृथा**–व्यर्थम् (बेकार)। **पुरतः**–समक्षम्, अग्रे (सामने, आगे)। **ब्रूहि**–वद (बोलो)।

Scanned by TapScanner

(ङ) सावधानं च तत् मनः, तेन = ...

उत्तरम्– (क) राजहंसः, (ख) भीमभानौ, (ग) अम्बरपथम्, (घ) उत्तमश्रीः, (ङ) सावधानमनसा।

7. **उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखिताभिः धातुभिः सह यथानिर्दिष्टान् प्रत्ययान् संयुज्य शब्दरचनां कुरुत।** (उदाहरण अनुसार निम्नलिखित धातुओं के साथ यथानिर्दिष्ट प्रत्यय जोड़कर शब्द रचना कीजिए।)

धातुः	क्त्वा	क्तवतु	तव्यत्	अनीयर्
(क) पठ्	पठित्वा	पठितवान्	पठितव्यः	पठनीयः
(ख) गम्	.....	.....	.....	.....
(ग) लिख	.....	.....	.....	.....
(घ) कृ	.....	.....	.....	.....
(ङ) ग्रह्	.....	.....	.....	.....
(च) नी	.....	.....	.....	.....

उत्तरम्–

(ख) गम्	गत्वा	गतवान्	गन्तव्यः	गमनीयः
(ग) लिख	लिखित्वा	लिखितवान्	लेखितव्यः	लेखनीयः
(घ) कृ	कृत्वा	कृतवान्	कर्तव्यः	करणीयः
(ङ) ग्रह्	गृहीत्वा	गृहीतवान्	ग्रहीतव्यः	ग्रहणीयः
(च) नी	नीत्वा	नीतवान्	नेतव्यः	नयनीयः

योग्यताविस्तारः

पाठपरिचयः

अन्येषां कृते या उक्तयः कथ्यन्ते ता उक्तयः (अन्योक्तयः) अत्र पाठे सङ्कलिता वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे षष्ठश्लोकम् सप्तमश्लोकम् च अतिरिच्य ये श्लोकाः सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य 'भामिनीविलास' इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। षष्ठः श्लोकः महाकवि माघस्य 'शिशुपालवधम्' इति महाकाव्यात् गृहीतः अस्ति। सप्तमः श्लोकः महाकविभर्तृहरेः नीतिशतकात् उद्धृतः अस्ति।

कविपरिचयः

पण्डितराजजगन्नाथः संस्कृतसाहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च कविः आसीत्। सः शाहजहाँ नामकेन मुगल शासकेन स्वराजसभायां सम्मानितः। पण्डितराजजगन्नाथस्य त्रयोदश कृतयः प्राप्यन्ते।

(1) गङ्गालहरी (2) अमृतलहरी (3) सुधालहरी (4) लक्ष्मीलहरी (5) करुणालहरी (6) आसफविलासः (7) प्राणाभरणम् (8) जगदाभरणम् (9) यमुनावर्णनम् (10) रसगङ्गाधरः (11) भामिनीविलासः (12) मनोरमाकुचमर्दनम् (13) चित्रमीमांसाखण्डनम्। एतेषु ग्रन्थेषु 'भामिनीविलासः' इति तस्य विविधपद्यानां सङ्ग्रहः।

महाकविमाघः– महाकविमाघस्य एकमेव महाकाव्यं प्राप्यते "शिशुपालवधम्" इति।

भर्तृहरिः– महाकविभर्तृहरेः त्रीणि शतकानि सन्ति, नीतिशतकम्, शृङ्गारशतकम् वैराग्यशतकं च।

अधोदत्ताः विविधविषयकाः श्लोकाः अपि पठनीयाः स्मरणीयाश्च–

हंसः – हंसः श्वेतः बकः श्वेतः को भेदो बकहंसयोः ।
नीरक्षीरविभागे तु हंसो हंसः बको बकः॥

एकमेव पर्याप्तम्– एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम् ।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति रासभी॥

पिकः – काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः ।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

चातक वर्णनम् – यद्यपि सन्ति बहूनि सरांसि, स्वादुशीतल सुरभि पयांसि ।
चातकपोतस्तदपि च तानि, त्यक्त्वा याचति जलदजलानि ॥

Scanned by TapScanner